सुप्रसिद्ध समाज सेवी, पत्रकार एवं
गरीबों के हितैषी, निदेशक, जहाँगीर
मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट

डॉ० अनवार अहमद

के

*५०वें जन्म दिवस पर विश्व हिंदी साहित्य
सेवा संस्थान की तरफ से हार्दिक बधाईयां*

सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं संपादक
अंतराष्ट्रीय श्रोता समाचार, सेहत
समाचार, पेड़-पौधा समाचार साप्ताहिक

श्री अरुण अग्रवाल

के

*3 नवम्बर को उनके जन्म दिवस पर पत्रिका
परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयां*

कांग्रेस पार्टी जिन्दाबाद
सलमान खुर्शीद व डॉ० भोला पाण्डेय

*सोनिया गांधी राहुल गांधी जिन्दाबाद
जिंदाबाद*

दीपावली, ईद, छठ व कार्तिक पूर्णिमा की सभी नगर
वासियों को हार्दिक बधाई

जय गोपाल सरार्फ

(तहसील अध्यक्ष)
*प्रत्याशी अध्यक्ष पद नगर पालिका परिषद, गौरा
बरहज, देवरिया*

With Complement From

Reco. By. U.P.Government

Kishore Girls Inter College & Convent School

Nursery to Class XIIth

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Manager
V.N.Sahu

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P.
Nagar, G.T. Road, Allahabad

Principal
Miss Savita Singh Bhadhaudaryia

वर्ष : 6, अंक : 01

विश्व स्नेह समाज लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

नवम्बर 06

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

सफलता के छः वर्ष

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
संपादकः राष्ट्रीय हि0 मा0 *विश्व स्नेह समाज*
सचिवः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
संचालकः स्नेहालय(अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम)
प्रांतीय संगठन मंत्रीः भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ
सम्पर्कः एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, कानाफुसीः 09335155949
ईमेल:gokuleshwarkumar@rediffmail.com, vsnehsamaj@rediffmail.com, sahityaseva@rediffmail.com, gpfsociety@rediffmail.com,gokulpublic_society@rediffmail.com, gokul_sneh@yahoo

सभी नगर वासियों को दिपावली व छठ की हार्दिक बधाईया

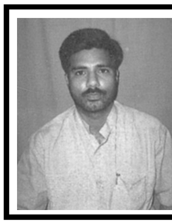

अजीत कुमार जायसवाल

जिलाध्यक्ष,

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा, देवरिया

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली व छठ की हार्दिक बधाईया

न्यू स्टॉर कोंचिग सेन्टर

कक्षाएः 9वी से बी.ए. बी.काम तक

प्रबंधक

पताः नन्दना वार्ड पूर्वी, बरहज, देवरिया **असगर अली**

मुलायम सिंह जिंदाबाद समाजवादी पार्टी जिन्दाबाद

सभी नगर वासियों को दिपावली व छठ की हार्दिक बधाईया

कन्दर्प कुमार प्रजापति (बबलू)

सभासद प्रत्याशी वार्ड सं0 9,नगर पालिका परिषद, गौरा–बरहज, देवरिया

मो0 9415673039, 9919534780

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली छठ व कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक बधाईया

श्रीमती कमली देवी

पुत्र जितेन्द्र सोनी

पूर्व सभासद, प्रत्याशी सभासद पद वार्ड न016, नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, देवरिया

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली छठ व कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक बधाईया

विजय गुप्त

प्रत्याशी अध्यक्ष पद

नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, देवरिया

अपनी बात

संपादकों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अर्थ है

संपादक के प्रतिष्ठा पूर्ण पद को देखते हुए साहित्य में रुचि रखने वाला व्यक्ति संपादक का पद पाने को आतुर रहता है. जब किसी अन्य पत्र–पत्रिका में जगह नहीं मिलती तो वह स्वयं का ही पत्र–पत्रिका निकालने का प्रयास करता हैं. आज ऐसे संपादकों की संख्या ज्यादा है. इस रुप में नित नयी–नयी पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं. जो साहित्य व हिंदी को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से उचित ही है. लेकिन ऐसी पत्रिकाओं का कोई भविष्य नहीं होता. आज है कल का कोई भरोसा नहीं.

इनके बंद होने के पीछे उनकी संपादकीय शैली/पाठन सामग्री नहीं बल्कि अर्थाभाव हैं. अर्थ बिरले संपादकों को ही मिलता है. पत्र–पत्रिका के शुरु के अंकं तो कुछ जोश, कुछ खास परिचितों/दोस्तों का सहयोग से निकल जाते है, लेकिन जैसे–जैसे अंक बढ़ते जाते हैं कुछ जोश तो आर्थिक क्षति के कारण ठंढा पड़ जाता है. और बचा कुछा जोश विज्ञापन, सदस्यता शुल्क व विक्री नगण्य होने के कारण ठंढा पड़ जाता है. अपने दोस्तों के भी सहयोग बंद हो जाते हैं. इसके बाद एक संपादक के पास मात्र दो ही विकल्प रह जाते है. या तो संपादक अपने शौक को पूरा करने के लिए घर फूंक तमाशा देखकर अपना शौक पूरा करता रहे या फिर अब पीछा तो तू छोड़ दे सोड़िए..... कह कर अपने प्रकाशन को बंद कर दें.

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कानाफुसीः 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

अन्दर पढ़िए

विज्ञान पत्रिकाओं के संपादक एंव उनकी चुनौतियां–**8**,संपादक के लिए आवश्यक है–**10**,संपादन एक कला भी है–12,पत्रिकाओं का संपादन सरल आसान रास्ता नहीं–13,संपादकों को रुप व स्वरुप पर गंभीरता से विचार करना होगा–14,**लघु पत्र पत्रिकाओं की भी भूमिका जबर्दस्त होती है-१५,**

स्थायी स्तम्भः

कहानी–17,22,32,कविताएं **–16,18,19**, व्यंग्य–**26**,इलाहाबाद कल आज और कल–**29**,आध्यात्मः 30,युवा पीढ़ी और देश भक्ति की भावनाः **34**,समीक्षा–**44**,जरा हंस दो मेरे भाय–**43**,महिला व्यंजन–**43**, कैरियर–**31**, इधर उधर की : **42**, ज्योतिष – **41** लघु कथांए– **40**, परम्परा–**38** द हगामा इंडिया–**33**, स्वास्थ्यः **35**, साहित्य समाचार – **36**

मन में कभी–कभी यह विचार भी उठता है कि अगला अंक अब नहीं निकालूंगा, लेकिन पाठक का एक प्रशंसा पत्र मिलते ही मन में जोश व उमंग उभर आता है और संपादक अपने गाढ़ी कमाई के बचत खाते से पैसा निकालकर अगले अंक की तैयारी में भीड़ जाता है. कभी–कभी तो सज्जन विद्वजन या किसी भलमानस अधिकारी के द्वारा एक आध विज्ञापन आजीवन सदस्यता मिल जाने मात्र से मनोबल बढ़ जाता और संपादक अगला अंक निकालने को आदतन मजबूर हो जाता है.

संपादकों के समक्ष चुनौतियां यही समाप्त नहीं हो जाती उनके समक्ष तो मानों चुनौतियों का अंबार लगा होता है. दूसरी चुनौती आती है पत्रिका के स्तर को बनाये रखने के लिए. प्रत्येक लेखक चाहता है कि हमारी रचना छपे और लगभग प्रत्येक अंक में छपे चाहे उनका स्तर कुछ भी हो. रचनायें नहीं छापने पर लेखक गण नाराज हो जाते है. और संपादकों की बुराई प्रारम्भ कर देते हैं. कुछ लेखक गण पत्र–पत्रिकाओं के सदस्य ही इसलिए बनते हैं ताकि उनकी रचनायें प्राथमिकता के तौर पर छपती रहें. हालांकि कुछ संपादकों ने अपने सदस्यों की ही रचनाएं छापने का निर्णय लेकर इस संदर्भ में एक नया रास्ता निकाल लिया है अपने को जिंदा रखने व लेखको के प्रकोप से बचने के लिए.

अगर पत्र–पत्रिकाओं को बाजार में बेचना है तो सब कुछ को किनारे कर पाठकों की मांग को ध्यान में रखना पड़ता है.

जी०के०द्विवेदी

सभी जगहों पर बिजली, पानी की व्यवस्था कराऊंगी:कमली देवी

वार्ड १६ की सभासद की प्रत्याशी श्रीमती कमली देवी पत्नी स्व० वंशीधर सोनी ने कहा कि अगर जनता ने मुझे अपना आर्शीवाद दिया तो मैं अपने वार्ड में गरीबी रेखा से नीचे सफेद व लाल कार्ड सभी पात्र लोगों को उपलब्ध कराऊंगी. सभी आवश्यक जगहों पर बिजली एवं पानी की व्यवस्था, नगरपालिका या अन्य विभागों से किसी भी प्रमाण-पत्र को बिना घुस के उपलब्ध कराना, मकानों के नक्शें बिना घूस के पास कराकर सुलभ करवाना, सभी कच्ची नालिया पक्की कराना एवं नाली निर्माण करवाना, प्रत्येक दिन सफाई सुनिश्चत कराना, वृद्ध, वृद्धा एवं विधवाओं को पेंशन सुनिश्चित कराना, वार्ड के लोगों के सम्मान एवं सुरक्षा की गारण्टी लूंगी. उन्होंने बताया कि मैं १९९५ में सभासद थी तथा मैंने विकास कार्य किया जो निम्नवत है-राधेबाबू के घर से आलोक जायसवाल के घर तक खन्डजा, आजाद के घर से जीव सिंह के घर तक नाली, सन्तोषी माता के मन्दिर से रामनक्षत्रर के दुकान तक सीसी रोड, लक्ष्मण बक्सा वाले के घर से नारायण के घर तक नाली, जगदीश जायसवाल के घर से कुटी घाट तक खन्डजा, सुकुमारी के घर से तिवारी बन्धा तक खन्डजा, नेडा द्वारा शौचालय, नरसिंह यादव के घर से अन्छर बस्ती होते हुए बाबू लाल के घर तक खन्डजा, गौरव भुज के घर से सेठ घाट तक खन्डजा, सेठ घाट से शंकर भुज के घर तक खन्डजा, त्रिलोकी के घर से विश्वनाथ के घर होते हुए कनीलाल के घर तक खन्डजा, सन्तोषी माता के मन्दिर से बरहना बाबा तक खन्डजा, चतुर्वेदी के घर से पंचम के घर तक खन्डजा, जानकी बाबू के घर से अनवर शहनाई के घर तक खन्डजा, भुजटोली वार्ड में कुटीघाट, गोरख भुज के घर से पूरनचन्द्र के घर तक नाली, विनोद सोनकर के घर से अन्दर बस्ती होते हुए जयराम के घर तक जलकल पाइप का विस्तार व स्टोन पोस्ट लगवाया तथा मैंने ५ इन्डिया मार्का का हैण्डपाइप श्रीमती सुमित्रा देवी के घर के पास, साई खेला वार्ड, शिशु मन्दिर स्कूल में, बरहना घाट पर, पन्ना लाल के घर के पास लगवाया.

एक बार अवश्य मौका दें: कन्दर्प कुमार प्रजापति

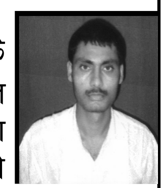

वार्ड सं० ६ के सपा से समाजवादी पार्टी के सभासद प्रत्याशी कन्दर्प कुमार प्रजापति (बबलू) ने कहा कि अगर जनता ने अपना सभासद मुझे चुनती है तो मैं सबसे पहले टीचर कॉलोनी में नाली, सड़क, विद्युत पोल का काम करुंगा व वार्ड में शुद्ध पेय जल, शौचालय की व्यवस्था, टोटी लगवाना, वाढ़ की सफाई करवाना तथा सारे विकास का कार्य मैं करुंगा. कूड़े रखने की व्यवस्था करुंगा. उन्होंने जनता से अपील की कि वे मुझे एक बार अवश्य मौका दें

काशी राम अमर रहें, *बहन मायावती जिन्दाबाद* *बसपा जिन्दाबाद*

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली व छठ की हार्दिक बधाईंया

चुनाव 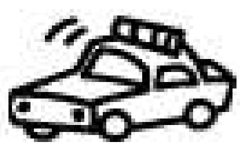 **चिन्ह कार**

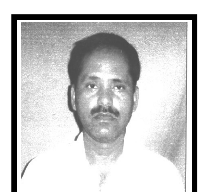

प्रत्याशी अध्यक्ष, पद
नगर पालिका परिषद, गौरा बरहज,
देवरिया

वीरेन्द्र गुप्ता

श्याम विद्यार्थी

वरिष्ठ निदेशक

दूरदर्शन केन्द्र

लाजपत राय मार्ग, ममफोर्डगंज,

इलाहाबाद-२११००२

फोनः 0532–2441365 (का0)

0532–2431959 (नि0)

फैक्सः 0532–2441365

संदेश

दि०: 17–10–2006

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि 'विश्व स्नेह समाज' हिंदी मासिक पत्रिका अपने गरिमामय जीवन के 6 वर्ष पूरे करके 7वें वर्ष में प्रवेश कर रही है. व्यक्ति अथवा संस्था की तरह पत्रिका के जीवन की सार्थकता इसी तथ्य में निहित है कि उसके पास समाज को देने के लिए क्या है तथा समाज के हृदय में उसने कितना स्थान बनाया है? यह एक बड़ा ही गम्भीर कार्य है, अपने में गुरुत्तर दायित्व हैं.

मेरा मानना है कि पत्रिका समाज में वैचारिक क्रान्ति निश्चित रुप से ला सकती है यदि वह अपने सामाजिक–सांस्कृतिक दायित्व के प्रति संकल्पित और समर्पित हों. उसकी विषय सामग्री, लेखकों का चयन तथा सम्पादकीय की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है. सम्पादक के लिए तो यह एक बड़ा ही चुनौती भरा कार्य हैं. आज के घोर उपभोक्तावादी और बाजादवादी प्रतिस्पर्धा के युग में अपने अल्प साधनों के साथ किसी भी पत्रिका के लिए स्थायित्व और नैरन्तर्य का निर्वाह करना नदी की धारा के प्रतिकूल प्रवाह के विरुद्ध अपनी अस्मिता को सिद्ध करने के समान हैं. नाना प्रकार की कठिनाईयों और समस्याओं से जूझते हुए अपने गंतव्य तक पहुँचना एक बहुत बड़ी साधना हैं.

उपर्युक्त दृष्टि से विचार करते हुए मैंने देखा है कि 'विश्व स्नेह समाज' अपने दायित्व बोध को पूरी तरह महसूस करते हुए विकास पथ पर निरन्तर गतिशील हैं. उसने पाठक समाज के बीच अपनी एक अच्छी पहचान बनाई है और अधिक से अधिक लेखकों को जोड़ा हैं. विषय वस्तु के स्तर पर उसकी सोदेश्यता प्रभावशाली हैं.

मुझे आशा है कि पत्रिका के 7वें वर्ष में उसमें कुछ नये आयाम जुड़ेगें और उसकी लोकप्रियता में निरंतर अभिवृद्धि होती रहेगी. पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी बड़ी ही सराहना एवं साधुवाद के पात्र हैं. वह अपने जिस गम्भीर सोच, विरल समर्पण भाव तथा अथक परिश्रम से पत्रिका को आगे ले जा रहे है उसके लिए वह बधाई के अधिकारी हैं. मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि पत्रिका का प्रगति पथ सदैव प्रशस्त एवं निष्कटंक रहे तथा वह समाज में मानव मूल्यों की स्थापना में अपना भरपूर योगदान देती रहें. शुभमस्तु।

(श्याम विद्यार्थी)

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रधान सम्पादक
हिं.मा. विश्व स्नेह समाज
इलाहाबाद

अटल, आडवाड़ी जिंदाबाद   भाजपा जिन्दाबाद

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली व छठ की हार्दिक बधाईया

चुनाव चिन्ह कमल का फूल

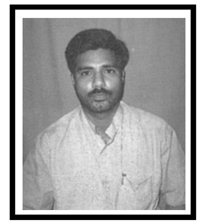

प्रत्याशी अध्यक्ष, पद
नगर पालिका परिषद, गौरा
बरहज, देवरिया

अजीत कुमार जायसवाल
जिलाध्यक्ष,
भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा,
देवरिया

जनता की सेवा करना ही हमारा मूल मंत्र है

सभी वार्ड वासियों व नगर वासियों को दिपावली व छठ व कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक बधाईया

रामकेश्वर जायसवाल

सभासद प्रत्याशी वार्ड सं0 9,नगर पालिका परिषद, गौरा–बरहज, देवरिया

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली छठ व कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक बधाईया

चुनाव चिन्ह कुर्सी

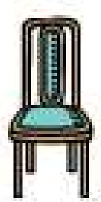

श्रीमती निरुपमा जायसवाल
पत्नी श्री विजय कुमार जायसवाल
सभासद प्रत्याशी वार्ड न0 21, नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, देवरिया

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली छठ व कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक बधाईया

श्रीमती मीरा जायसवाल
पत्नी विजय जायसवाल
निवर्तमान सभासद वार्ड 9
नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, देवरिया

नगर पंचायत चुनाव २००६

मैं आजीवन बरहज की जनता के लिए संघर्ष करता रहूंगा : अजीत जायसवाल

४ अप्रैल १९७४ को श्री सुभाष चन्द्र जायसवाल व श्रीमती शीला देवी के घर में जन्में भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के देवरिया जिले के जिलाध्यक्ष अजीत जायसवाल की प्रारम्भिक शिक्षा हरिद्वार में गुरुकुल कागड़ी में हुई. हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा श्री कृष्ण इंटर कॉलेज, बरहज से, बी.आर.डी कॉलेज देवरिया से स्नातक तथा परास्नातक बी.आर.डी.पी.जी. कॉलेज, आश्रम बरहज देवरिया से प्राचीन इतिहास से किया. बचपन से ही गरीबों के हक के लिए लड़ने वाले अजीत क्रिकेट व एथलिट के खेल के शौकिन रहे हैं. आपकी शादी २००० में श्रीमती तारा देवी से हुई व आपके दो बच्चे भी हैं. इसी वर्ष राजनीति में भी आये और भा.ज.यु.मो. के जिला कोषाध्यक्ष व महामंत्री बने २००५ से जिलाध्यक्ष पद पर हैं. अब तक बिजली, राशन प्रणाली के लिए अजीत जायसवाल ने तीन बार अनशन किया. व्यापारियों के हितों की रक्षा, राधेश्याम सिंह के हत्यारों को सजा दिलाने, तहबाजारी खत्म करने, विधवा, विकलांग पेशन व कच्ची शराब के लिए भी आन्दोलन किया.

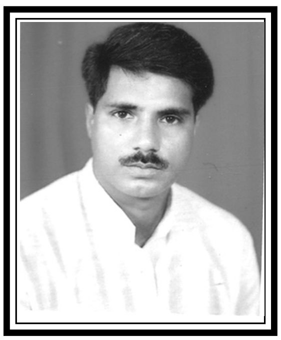

उन्होंने कहा मेरा मुख्य चुनावी मुद्दा १८ घंटे बिजली, राशन वितरण प्रणाली, व्यापारियों के हितों की सुरक्षा एवं चतुर्दीक विकास करना, नगर पालिका से भ्रष्ट्राचार को दूर करना, कर्मचारियों में नई कार्य समिति प्रदान करना,सड़क, पानी, मास्टर कॉलोनी में नई सड़क, नाली, विद्युत पोल व उन पर बल्व लगवाना होगा.

निवर्तमान चेयरमैन रेनू जायसवाल पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि उनके कार्यकाल में भ्रष्ट्राचार चरम सीमा पर था. नगर पालिका में आमजन की समस्याओं को सुनने लिए कोई बैठता नहीं था.

वर्तमान राज्य सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि ये अपराधियों व गुंडों की सरकार है. इस सरकार के शासन काल में आम जन से लेकर व्यापारि तक सुरक्षित नहीं हैं. उन्होंने जनता से अनुरोध किया कि वे मुझे एक बार अपना आर्शीवाद देकर देख ले वे जिस विश्वास के साथ चुनेगें मैं उनके विश्वास पर खरा उतरुंगा.

विश्व स्नेह समाज के ६ वर्ष पूरे होने पर बधाई दी और कहा कि यह पत्रिका समाज के हर वर्ग को लेकर साथ चल रही हैं. इस पत्रिका हर वर्ग के लिए सामग्री रहती हैं.

लोगों का सम्मान व सुरक्षा मेरी प्राथमिकता रहेगीः रामकेश्वर जायसवाल

वार्ड 9 के सभासद प्रत्याशी रामकेश्वर जायसवाल ने कहा कि अगर जनता ने मुझे अपना आशीर्वाद दिया तो अपने वार्ड की सफाई प्रतिदिन कराउंगा, बिजली की आपूर्ति होगी. प्रत्येक घर में शुद्ध पेय जल की व्यवस्था होगी. लोगों का सम्मान व सुरक्षा मेरी प्राथमिकता रहेगी. सभी जरुरतमंद लोगों को राशन कार्ड उपलब्ध होगा. जो कच्ची सड़क है पर नीची है वह सड़क पुनः बनेगी तथा नीची सड़क ऊपर होगी. नाली की व्यवस्था होगी. टीचर कॉलोनी में पोल की व्यवस्था होगी तथा मैं अपने वार्ड के चौमुखी विकास के लिए तत्पर रहूंगा.

मेरा वार्ड आदर्श वार्ड होगा: विजय जायसवाल

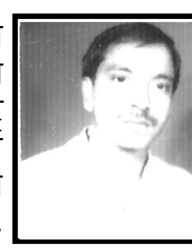

वार्ड २१ के सभासद प्रत्याशी निरुपमा जायसवाल पति श्री विजय जायसवाल चुनाव चिन्ह कुर्सी ने कहा कि अगर जनता ने मुझे चुना तो मेरा वार्ड आदर्श वार्ड होगा. मरे वार्ड में सारे विकास कार्य होगें, प्रकाश की व्यवस्था होगी, नाली, सड़क, पानी की व्यवस्था होगी, सभी जरुरतमंद लोगों को राशन कार्ड की व्यवस्था, प्रतिदिन सफाई, कूड़े दान रखने की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था तथा भ्रष्ट्राचार का नाम नहीं होगा. मेरी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होगा.

संपादक एवं उनकी चुनौतिया

मैं नगर पालिका से भ्रष्ट्रचार दूर करुंगाः जय गोपाल सर्राफ

१९६१ में स्व०जवाहर प्रसाद व श्रीमती सुदामी देवी के घर में जन्में जयगोपाल सर्राफ प्रारम्भिक शिक्षा बरहज से करने के बाद इन्होंने हाईस्कूल बाबा गया दास इंटर कॉलेज, से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद रामपुर-सलेमपुर से इंण्टर की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास किया. क्रिकेट के शौकिन व बचपन से ही बुजुर्गो से स्नेह और आर्शीवाद पाना व समाज सेवा की भावना इनके मन में थी और धार्मिक स्थलों पर जाना इनका शौक रहा हैं. १९८२ में आरती देवी से शादी हुई. आपके दो लड़के जयकिशन, जयरवि व एक लड़की राधा हैं. आप २००३ में सक्रिय राजनीति में आये. आपके आदर्श नेता स्व० इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी व डॉ० भोला पाण्डेय जी हैं.

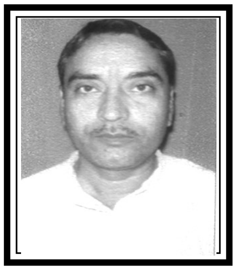

उन्होंने कहा कि अगर जनता का अशीर्वाद मिला तो सारे काम मेरी देख रेख में ईमानदारी से होगें. कोई प्रताड़ित नहीं होगा. सबके साथ न्याय होगा. भ्रष्ट्राचार का नाम नहीं होगा. जनता को हम समस्त सुविधायें देगें. नगर का सुन्दरीकरण होगा. मॉस्टर कॉलोनी में नाली, सड़क व विद्युत पोल का काम होगा व नगर में पानी सड़का, लाइट, व निःशुल्क शौचालय होगा. प्रत्येक वार्ड में नाली सड़क व सफाई की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देगें. हर वार्ड में विद्युत व्यवस्था, अनवरत वाटर सप्लाई, कूड़ा उठानें की व्यवस्था कराऊंगा. हाउस टैक्स नहीं लगेगा. इसका पुनः निरीक्षण होगा जो पात्र हैं उन पर ही लगेगा. जलकर नहीं लगेगा, जो राशन कार्ड के पात्र है उनकों मिलेगा.

निवर्तमान चेयरमैन पर प्रहार करते हुए श्री सर्राफ ने कहा कि इनके कार्यकाल में भ्रष्ट्राचार का बोलबाला था. एक भी विकास कार्य ठीक ढंग से नहीं हुआ. मुलायम सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि ये सरकार नौजवानों को बेरोजगार बनाने काम कर रही हैं. बेरोजगारी भत्ता नहीं चाहिए, कन्या धन पात्रों को नहीं मिल पा रहा हैं व जनता में भय व आंतक में जी रही है. श्री सर्राफ ने जनता से अपील की कि एक बार मुझे मौका देके देखें मैं उनको निराश नहीं करुंगा. मुझे हर वर्ग का अमूल्य मत चाहिए.

जनता की सेवा में मुझे सुख मिलता है: विजय गुप्त

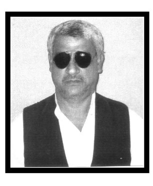

नगर पालिका अध्यक्ष पद के प्रत्याशी विजय कुमार गुप्त ने कहा कि अगर जनता ने मुझे स्नेह और आशीर्वाद दिया तो नगर में सर्वप्रथम बिजली, पानी, सड़क, वृद्धा पेंशन, गरीबी रेखा के नीचे के लोगों के लिए लाल कार्ड की व्यवस्था करुंगा. मैं 25 वर्षो से नगर पालिका में जनता की सेवा करता आ रहा हूँ और कुछ हो जाने के बाद भी मैं जनता की ही सेवा करुंगा. जिससे मुझे बहुत सुकून मिलता हैं. जनता की सेवा के कारण ही मुझे 85प्रतिशत विश्वास है कि जनता मुझे अपना स्नेह और आशीर्वाद जरुर देगी. मैं ईमानदारी से राजनीति करता आया हूँ तथा सबके सुख दुःख में हाथ बढ़ाता हूँ. मैं जनता से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे एक बार मौका देके देखें. मैं उन्हें निराश नहीं करुंगा.

अटल-आड़वाडी जिन्दाबाद
भाजपा जिन्दाबाद

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली छठ व कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक बधाईया

नयाब हुसैन उर्फ डबलू

सभासद प्रत्याशी वार्ड न0 24, नगर पालिका परिषद गौरा बरहज, देवरिया

मैं सबके दुःख, सुख में सहभागी बनूंगीः मीरा जायसवाल

वार्ड सं० १६ से निवर्तमान सभासद श्रीमती मीरा जायसवाल ने अपने कार्यकाल में कार्य के बारे में बताया कि लवरछी के मामूजी के मकान से लेकर रामनरेश कुशवाहा के घर तक, मुन्नीलाल के मकान से होते हुए रमाशंकर वर्नवाल के मकान तक, क्रांति कुमार से लेकर हरीहरजन के मकान तक दोनों ओर नाली और सीमेन्टेड रोड बनावाया व डॉ० के.पी. सिंह के घर से लेकर परमानन्द के घर तक सीमेन्टेट रोड, परमहंस के मकान से दुर्गा मन्दिर रोड तक खन्डजा सीमेन्टेट रोड तथा नाली, जगदीश विश्वकर्मा के मकान से कन्हैया लाल के मकान तक खन्डंजा आधा सीमेन्टेट. रामनाथ के मकान से लेकर चुन्नु के मकान तक खन्डजा, भोला मिया के मकान से विशुन बर्नवाल के मकान तक नाला व स्पेल, शम्भू जायसवाल के मकान से नाली दिनेश कुशवाहा के घर तक, हरदूआर जायसवाल के घर से खन्डजा रेलवे रोड तक व बिजली का पोला पैना रोड से लेकर शौचालय तक पाइप लाइन का विस्तार विद्युत पोल बधशाला से होते हुए रामायण के मकान तक सीमेन्टेट रोड व नाली व विद्युत पोल, नदीम मिया के मकान से चन्द्रीका यादव के मकन तक पाइप लाइन का विस्तार, मेन रोड से सीमेन्टेट रोड, रामचन्द्र जायसवाल के मकान तक, मछरदानी जिनकों नहीं मिल पाया २५० लोगों को अपने पास से दिया व कम्बल दिया. व इन्होंने कई हैण्डपाइप भी लगवाया है. श्रीमती जायसवाल ने कहा कि अगर जनता का आर्शीवाद पुन मुझे प्राप्त होता है तो मैं सबसे पहले अपने वार्ड में शौचालय, पाइपलाइन का विस्तार शुद्ध पेयजल की व्यवस्था, टोटी लगवाना, विद्युतीकरण देवता के बाबा के घर से लेकर फौजदार के मकान तक नाली बनवाना मेरी प्रथम वरीयता होगी. सीमेन्ट रोड बने हैं. शून्य साइज के गिट्टी से उसका सुन्दरीकरण करवाना , वार्ड में सफाई करवाना कूड़ा रखने की व्यवस्था, रोड पर ड्रम रखने की व्यवस्था, मूत्रालय की व्यवस्था, टीचर कॉलोनी में नाली व सीमेन्ट रोड की व्यवस्था, वार्ड में विद्यालय खुलवाना आदि होगा.

श्रीमती जायसवाल ने रेनू जायसवाल की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि इनके सहयोग से ही सारे विकास हुए हैं. लोगों से अपील की वे सदा भाईचारा बनाकर रक्खें. मैं अपने वार्ड के लोगों के सुख, दुःख में बराबर की सहभागी रहूंगी.

सोनिया गांधी व भोला पाण्डेय ही मेरे भगवान है

सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे व गेंदबाज के बाउन्सर से बल्लेबाज किस तरह अपने को बचाता है इसका सही उदाहरण पेश किया बरहज विधानसभा के कांग्रेस प्रवक्ता अनिल निषाद ने. उन्होंनें एक प्रेस कान्फ्रेंस में पत्रकारों के सवालों को जबाव देते हुए कहा कि सपा के जिला कोषाध्यक्ष विरेन्द्र गुप्ता का सपा छोड़कर बसपा में जाना स्वार्थ की राजनीति है तथा अपने व कांग्रेस प्रत्याशी के झगड़े की बात को पूरी तरह से खारिज कर दिया और कहा कि मैं पूरी निष्ठा के साथ अपने प्रत्याशी के साथ हूँ लेकिन इशारों में यह कह डाला कि प्रत्याशी की हार व जीत से मेरे आराध्य सोनिया जी व भोला पान्डेय से इसका कोई लेना देना नहीं है. उसकी हार और जीत उस पर ही निर्भर करती है. पत्रकारों के सवाल पर कि इस बार जनता किसकों को चुनेगी तो प्रवक्ता ने स्पष्ट रुप से कह दिया कि जो विगत वर्षो से जनता की सेवा कर रहा हैं उसके सुख-दुख में साथ रहा है जो जनता की नस को टटोलनें पर सफल होगा, जनता उसी को चुनेगी.

प्रख्यात शहनाई वादकः नयाब हुसैन उर्फ डबलू

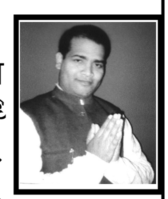

पूर्वांचल के गौरव के नाम से विख्यात तथा के.पी.श्रीवास्तव, आई.ए.एस अधिकारी तथा राष्ट्रपति से सम्मानित (एन.सी.सी. स्कूल) व देवरिया जिले के सी.डी.ओ. जे.बी से सम्मानित प्रख्यात शहनाई वादक व वार्ड सं० २४ के भाजपा से सभासद प्रत्याशी नयाब हुसैन ने प्रेस वार्ता में कहा कि अगर जनता का आशीर्वाद मुझे मिला तो मैं देखूंगा कि किसको क्या परेशानी है, अनरगल को दूर करुंगा, वार्ड में फंड जितना आता है मैं लाकर अपने वार्ड में काम करुंगा. हर सुविधायें अपने वार्ड के लोगों को दूंगा. वार्ड में कूड़ा रखने की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था करुंगा. उन्होंने जनता से अपील की कि भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को जितायें तथा अजीत जायसवाल को चेयर मैंन बनाने की कृपा करें. तभी सारे विकास कार्य ईमानदारी से होगें. इसमें पूरे नगर का हित हैं.

मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है: सेलही

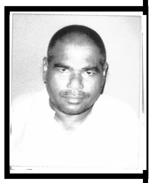

नगर पालिका परिषद बरहज के चेयरमैन पद के प्रत्याशी जगरनाथ सेलही के मन में बचपन से ही समाज सेवा की भावना थी. इन्होंने राशन कार्ड, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, बिजली के लिए आन्दोन किए. १९९८ के बाढ़ को लेकर भी आन्दोलन किया. उनका कहना है कि अगर जनता का आशीर्वाद मिला तो मैं सबसे पहले राशन प्रणाली जिसके नाम से दुकान है उसका फोटो लाइसेंस पर चिपका होना चाहिए, राशन कार्ड बनाने के लिए मैं स्वयं अधिकारी को नगर पालिका में बुलवाउंगा और वहीं पर सबका कार्ड बनेगा तथा जिस वार्ड की दुकान है उसी वार्ड में रहेगी. सरकारी अस्पताल में अच्छे सर्जन रक्खें जाएगें. सभी का आपरेशन होगा. एक्शरे मशीन चालू होगी, सभी प्रकार की दवाईया उपलब्ध होगी. जिससे किसी को जिले पर न जाना पड़ें. विधवा, वृद्धा पेंशन व विकलागों के हेतु संबंधित अधिकारी को नगर पालिका में बुलाया जायेगा तथा तहसील से पेंशना मंजूर होगा. मेरा कमीशन गरीबों के लिए भोजन की व्यवस्था होगी. पुराना बरहज, पटेल नगर, गौरारोड, जयनगर जहां शौचालय नहीं है वहां बनेगा तथा टीचर कॉलोनी में नाली सड़क, का काम होगा. पूरे नगर में नाली, सड़क, विद्युत पोल की लगेगा. सभी को सम्मान मिलेगा. मैं भगवान (जनता) की सेवा करते आया हूँ और मुझे मेरी पूजा का फल अवश्य मिलेगा

सारे काम ईमानदारी से होंगे: वीरेन्द्र गुप्त

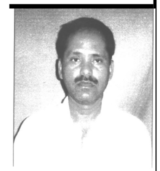

बसपा से नगर पालिका परिषद बरहज के चेयरमैंन पद के प्रत्याशी वीरेन्द्र गुप्त ने कहा कि अगर जनता का अशीर्वाद मिला तो सारे काम मेरी देख रेख में ईमानदारी से होगें. नगर का सुन्दरीकरण होगा. मॉस्टर कॉलोनी में नाली, सड़क व विद्युत पोल का काम होगा व नगर में पानी सड़का, लाइट, व निःशुल्क शौचालय होगा. प्रत्येक वार्ड में नाली सड़क व सफाई की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देगें. हर वार्ड में विद्युत व्यवस्था, अनवरत वाटर सप्लाई, कूड़ा उठानें की व्यवस्था कराऊंगा. हाउस टैक्स नहीं लगेगा. इसका पुनः निरीक्षण होगा जो पात्र हैं उन पर ही लगेगा. जलकर नहीं लगेगा, जो राशन कार्ड के पात्र है उनकों मिलेगा.

नगर वासियों को हर सुविधा देना मेरी प्राथमिकता होगी

वार्ड १८ के सपा प्रत्याशी अरविन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि मैं यह चुनाव आश्रम के पीठाधीश्वर पूज्य महाराज जी के सरंक्षण में लड़ रहा हूँ. इसमें मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं हैं. मैं अपने वार्ड के विकास के लिए यह चुनाव लड़ रहा हूँ. अगर जनता ने मुझे आशीर्वाद दिया तो मैं अपने वार्ड में नाली, सड़क, शुलभ शौचालय, सफाई की व्यवस्था को सुदृढ करुंगा. मेरा प्रथम लक्ष्य विकास होगा अन्य कोई नहीं

सभी नगर वासियों को ईंद, दिवाली व छठ की हार्दिक बधाईया

जगरनाथ सेलही

प्रत्याशी चेयरमैन,नगर पालिका परिषद, गौरा बरहज, देवरिया

सभी नगर वासियों को ईंद, दिवाली व छठ की हार्दिक बधाईया

पवन मद्धेशिया

प्रत्याशी सभासद, वार्ड सं0 9 नगर पालिका परिषद, गौरा बरहज, देवरिया

ईंद, दिवाली, छठ व कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर वार्ड सं० २४ के सम्मानित मतदाता बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनायें

चुनाव 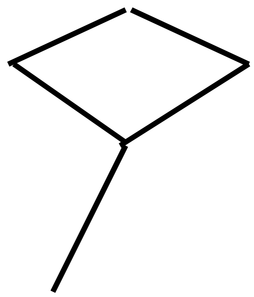 चिन्ह पंतग

प्रत्याशी सभासद पद

नगर पालिका परिषद, गौरा बरहज, देवरिया

श्रीमती जाकिरा

पत्नी इमदाद अली

ईंद, दिवाली, छठ व कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर सभी सम्मानित मतदाता बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनायें

सभी निगमों/नगर पालिकाओं व नगरपालिका परिषदों में भारतीय भ्रष्ट्राचार पार्टी के उम्मीदवारों को भ्रष्ट्राचार में बढ़ोत्तरी करने के लिए भारी बहुमत से विजयी बनावें.

निवदेक
दाउजी

चिट्ठी आई है

आपकी संपादकीय विचारोत्तेजक है

आदरणीय द्विवेदी जी,

नमस्कार

विश्व स्नेह समाज के अंक मिले. इस अहेतुकी कृपा के लिए आभारी हूँ. आपकी संपादकीय विचारोत्तेजक हैं. लेख भी उद्देश्यपूर्ण हैं. व्यंग्यों में अच्छी चुटकी ली गई हैं. प्रकाश सूना की कहानी ने प्रभावित किया. काव्य पक्ष कुछ कमजोर दिखा. इसे सँवारने का कष्ट करें.

डॉ. ब्रहमजीत गौतम, जे.के.रोड, भोपाल

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

प्रिय मित्र

प्रणाम

नववर्ष की अनंत शुभकामनाएँ,

आप सबके स्वस्थ व प्रसन्न रहने की कामना और प्रार्थना है. लेखकीय प्रति के रुप में, एक अर्सेबाद पत्रिका की प्रति पाकर गद्गद हूँ. मेरे प्रति आपके स्नेह के लिए आभार. घर-पत्रिका परिवार में सभी को मेरा यथोचित अभिवादन. आपका

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, अलोपीबाग, इलाहाबाद

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

संपादकीय आलेख के अच्छा लगा

परम् आदरणीय सम्पादक महोदय,

प्रणाम।

कुछ दिन पूर्व 'विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. सरसरी निगाह से कुछक लेखों को पढ़ गया, संपादकीय आलेख के साथ-साथ अल्पसंख्यक की परिभाषा की पुनर्व्याख्या हो अच्छी लगी. आपने वर्तमान राजनीति का सही चित्रण किया है, आज अल्पसंख्यक को पार्टियॉ महज वोट बैंक समझती हैं, वे केवल स्वार्थ की राजनीति करते है, आजकल के नेता अल्पसंख्यक व आरक्षण के नाम पर जनता को ठग रहे हैं, साथ-साथ देश को लूट रहे हैं. अतः ऐसे समय में जरुरत हैं, लोगों को जागरुक बनाने का और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही संभव हैं, जब लोग शिक्षित होगें तभी अधिकार व कर्त्तव्य के बारे में जान पाएंगे. बिहार का लालू शासन इसका उदाहरण हैं, लोगों ने इस जंगलराज को समाप्त कर ही दिया.

कुन्दन कु० खवाड़े, देवघर, झारखंड

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

आपका प्रयास सराहनीय है

आदरणीय सुहृद,

पत्रिका का अंक मिला. हार्दिक धन्यबाद. पत्रिका मूल्य व कलेवर को देखते हुए प्रथम दृष्टया तो यहीं कहूंगा

जो आवश्यक मूल्य हैं, रहे विगत कल-आज।
करती पूरण पत्रिका, विश्व स्नेह समाज।

कम मूल्य में पत्रिका का स्तरीय प्रकाशन, प्रसार की दृष्टि से प्रथम चुनौती है. जिसे आपने सफलता पूर्वक तय किया है. दूरदर्शन के बढ़ते प्रभाव में जो लोगों में अध्ययनशीलता की कमी आई है, निःसंदेह उस कमी को पूरा करने में पत्रिका उपयोगी सिद्ध होगी. द्वितीय सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु राष्ट्र भाषा हिंदी की प्रगति में स्तरीय साहित्य का चयन और नूतनता विविधता हैं. हर्ष का विषय है पत्रिका इस ओर भी तत्पर हैं. हिंदी हेतु आपके यह स्तुत्य प्रयास सर्वथा श्लाघनीय हैं. मेरी मंगल कामनॉए व बधाई स्वीकारें. यथा अवसर रचना योगदान कर आपके सारस्वत यज्ञ में सम्मिलित होने की मेरी इच्छा हैं. यदि आप अवसर दें.

डॉ. रमेश मंगल बाजपेयी,सीतापुर,

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

आपकी लेखनी में शोले का आगाज है

परम सम्मानीय बन्धु श्री द्विवेदी जी,

सादर नमन्!

पत्रिका प्राप्त हुई. अवलोकन किया. पत्रिका में सम्मिलित विविधवर्णी रचनायें अच्छी हैं. पत्रिका साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों के मध्य अपनी अच्छी पहचान बना लेगी, ऐसा विश्वास किया जा सकता है. आप की संपादकीय, राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के परिप्रेक्ष्य में संक्षिप्त टिप्पणी विचारणीय हैं. आपकी लेखनी में शोले का आगाज है. लोकतंत्र के सीने पर विराजते राजतंत्र की निरंकुशता पर तीखा प्रहार स्वागत योग्य हैं. आपके सारस्वत अनुष्ठान के सफलता की कामना के साथ आपका अपना ही

शिवेन्द्र त्रिपाठी, ग्राम भारती संस्था, आलापुर, प्रतापगढ़

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

विश्व स्नेह समाज पाया,
मैं जुलाई मास का,
बीज मेरे हृदय में, पनपा मधुर विश्वास का,
गोकुलेश्वर द्विवेदी ने ठीक ही हैं यह कहा
देश में जनतंत्र का कैसा तमाश हो रहा!
सूचना साहित्य को पढ़ प्रेरणा मन में जगी।
गजल और कहानियॉ, कविता मुझे अच्छी लगी
दे रहा हूँ खीस्ट के नववर्ष पर शुभकामना
विश्व में फैले चतुर्दिक स्नेह की ही भावना

डॉ. योगेश्वर प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, पटना जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना.

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

आपकी सम्पादकीय टिप्पणी से 'पत्रकार युग का प्रहरी होता है' चरितार्थ हुई हैं.

सादरं नतिः

समादरणीय द्विवेदी जी,

आपकी सम्पादक मनीषा से मण्डित 'विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त कर आन्तरिक प्रसन्ना हुई. कागज और छपाई-सफाई के असौष्ठव के बावजूद यह पत्रिका अपनी सारस्वत सामग्री की सुष्ठुता से हृदय को आवर्जित करती हैं. आपके सम्पादकीय में भारत में लोतंत्र की वर्तमान तथाकथित प्रशासकों द्वारा की जाने वाली दुर्गति पर बड़ी प्रखर और उत्तेजक टिप्पणी है. आपकी इस टिप्पणी से 'पत्रकार युग का प्रहरी होता है' यह बात सचमुच चरितार्थ हुई हैं.

डॉ०श्रीरंजन सूरिदेव, कंकड़बाग, पटना

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

मान्यवर,

सादर नमस्कार,

पत्रिका का नया अंक मिला. पत्रिका में हर वर्ग के पाठकों की रुचि को देखते हुए सामग्री दी गई हैं. अच्छा लगा. कृपया एक या दो पेज बच्चों के लिए भी निर्धारित करने की कृपा करें. स्नेहाकांक्षी,

उदय किरौला, संपादक, बाल प्रहरी, अल्मोड़ा

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

असली आजादी अभी नहीं

१५ अगस्त के दिन सुप्रभात की प्रथम बेला से टी.वी. चैनलों, सरकारी ईमारतों , सामजिक संस्थानों व स्कूलों द्वारा बजाये जा रहे ध्वनि विस्तारक यंत्रों से हमें स्वतंत्रता दिवस के होने की बात मालूम पड़ती है. इस दिन देश भक्ति के वीरतापूर्ण गीत, नौजवानों में देशभक्ति के जज्बात को जगाने का असफल प्रयास करते हैं. इस पावन वेला में हम सभी भारतीय एक बार फिर अपने देश के अमर शहीदों की कुर्बानियें को याद कर उनके त्याग और बलिदान से सबक लेते हैं कि हम सभी भारतवासी जहाँ भी है जिस सेवा अथवा देश में है हम अपने कर्तव्य को पुरे ईमानदारी से निभाते हुए अपने देश की एकता एवं अखण्डता के साथ ही देश के सरहद की रक्षा के लिए अपना योगदान देगें.

वास्तव में आजादी क्या है? इस आजादी का अर्थ जानना है तो किसी गुलाम के आत्मा से पूछे, बंद पिजड़े में कैद से पूछें. वर्तमान पीढ़ी आजाद भारत में ही जन्म ली है, इसलिए हमें गुलाम भारतीयों के दर्द का एहसास तो नहीं है किन्तु अपने इतिहास से सबक लेकर उस गुलाम भारत एवं भारतीयों के दर्द का आभाष महसूस कर सकते हैं.

अपने देश के आजादी के उपरान्त की बात करे तो सन् १९४७ से आज तक के समय में जो हमारे वतन के पुजारी 'नेतागण' उदारीकरण की आड़ लेकर हजारो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने देश में आमंत्रित कर रहे है यह समस्त बुद्धिजीवियों के समक्ष एक यक्ष प्रश्न बनकर खड़ा हो गया है. पिछले दशक के आकड़े ये बताते है कि शिक्षा के क्षेत्र में विकास तो हुआ, जनसंख्या भी बढ़ी, मगर रोजगार के अवसरों की कटैाती होती गई. जिससे आज बेरोजगारों की लम्बी कतार बढ़ रही है.देश में आंतकवादियों के द्वारा दिन प्रतिदिन निर्दोष भारतीयों को खून बहाया जा रहा है. इन आंतकवादियों के नकाब के पीछे गौर करे तो अपने ही देश के पथभ्रमित नौजवान बेराजगारी से तंग आकर अपनी कलम फेंककर बन्दुके उठा लिए है.

अगर हम सब सचेत न रहे तो ये वतन के पुजारी नेता गण हमें कभी भी पूर्णतः आजाद नहीं होने देगें. अतः इस बात पर एक शेर याद आता है-

जमी बेच देगे, गगन बेच देगे।
कली बेच देगें, चमन बेच देगें।
कलम के पुजारी अगर सो गये तो
वतन के पुजारी वतन बेच देगें.

संतोष तिवारी, पत्रकार, युनाइटेड भारत, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

परम आदरणीय द्विवेदी जी

सादर अभिवादन

कुशल हूँ. आपकी कुशलता के लिए ईश्वर से प्रार्थी हूँ. मैंने एक आमंत्रण पत्र भेजा था मिला होगा. मेरी व्यंग्य कथाकृति 'एक गदहा का अफसोस' का लोकार्पण डॉ. हरिवंश तरुण जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हो गया. पत्रिका की प्रगति के लिए शुभेच्छु हूँ.

आपका ही

गिरीश प्रसाद गुप्ता, देवधर, झारखंड

महोदय,

विश्व स्नेह समाज का आप द्वारा प्रेषित अगस्त ०६ अंक मिला. अच्छा लगा. बहुत ही सरल आवरण में हमारे गर्व तिरंगे की आभा लिये हुएः-

समाज में
ऐसी हवा
चल गयी,
जब भी
कोई शूल
सी चुभी
याद विश्व
स्नेह समाज
की आ गयी।
नफरत, दर्द
दहशत, डर
हर ओर
देखो तो
हिकारत ही हिकारत
ऐसे में
दिया
विश्व स्नेह ने
जला दिया
उम्मीदों को
एक सिला
दिया,
मन हरपल
याद करता है,
साधु वाद
हृदय से
करता हैं.

रितेन्द्र अग्रवाल, मालवीय नगर,जयपुर

इनके भी पत्र मिले-

१.शरदचन्द्र पाराशर, चित्तौड़गढ़, राज.
२.राहुलदेव, महमूदाबाद, सीतापुर
३.एस.बी.मुरकुटे, बडगांव, बेलगाम
४.सूर्यदेवपाठक'पराग',गोरखपुर,उ.प्र
५.कमलकिशोर ताम्रकार, रायगढ़, छग
६.अशोक कुमार सिन्हा, समस्तीपुर
७.श्री पाटील के. हवी, ठाणे, महा.
८.उपेन्द्र नाथ शर्मा, सम्पादक,पटना
९.शब्बन खानं 'गुल', लखनऊ, उप्र
१०.मुहम्मद रईस सिद्दीकी, कानपुर देहात
११.संपादक, चौथी जमीन, बहराइच
१२.मोहन कुमार, स०, गोल्डन वर्ल्ड, पीलीभीत, उ.प्र.
१३.कमलकिशोर ताम्रकार, महासचिव, रत्नांचल साहित्य परिषद, रायपुर, छत्तीसगढ़

विज्ञान पत्रिकाओं के सम्पादक एवं उनकी चुनौतियां

डॉ० शिवगोपाल मिश्र,
प्रधानमंत्री, विज्ञान परिषद, इलाहाबाद

सम्पादक कई तरह के होते हैं. अतः स्वाभाविक है कि उनके काम भी भिन्न-भिन्न प्रकार के होंगे और उनके समक्ष वैसी ही चुनौतियॉं भी होगीं.

समाचार पत्र के सम्पादक का मुख्य काम सामग्री जुटाकर उसे सम्पादित करना ही नहीं; विवादों पर बेबाक टिप्पणी करना सचमुच चुनौती भरा कार्य है. उसे अपने स्वामी का एवं जनता के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह साथ-साथ करना होता है.

किन्तु मैं जिस तरह के सम्पादक और उसकी चुनौतियों की बात करने जा रहा हूँ वह उपर्युक्त से सवर्था भिन्न हैं.

भाषाई समाचार पत्र निकालना आसन है. संवाददाता देश भर में बिखरे रहते हैं-वे भाषा के जानकार होते हैं. किन्तु विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी का प्रवेश बहुत धीरे-धीरे हो रहा है. इसके मूल में दो कारण हैं-एक तो विज्ञान अंग्रेजीं में ही लिखा जाता रहा है. यदि उसे हिंदी में उल्था किया जाय तो समय लगता है और अच्छे अनुवादक ने होने कठिनाई आती है. अनुवाद से सभी लोग डरते हैं-यदि आधेमन से किया जाय तो समझिये हिन्दी तथा विज्ञान दोनों की टॉग टूट गई.

अतः एक मात्र उपाय है कि हिन्दी में ही लेखन हो. हिन्दी में विज्ञान लेखन के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा है, पारिभाषिक शब्द. वे सब अंग्रेजी में हैं. उनका हिन्दी अनुवाद होकर प्रयोग होता है. अतः लेखक को हिन्दी में लिखते समय अनुवाद प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जो बहुत ही कलेशप्रद है. इसीलिए जो रचनांए प्रकाशनार्थ आती है, उनको सुधारने का कार्य सम्पादक के जिम्मे पड़ता है और इस संशोधन की वैतरणी को पार करा पाना सम्पादक के लिए अग्नि परीक्षा बन जाती है.

> **☼भाषाई समाचार पत्र निकालना आसन है. संवाददाता देश भर में बिखरे रहते हैं-वे भाषा के जानकार होते हैं. किन्तु विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी का प्रवेश बहुत धीरे-धीरे हो रहा है. इसके मूल में दो कारण हैं-एक तो विज्ञान अंग्रेजीं में ही लिखा जाता रहा है. यदि उसे हिंदी में उल्था किया जाय तो समय लगता है और अच्छे अनुवादक ने होने कठिनाई आती है.**
>
> **☼हमने अभी तक नहीं सुना कि विज्ञान सम्पादकों को कोई अच्छी तनख्वाह या पारिश्रमिक मिलता हो**

भाषा के बाद विषयवस्तु दूसरी चुनौती है. विज्ञान पत्रिकाओं के सम्पादक को बहुज्ञ होना चाहिए अन्यथा वह सारी रचनाओं का मूल्यांकन नहीं कर सकता. फलस्वरुप आये लेखों की परीक्षा एक कठिन चुनौती भरा कार्य बन जाता है. कई बार सम्पादक को स्वयं लेख लिखने पड़ते है, वैसे तो सम्पादक का असली कार्य सम्पादकीय लिखना है. मजेदार बात है कि अभी तक जितनी विज्ञान पत्रिकाएँ छपती है, उनमें से बहुतों में सम्पादकीय रहता हीं नहीं. यदि रहता है तो विषय सूची में जो लेखों के शीर्षक होते हैं, उन्हीं की चलताऊ चर्चा रहती है. यह तो समीक्षा हुई, न कि सम्पादकीय.

विज्ञान पत्रिकाओं में सम्पादकीय लिखने के लिए सम्पादक अभी भी प्रशिक्षित नहीं हो पाये. वे न तो कोई दूर दृष्टि का परिचय दे सकते हैं, न लेखों की विषयवस्तु का खंडन. हम नहीं समझते कि सम्पादक ठीक से अपने दायित्व का निर्वाह कर पाता हैं. वह पाठकों के लिए पठनीय सामग्री उपलब्धा कराता है और लोकप्रिय लेखन को ही बढ़ावा दे सकता है. सम्पादक चाहे तो नये वैज्ञानिक साहित्य के विषय में जो पुस्तकें आती हैं उनकी समीक्षा भी कर सकता है. किन्तु इससे भी सम्पादक जी चुराता है, दूसरों को पुस्तक देकर समीक्षा प्राप्त कर लेता हैं.

हॉ, कभी-कभी सम्पादक अपने सम्पादन कौशल की वाहवाही के लिए पाठकों के अधिकाधिक पत्रों को छापता है. इससे वह नव पाठकों को प्रेरित करता है कि पढ़ें और अपनी राय व्यक्त करें. लेकिन पाठक भी ऐसे होते हैं जो केवल पत्र छपने के उद्देश्य से पत्र लिखते हैं- वे एक तरह से स्तुतिगान करते हैं. इससे सम्पादक की कुर्सी बची रहती है.

हमने अभी तक नहीं सुना कि विज्ञान सम्पादकों को कोई अच्छी तनख्वाह या पारिश्रमिक मिलता हो- सरकारी पत्रिकाओं को छोड़ दे तो भला सम्पादन कार्य के प्रति कुशल सम्पादक कैसे

आकृष्ट हो सकते हैं?
बहुत से सम्पादक छात्रों के लिए उपयोगी सामग्री जुटा कर प्रकाशित करते हैं. यह कार्य आसाान है क्योंकि तमाम कोंचिग सेंटर चल रहे हैं जिनसे सम्पर्क करके सामग्री प्राप्त भी की जा सकती है किन्तु विज्ञान पत्रिकाओं में इस प्रकार की सामग्री देने से सामान्य पाठक को विशेष लाभ नहीं मिल पाता. इसके प्रश्न ऊंट पटांग, जमीन आसमान को छूने वाले होते हैं.

आज विज्ञान सम्पादकों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है नाटक, रिर्पोर्ताज, यात्रा जैसी विधाओं को प्रोत्साहित करने के लिए नये-नये लेखकों से लेखन कार्य कराना. यह सत्य है कि धन-प्रधान युग में अच्छा पारिश्रमिक मिलने पर भी कोई लेख लिखने को तैयार नहीं होता. यदि सम्पादक नई विधाओं को प्रश्रय दे भी तो पत्रिका के पाठक ढूंढ पाना और उनमें वृद्धि कर पाना असम्भव दिखता है. शोर है कि इंटरनेट नें लेखकों के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है. जब पत्रिकाएं भी इंटरनेट पर पढ़ने के लिए उपलब्ध हो जावेंगी तो पाठक मिल पाना कठिन होगा.

बहरहाल हिन्दी में विज्ञान पत्रिकाओं के सम्पादकों को आगे बढ़ने के लिए पग-पग पर चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है. राष्ट्रहित और राष्ट्रभाषा के हित में उन्हें त्याग और तपस्या करनी होगी.

++++++++++

संक्षिप्त जीवन परिचय

डॉ०शिवगोपाल मिश्र

विद्वता के प्रतिमूर्ति, साधारण रहन सहन के प्रणेता, मृदुल व सरल स्वभाव के धनी डॉ0 शिवगोपाल मिश्र का जन्म 13 सितम्बर 1931 हुआ था. आप शिक्षा एम.एस.सी., डी.फिल. साहित्यरत्न करने के बाद वर्ष 1952 से विज्ञान लेखन में संलग्न हैं. लोकप्रिय वैज्ञानिक साहित्यकार के रुप में हिंदी में 26 तथा अंग्रेजी में 11 पुस्तकों सहित 5 पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. हिन्दी में नौ शोधपरक साहित्यिक पुस्तकों की रचना कर चुके हैं. आपको महामहिम राष्ट्रपति द्वारा डॉ0 आत्मा राम पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश सरकार के 'विज्ञान भूषण' सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है. शीलाधर मृदाविज्ञान शोध संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के निदेशक के पद को 1986 में संभाला तथा 1991 में अवकाश ग्रहण किया. इस बीच आप विज्ञान परिषद, प्रयाग के प्रधानमंत्री के पद को 1977–1987 तक सुशोभित किया. तथा पुनः 1996 से अब तक इस पद पर विराजमान है. आप विज्ञान तथा अनुसंधान पत्रिका के सपादक के पद को भी भॅली भॉति सुशोभित कर रहे है.

आपके द्वारा सम्पादित ग्रन्थ है–
1. हिंदी में विज्ञान लेखन के सौ वर्ष
2. विज्ञान पत्रकारिता के मूल सिद्धात
3. सामान्य विज्ञान विश्व कोश
4. सामाजिक विज्ञान विश्व कोश

विज्ञान के अतिरिक्त हिंदी साहित्य मं भी प्रगाढ़ रुचि है और कई अवधी ग्रन्थों के सम्पादन कार्य किया हैं. महाकवि निराला पर भी आपकी दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है.

सम्प्रतिः विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्व कोश के 10 खण्डों के सम्पादन का कार्य भार

++++++++

तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति

मऊ शेरपुर, समस्तीपुर बिहार

रजत जयन्ती समारोह

10 नवम्बर 2006 से 12 नवम्बर 2006 तक

कार्यक्रमः 0सदस्य–सभा 0लोकार्पण सभा 0सम्मान–सभा 0अ.भा.कवि–सम्मेलन 0संगीत समारोह

समारोह का विशेष आकर्षणः अ.भा. पुस्तक/लघु पत्र–पत्रिका प्रदर्शनी

साहित्यकारों से आगमन स्वीकृति देने की अपील है.

0लेखकों/प्रकाशकों/संपादकों से प्रदर्शनी के लिए पुस्तकें/पत्रिकांए भेजने की अपील

लिखेंः श्री सीताराम शेरपुरी, संस्थापक एवं अध्यक्ष तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति, मऊ, शेरपुर, समस्तीपुर, बिहार, दूरभाषः 06278–227528

संपादक के लिए आवश्यक है कि वह दायित्व बोध परक संकलन करें

पं0 रामचन्द्र शुक्ल

उक्त शीर्षक में तीन बिन्दु अंतरनिहित है पत्र-पत्रिकाओं के संपादक के दायित्व एवं उनके अधिकार तथा चुनौतियां. मेरे विचार से दायित्व का प्रश्न पहले आता है. अधिकार बाद में. दायित्व से ही निःसृत होता है समाज का भी ऐसा ही क्रम निर्धारित होना चाहिए. भारतीय संविधान में मूलभूत अधिकार का विशेष प्राविधान है. यह सम्भवतः इसलिये रक्खा गया ताकि तत्कालीन परिस्थितियां आज से सर्वथा भिन्न थी. संविधान के निर्माण कर्ताओं में गुलामी की भयंकर त्रासदी सम्मुख थी जिसमें अधिकार नाम की कोई चीज भारतीय नागरिक को उपलब्ध नहीं थी. इसलिये अधिकार का ज्ञान कराना आवश्यक था. अब जब स्वराज्य हुये अधिशदी से अधिक बीत चुका है तब नव निर्माण, राष्ट्रीय आवश्यकता हो गया जो बिना दायित्व बोध के सम्भव नहीं है. जनता अधिकार की मांग करती है. दायित्व की बात नहीं उठती. संपादक के लिए आवश्यक है कि वह दायित्व बोध परक संकलन करें.

दायित्व प्रायः चुनौती विहीन होता है. अधिकार को हर पल चुनौती में ही जीना पड़ता हैं. संपादक के संदर्भ में जहां उसके अधिकार निर्वाध है उसके लिये वहीं चुनौतियां भी सर्वाधिक है. संपादक की दो श्रेणियां है. संपादक, किसी आर्थिक समूह का जब नियोक्ता होता है तब उस आर्थिक समूह के नीतियों के अंतरगत ही संपादन को छूट उसे प्राप्त होती है. नीतियों के उल्लंघन करने पर उसे सेवा मुक्त होना पड़ता है. ऐसे संपादकों की चुनौतियां दो तरफा होती है. स्वामी समूह की इच्छाओं का पालन तथा स्वविवेक से यर्थाथ का उद्घाटन. दोनों एक साथ होना कठिन होता है. स्वनाम धन्य ख्याति अर्जित संपादक इस प्रकार की त्रासदी के शिकार हुये है. ऐसे संपादक भी है जो अपने पत्र पत्रिका के मुद्रक, प्रकाशक, संपादक सभी है. इनकी सबसे बड़ी समस्या या चुनौती अर्थ व्यवस्था है. पत्र-पत्रिका का संजाल खड़ा करना आसान काम नहीं है. श्रम साध्य, अर्थ साध्य एवं साधन साध्य भी है. सभी में अर्थ प्रमुख है. अर्थ उपार्जन के दो ही साधन है. सशुल्क वितरण जो प्रायः नगण्य होता है. विज्ञापन जो सर्व सुलभ नहीं है. पहुंच, ट्रीक, तिकड़म लगाने पर भी लागत भर का विज्ञापन लघु पत्र-पत्रिकाअें को नहीं मिलता. भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार भी अपने कार्यो का प्रचार विज्ञापनों से कराती है. भारत सरकार का विज्ञापन दर लघु पत्र-पत्रिकाओं के लिये ऊंट के मुंह में जीरा के समान है. ऊपर से भारत सरकार विज्ञापन दर में १५ प्रतिशत कमीशन भी ले लेती है. इस प्रकार अर्थ व्यवस्था सबसे बड़ी चुनौती है.

☼दायित्व प्रायः चुनौती विहीन होता है. अधिकार को हर पल चुनौती में ही जीना पड़ता हैं. संपादक के संदर्भ में जहां उसके अधिकार निर्वाध है उसके लिये वहीं चुनौतियां भी सर्वाधिक है.
☼पत्र-पत्रिका का संजाल खड़ा करना आसान काम नहीं है. श्रम साध्य, अर्थ साध्य एवं साधन साध्य भी है. सभी में अर्थ प्रमुख है. अर्थ उपार्जन के दो ही साधन है. सशुल्क वितरण जो प्रायः नगण्य होता है.

लघु पत्र-पत्रिकाओं का प्रभाव क्षेत्र प्रायः ग्रामीण समुदाय है. बड़े पत्रों का प्रभाव क्षेत्र या पाठक वृन्द शहरों के हैं. प्रायः हर बड़ा पत्र चाहे वह दैनिक जागरण, सहारा, अमर उजाला, हिन्दुस्तान हो अपना जनपदीय संस्करण प्रकाशित करते हैं. सम्पूर्ण संसाधन संयुक्त होने के कारण स्थानिय पत्र-पत्रिकाओं को, जो विज्ञापन ग्रामीण जनता के हितार्थ प्रकाशित होते है उनको भी उदरस्थ कर जाते है. जबकि इनका पाठक वृन्द शहरी है. इस चुनौती का सामना करने के लिए संगठित पत्रकारमंय बनाने की आवश्यकता है.

पत्र-पत्रिकाओं के चर मुख्य कार्य हैं. १. शिक्षा २. लोक कल्याण, ३. लोक रंजन ४. सूचना. पत्र-पत्रिकाअें के संदर्भ में शिक्षा का उल्लेख विस्मयकारी हो सकता है किन्तु यह सत्य है कि सामाजिक दृष्टि को दिशा देने का कार्य जितना पत्र-पत्रिकायें करती है उतना कोई संस्थान नहीं करता न कर सकता है. समाचार के साथ विचार संपादन कला के परिपाक से

ही सम्भव हैं. विचार ज्ञान परक शिक्षा है. शिक्षा मात्र प्रक्रिया है, प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान दिया जाना है इसकी जानकारी समीचीन है. आज की पत्रकारिता पीत पत्रकारिता के सन्निकट इसलिए चली गई है कि सूचना में विचारों को सम्मिलित करने का प्रयास नहीं हो रहा है. सूचना राजनेताओं के भ्रामक वक्तव्य से प्रभावित हो जाते है जैसे मुरादाबाद में दो व्यक्तियों के बीच किसी छोटी बात को लेकर विवाद हुआ. राजनीतिक रोटी सेकने का अवसर स्वार्थी तत्व कभी नहीं गंवाता. घटना अल्पसंख्यक के उपर हो रहे अत्याचार के रुप में प्रचारित हुई. यह दायित्व पत्रकारिता का था कि घटना को समुदायीकरण रोक कर व्यक्ति के बीच का विवाद स्पष्ट करे किन्तु सभी पत्रों ने अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक शब्दावली का प्रयोग कर व्यापकता प्रदान कर दिया. आजकल सभी पत्र-पत्रिकाओं में हत्या, बलात्कार, अपहरण, फिरौती जैसे समाचार अटे-पटे रहते हैं. साहित्य, संगीत, कला के कार्यक्रमों की उपेक्षा हो जाती है. इस प्रकार प्रकारान्तर से पाठक वृन्द इन्हीं सूचनाओं को पढ़ने समझने का अभ्यस्त होता जाता है और दिखाई पड़ने लगता है कि जैसे देश में हत्या डकैती बलात्कार जैसी घटनाएं हो रही है. स्वस्थ और अच्छे वातावरण निर्मित करने वाले कार्यक्रमों भी जनहित में प्रचारित प्रसारित होने चाहिए.

चहुमुखी विकास की आंधी में ट्यूबेल, ट्रैक्टर, नहर तक ही ध्यान गया. यह तथ्य विस्मृत हो गया कि गांव के परम्परागत सिचाई के साधन तालाब, पोखरा, कूआ का अस्तित्व पर्यावरण एवं जीव जन्तुओं के सह अस्तित्व से जुड़ा हुआ है. उनकी अनदेखी नहीं होनी चाहिए थी. अनुभवजनित पत्रकारिता में लोक कल्याण की भावना का समावेश होना चाहिए. क्रिकेट के प्रचार में फुटबाल, वाली बाल, बैडमिन्टन जैसे खेलों का पराभव पत्रकारिता ही रोक सकती है. इसके लिये पत्र पत्रिकाओं को सुदृढ़ आधार प्रदान किया जाना चाहिए.

पत्र-पत्रिकाएं समाज को शिक्षित और मत निर्धारण करने में दीक्षित करने का कार्य भी करती है. इसलिये समाज का दायित्व बनता है कि पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग करें. शासन स्तर पर कम से कम दस विज्ञापन मासिक पत्र-पत्रिकाओं को अवश्य मिले और ऐसी व्यवस्था हो कि आप कर दाता पंजीकृत पत्र-पत्रिकाओं को विज्ञापन देने के लिए प्रेरित हो. तब पत्र-पत्रिकाओं की गुणवत्ता पर भी सुधार होगा. पत्रकारिता प्रजातंत्र का प्रहरी है. लोकतंत्र का रक्षक है. प्रहरी भूखा नंगा हो तो रक्षा क्या करेगा देश को सशक्त प्रहरी की आवश्यकता है

+++++++++

पं0 रामचन्द्र शुक्ल

18 जनवरी 1940 को उत्तर प्रदेश के ग्राम–राजापुर, धर्मापुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश में स्व0 पतिराज शुक्ल के पितृत्व व श्रीमती सरस्वती देवी के मातृत्व में जन्में पं0 रामचन्द्र शुक्ल का विवाह श्रीमती मैना शुक्ला के साथ हुआ. आपने बी. एस.सी, एल.एल.बी करने के बाद उच्चतर न्यायिक सेवा उत्तर प्रदेश के पद को सुशोभित किया. आपकी अब तक अवंतिका, अरुणिमा–काव्य, राम कथा कानन के संशय विह–ललित निबंध प्राकशित हो चुके हैं.

सन्दर्भः इन्टरनेशनल डायरेक्टरी आफ डिस्टीगवीस्ड लीडरशिप – आठंवा संस्करण एशिया/ पेसिफिक हू इज हू –बालूम तीन, हू.इज हू बालूम–2, पत्रकारिता कोष–भारत, गावन्डी मुम्बई –रायबरेली बीसवीं सदी व अन्य. मानद उपाधिया–मैन आफद दि इयर 1998–अमेरिकन वायोग्रफिकल इन्स्टीट्यूट, सदस्य–रीसर्च बोर्ड आफ एडवाइजर्स 1999, ब्रहम रत्न अलंकरण, सरस्वती सम्मान, सारस्वत सम्मान, काव्य श्री, जायसी पंचशती सम्मान–99, सारस्वत सम्मान, पत्रकार श्री, साहित्य श्री, पद्मश्री लक्ष्मी नारायण दुबे स्मृति सम्मान, खुसरो स्मृति प्रशस्ति पत्र, श्याम नारायण पाण्डे स्मृति प्रशस्ति पत्र, पत्रकार शिरोमणि, आचार्य पं. देवीदत्त शुक्ल, मलिक मुहम्मद जायसी, हिन्दी रत्न, गरिमा भारती, साहित्य गौरव सम्मान।

सम्पादकः साहित्यकार कल्याण परिषद हिं.मा. व अगीतोत्सव अनियतकालीन पत्रिका

प्रकाशनाधीनः गवाक्ष, भारतीय आध यात्म, सूर साहित्य में राम तत्व, अमृतम्भरा, डारविन का विकासवाद और कामा

सम्पर्क सूत्रः अवंतिका, निकट हाथी पार्क, रायबरेली–229001

+++++

संपादन एक चुनौतीपूर्ण कार्य तो है ही यह एक कला भी है

संपादन लोगों को देखने में बड़ा आकर्षक तथा रोमांचपूर्ण कार्य लगता है पर यह कार्य जितना रोमांचक लगता है उतना ही कंटकापूर्ण भी हैं. इसकी अनुभूति तो मात्र संपादक को ही होती हैं. संपादक का कार्य चुनौतियों से भरा होता है.

किसी भी समाचार पत्र-पत्रिका के प्रकाशन में संपादक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. किसी भी समाचार पत्र के प्राण संपादन कला ही होती है. यह बड़ा ही उत्तरदायित्वपूर्ण तााि सम्माननीय कार्य हैं. लोगों को देखने में बड़ा आकर्षक तथा रोमांचपूर्ण कार्य लगता है पर यह कार्य जितना रोमांचक लगता है उतना ही कंटकापूर्ण भी हैं. इसकी अनुभूति तो मात्र संपादक को ही होती हैं. संपादक का कार्य चुनौतियों से भरा होता है. जिस कार्य में चुनौतियां न हों उस कार्य को करने में वह रोंमाच नहीं होता जो साहसिक कार्य करने में होता हैं.

प्रथम चुनौती पत्र-पत्रिका के सामग्री चयन की होती है. हर कवि व लेखक चाहता है कि मेरी रचना सर्वप्रथम छपे. पर संपादक के सामने चुनौती होती है एकत्रित प्रकाशन सामग्री में से जनउपायोगी प्रेरणादायी, उद्देश्यपूर्ण, राष्ट्रीय हित के अनुरुप ही सामग्री चयन करनी होती है. संपादक तो प्रत्येक कवि व लेखक की रचना को सम्मान देना चाहता है पर ऐसा संभव नहीं हो पाता.

दूसरी चुनौती समाचार प्रकाशन की होती है. समाचार प्रकाशना में महत्वपूर्ण समाचार को प्राथमिकता से छापा जाता है. समय और आवश्यकता के अनुसार समाचार को स्थान दिया जाता हैं. प्रत्येक समाचार को समाचार पत्र में छापना संभव नहीं होता हैं.

तीसरी चुनौती होती है संपादक की पत्र-पत्रिका को आर्कषक बनाना. यह भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं. पत्र में कैसे सामग्री किस स्थान पर दी जाये किस तरह के चित्रों से सुसज्जित किया जाये कि पत्र-पत्रिका पाठकों को आकर्षित करें.

चौथी चुनौती है अपने कर्मचारियों के साथ ताल-मेल बिठाना. आज के चुनौतीपूर्ण माहौल में कर्मचारियों से काम लेना भी एक कला है. कम्पोजीटर, मशीन मैन, हॉकर के साथ मित्रवत व्यवहार करके, कभी क्रोध करके तथा कभी स्नेहपूर्ण व्यवहार करके काम करवाना पड़ता हैं.

पांचवी चुनौती है अपने पत्र-पत्रिका का प्रसार कैसे बढ़ाया जाये. यदि पत्र-पत्रिका अधिक से अधिक पाठकों न पहुंचे तो उसके छपने का उद्देश्यपूर्ण नहीं होता. छठी चुनौती है पाठकों द्वारा प्रकट किये गये विचारों और सुझावों को तरजीह देना. उनके द्वारा प्रेषित पत्रों में से उद्देश्यपूर्ण चुनिंदा सामग्री, विचारों को पत्र में स्थान देना. सांतवी चुनौती है समाचारों की एडिटिंग. समाचारों में कांट-छांट करके छपने योग्य बनाना.

मधुरानी सिंह राठौर

उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में जन्मी श्रीमती मधुरानी सिंह राठौर की शिक्षा दीक्षा फैजाबाद में हुई. विवाहोपरान्त 28 नवम्बर 1975 को ग्वालियर, म.प्र. में आ गई. आपके ससुर पूज्यनीय स्व.डा. ज्ञान प्रकाश जी जनप्रवाह का संपादन 1960 से कर रहे थे. प्रारम्भ में आपके ससुर ने आपको उपसंपादक का पद दिया था. 11 सितम्बर 1999 को उनके मृत्योपरान्त जनप्रवाह हिंदी साप्ताहिक की संपादक बनी. तब से लगातार इस जिम्मेदारी का वहन कर रही हैं. जनप्रवाह को 2004/05 में प्रशस्ति पत्र, लघु उद्योग पत्र–पत्रिका प्रदर्शनी, गाजियाबाद, 2003 में रिस्पांसिबल मीडिया अवाड, 2005 में पर्यावरण जागरुकता अवार्ड–इंटरनेशनल मीडिया फाउन्डेशन, नई दिल्ली, 2006 में ग्यालियर पत्रकारिता रत्न–खानकाह सूफी दीदारशाह चिश्ती हाजी मलंग वाड़ी, 2006 पर्यावरण एवं जीव संरक्षणके उल्लेखनीय कार्य हेतु प्रमाण–पत्र, पीपुल्स फार एनीमल्स, ग्वालियार सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका हैं.

संपादक, जन प्रवाह हिंदी साप्ताहिक, इंगले की गोठ, ग्वालियर–474001

इस प्रकार संपादक कला चुनौतियों से भरा कार्य हैं. चुनौतीपूर्ण होने के बाद भी यह रोमांचक कार्य हैं. पूरे पत्र-पत्रिका के संचालन के लिए धन की व्यवस्था करना जो कि मात्र विज्ञापन द्वारा ही पूर्ण हो सकती है. बड़े समाचार पत्र व्यापारियों से भी विज्ञापन ले लेते हैं और सरकार भी उन पर मेहरबान रहती है पर छोटे समाचार पत्र आर्थिक तंगी से जूझते है क्योंकि उनका लघु रुप सबको दिखाई पड़ता है पर उनकी उपयोगिता किसी को नजर नहीं आती. लघु समाचार पत्र यथार्थ से अधिक नजदीक होते हैं बनिस्पत बड़ें समाचार पत्रों के.

इस प्रकार यही कहा जा सकता है कि किसी भी पत्र-पत्रिका का संपादन एक चुनौतीपूर्ण कार्य तो है ही यह एक कला भी है. लोगों के दिल-दिमांग में घुसने की पत्र-पत्रिका के माध्यम सें. ++++++++

पत्रिकाओं का संपादन इंतना सरल, आसान और चिकना रास्ता नहीं है.

✍ रितेन्द्र अग्रवाल

आज जिस तरह से लोग साहित्य सेवा को लेकर पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कर रहे हैं उससे एक आशा की किरण सहर्ष प्रज्जवलित होती है कि साहित्य के प्रति लोगों का सम्मान और जागरुकता आ रही हैं. जितनी अधिक पत्रिकाएं प्रकाशित होगी उतना ही अधिक लेखकों, साहित्यकारों को प्लेटफार्म मिलेगा, विचारों को पाठकों तक पहुंचानें का अवसर मिलेगा. एक क्रांति सी लायी जा सकेगी साहित्य जगत में.

लेकिन जब संपादन करते हुये अनुभव, लोगों के विचारों से रुबरु हुआ जाता है तो अनुभव अलग ही होता है. पत्रिका शुरु शुरु में छोटी होती हैं. आकर्षक होना न होना परिस्थितियों पर निर्भर रहता हैं. फिर सामग्री प्राप्त करना भी कभी कभी टेढ़ी खीर नजर आता हैं. हमारी मानसिकता कुछ अलग ही चलती है. जब नहीं छपते तो नाराज होते, खीझते रहते हैं. जब रचनायें मांगता है संपादक तो सौ नखरे दिखाते हैं. उस वक्त उन्हें अपनी खीझ याद नहीं आती.

चूंकि शुरु शुरु में संपादक की आवश्यकता रहती है कि अधिक से अधिक लेखको, रचनाकारों की रचनायें पत्रिका में सम्मिलित हो. लेकिन कुछ अंक पश्चात जब संपादक उनसे अनुरोध करता है कि अब आप सहयोग दें, तो पचास बहाने बनाते हैं. बाजिब है, संपादक को बुरा लगना.

अगर पाठकों कि दृष्टि से देखा जायें या फिर रचनाकारों की तो आजकल इतनी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं -रचनाकार, पाठक बगैरह कभी कभी दुविधा में पड़ जाते है किसे स्वीकारें किसे नहीं. क्योंकि सबको तो नहीं स्वीकार किया जा सकता.

अतः संपादक बेचारा पाता अपने आप को फंसा भॅंवर जाल में. पत्रिका के लिये जब विज्ञापन तलाशे जाते हैं तो व्यापारी वर्ग की भी स्थिति ऐसी होती है कि इतनी पत्रिकाएं है किसे किसे दें. तो कुछ को देते हैं कुछ को नहीं.

जहॉ तक सरकारी विज्ञापनों का प्रश्न है वहॉ तो जोड़ तोड़ का गणित रहता है, या फिर संबंधो पर निर्भर. कभी मिलते है, कभी नहीं. इधर तो छोटी पत्रिकाओं के लिए विज्ञापनों पर शायद रोक भी हैं. ऐसे में, काफी विकट स्थिति हो जाती है कि पत्रिका को कैसे चलाया जाये.

ऐसे टेढ़े वक्त में ईश्वर ही रक्षा करता है. भामाशाहों को भेजकर. तब लगता है आज भी ईश्वर की कृपा, भले लोगों की नजर हैं.

लेकिन कह सकता हूँ पत्रिका का संपादन इंतना सरल, आसान और चिकना रास्ता नहीं है. यह वह डगर है जहॉ कदम-कदम पर गति अवरोधक हैं. जिन्हें पार करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है.

फिर भी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है, संपादन हो रहा है.

यह ईश्वर की कृपा दृष्टि है, हिंदी भाषा के प्रति. यह इसी तरह बनी रहे. ++++++

श्री रितेन्द्र अग्रवाल

जन्मः 9 अप्रैल 1953

स्थानः

मेरठ, उत्तर प्रदेश

शिक्षाः

एम.एस.सी—(भूविज्ञान)

कार्यः भूवैज्ञानिक

सम्प्रतिः परामर्शदाता (भूविज्ञान एवम् खनन)

साहित्य सृजनः मन में उठे विचारों को शब्द देकर लोगों तक पहुॅचाने के वास्तें लेखन, विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित

सम्पादनः पत्रिकाओं का सफल संपादन एवम् काव्य संग्रह का सहयोग आधार पर संपादन

सम्पर्कः 11 / 500, मालवीय नगर, जयपुर, 302017

संपादको को पत्र–पत्रिकाओं के रुप व स्वरुप पर गंभीरता से विचार करना होगा

✍गोपाल कौशल

पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं
सिंहासन चढ़ते जाना है।
हे! कलमवीर! सबको साथ
लेकर आगे ही बढ़ते जाना है!!

कहा जाता है कि कलम् तलवार से भी ज्यादा ताकतवर होती है और कल्म द्वारा रचित शब्द शक्ति को ही साहित्य कहा जाता है।

महात्मा गांधी ने कहा है कि "अच्छी पुस्तकें पास होने पर हमें भले मित्रों की कमी नहीं खटकती वरन मैं जितना पुस्तकों का अध्ययन करता हूँ उनती ही वे मुझे उपयोगी मित्र मालूम होती है. विचार सग्राम में पुस्तकें ही मनुष्य के प्रभावशाली शस्त्र सिद्ध होती है. "

वर्तमान में प्रतिपल बदलते जीवन मूल्यों और समय की इस विस्मृत कर समूचे परिदृश्य पर पश्चिमी संस्कृति ने देश की प्रगति को अंधे मोड़ पर ला खड़ा किया है. यही कारण है कि आज अच्छें साहित्य को पढ़ने में नई पीढ़ी अरुचि जता रही है और अश्लील साहित्य को दिलचस्पी से पढ़ रही है जिसका दुष्परिणाम अश्लील वेशभूषा, यौन उत्पीड़न के रुप मे देखने को मिल रहा है. यदि आकड़ा देखा जाए तो पुस्तक प्रकाशन में भारत का पूरे विश्व में चौथा स्थान है. पाठकों को जबसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सौगात मिली है तब से पत्र-पत्रिकाओं के प्रति रुझान कम कर दिया, पाठक प्रायः यह कहते हुये मिलते है कि रात को बारह बजे तक दिन भर के देश और दुनिया के समाचार इलेक्ट्रानिक चैनलों से मिल जाते हैं. तो पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हो पाती है. ये इलेक्ट्रानिक चैनल केवल समाचारों तक सीमित नहीं है, वरन विश्लेषण विवेचन और प्रतिक्रियाओं से भी अवगत कराते हैं. मसलन पत्र-पत्रिकाओं पर फिर क्यों रुपये बर्बाद करें. इलेक्ट्रानिक माध्यमों के विस्तार एवं वर्तमान पीढ़ी की विचार धाराओं से उत्पन्न चुनौती का सामना करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों-प्रकाशकों को चाहिए कि वह अपने प्रकाशनों के रुप स्वरुप और प्रांसगिकता के सन्दर्भ में गंभीरता से विचार करना होगा.

बार-बार कहा जा रहा है कि २०वीं सदी सूचना क्रांति की सदी होगी और इस सदी में उपलब्ध विभिन्न सूचना माध्यमों को अपनी उपयोगिता सार्थकता और विश्वसनीयता बनाएं रखने के लिए पुरजोर प्रयास करने होंगे जो प्रारंभिक तरीकों से संभव नहीं है. हमें चाहिए कि जिस तरह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लघु-पत्रिकाओं के संपादक के रुप में अपनी ओजस्वी, अहिंसात्मक लेखनी से लोगों की विचार-धाराओं में क्रांति का शंखनाद किया था उसी तरह हमें भी अपनी पत्र-पत्रिकाओं में पाठकों की रुचि के अनुसार, उत्कृष्ट साहित्य सामग्री का संकलन कर उसे प्रकाशित करने और अपने संपादकीय में ताजा विषय एवं अन्य विषयों पर लिखते समय प्रभावी शब्दवाणों का समावेश करना चाहिए. ताकि पाठक, जनमानस के मन-मस्तिष्क तक बार-बार पढ़ने की जिज्ञासा बनी रहे.

यदि यह कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी-

ना सूचना तंत्र रहेगा,
ना प्रजातंत्र रहेगा
सत्य को खोजेंगे,
मगर सत्य न मिलेगा।
वक्त की बेखौफ़ आंधिया,
इतनी ज्यादा है तेज
ग़र भटक गये कलम़वीर,
तो देश का नामोनिशॉ ना मिलेगा

+++++++++

संक्षिप्त परिचय

गोपाल कौशल
जन्मः 01 जनवरी 1978
शिक्षाः हा.से./डी.एड.
सम्प्रति : शिक्षक
संपादनः त्रैमासिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति सृजन पत्रिका'
प्रकाशनः देश की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में रचनॉए प्रकाशित
सम्मानः देश की अनेक साहित्यिक सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित
प्रसारणः आकाशवाणी से साक्षरता संबंधी रचनाओं का प्रसारण
पताः कौशल पान सदन्, 20, बस स्टेशन, महू–नीमच, राजमार्ग, नागदा धार, म.प्र. 454001

संपादक एवं उनकी चुनौतियॉ

लघु पत्र पत्रिकाओं की भी भूमिका जबर्दस्त होती है

✍डॉ0 स्वर्ण किरण

० जो शक्ति गोली, बंदूक, तोप आदि में होती है उससे अधिक शक्ति पत्र-पत्रिकाओं में होती है. एक कवि का कथन है कि 'खैंचो न कमानों को, न तलवार निकालों, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालों'

० टी.वी.के आ जाने से पत्र-पत्रिकाओं का महत्व कुछ कम हुआ है पर पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका साधारण नहीं है. जनमत को प्राप्त करने में, जनमत को बदलने में पत्र/पत्रिकाओं के संपादक बहुत काम के सिद्ध होते हैं.

कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका के बाद पत्र-पत्रिकाओं को राष्ट्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है. राष्ट्र का समुचित नियंत्रण, वस्तुतः पत्र-पत्रिका से ही होता है. ये देखने में छोटी भले ही हों पर उनमें असीम शक्ति होती है. कहा भी गया है 'जो शक्ति गोली, बंदूक, तोप आदि में होती है उससे अधिक शक्ति पत्र-पत्रिकाओं में होती है. एक कवि का कथन है कि 'खैंचो न कमानों को, न तलवार निकालों, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालों' अखबार यानि पत्र तोप का सामना करने में सक्षम हैं पर शर्त है कि पत्र निष्पक्ष हो, उसकी आवाज , जो जोर जुल्म या भ्रष्ट्राचार के विरुद्ध हो वह शालीन और तेज तर्रार हो. आज पत्र-पत्रिकाओं के प्रति पहले जैसा आकर्षण नहीं दीखता. कुछ पत्र-पत्रिकाएं तो इसलिए निकलती है कि संपादकों की सूची में संपादक का नाम जूड़ जाए. अथवा यदि किसी जिले में पत्रकार सम्मेलन होता है तो उस पत्रकार सम्मेलन में पहुंच कर जलपान का आंनद लिया जाए. टी. वी.के आ जाने से पत्र-पत्रिकाओं का महत्व कुछ कम हुआ है पर पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका साधारण नहीं है. जनमत को प्राप्त करने में, जनमत को बदलने में पत्र-पत्रिकाओं के संपादक बहुत काम के सिद्ध होते हैं. यह बात दूसरी है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, पराड़करजी आदि की तरह संपादक आज दुर्लभ है पर कुछ संपादक ऐसे हैं जो अपनी लेखनी निर्भिक होकर चलाते है और अपने लोगों से ऐसी रचनाएं लिखवाते है जिससे जादू का असर होता है. साहित्यिक पत्रिकाएं अपवादक है पर इनके द्वारा भी समाज एवं जन-जीवन के बीच एक अच्छी भूमिका बनती है. निश्चय ही पत्र-पत्रिका के प्रकाशन के बीच लक्ष्य मनोरंजन का नहीं होत. लोगों का ज्ञानवर्द्धन हो, कुछ पैसा भी मिले तो श्रम सार्थक माना जाता है. पर आज ऐसा होता नहीं दिखता. लघु पत्र-पत्रिकाओं की भी भूमिका जबर्दस्त होती है हालांकि लोग कहते है कि इनका प्रकाशन कुछ छुट भैयों को उछालने के लिए होता है. व्यावसायिक पत्रों की भूमिका अलग होती है. आज अनेक ऐसे पत्र है जो

संक्षिप्त परिचय

डॉ0 स्वर्ण किरण 16 मार्च 1934,आरा, बिहार,स्व0 रामभवन व माता स्व0 रामेश्वरी देवी की कोख से जन्में डॉ0 स्वर्ण किरण सिंह का विवाह स्व0 मिथिलेश से हुआ. आपने परास्नतक एवं पी.एच.डी. शिक्षा ग्रहण करने के बाद 1957 में जैन कॉलेज, आरा मे प्राध्यापन कार्य शुरु किया, मार्च 1994 में किसान कॉलेज, सोहसराय, नालंदा से प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के रुप में सेवानिवृत्त हुए.

आपकी अब तक हिंदी, भोजपुरी, मगही आदि में 8 दर्जन पुस्तकें गद्य–पद्य में प्रकाशित हो चुकी हैं. साहित्यिक सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको अब तक तीन दर्जन से अधिक सम्मान/पुरस्कार मिल चुके हैं. आपकी पुस्तकों परे चार शोध कार्य सम्पन्न हुए है. पांचवा शोध कार्य डॉ0 स्वर्ण किरण–व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पद मगध विश्वविद्यालय बोध, गया प्रारम्भ है. आप अनेक संस्थाओं व पत्रों से जुड़े हुए है. सन् 2001 में त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद द्वारा सार्वजनिक अभिनंदन एवं अभिनंदन ग्रंथ भेट कियाा गया. नालंदा दर्पण हिंदी मासिक का विगत 33 वर्षो से संपादन/प्रकाशन. आकाशवाणी, पटना से हिंदी, भोजपुरी, मगही रचनाओं का प्रसारण. किए हैं.

संपर्क: सोहसराय, 803118, नालंदा

स्वस्थ एवं उपयोगी होते हुए भी अपना दम तोड़ रहे हैं. सरकार उदासीन है. राज्य सरकार और केंन्द्रसरकार पत्र-पत्रिकाओं के लिए विज्ञापन देती है पर कुछ न कुछ नुस्ख निकाल कर. अच्छे अच्छे पत्रों को विज्ञापन बंद किए हुए हैं. यह बात दूसरी है कि कुछ संपादक पत्र की पचास प्रति छापकर वितरण पंद्रह हजार बतलाते हैं और तिकड़म भिड़कार विज्ञापन भी प्राप्त कर लेते हैं. पर अधिकांश ईमानदार पत्र संपादकों की मौत है. कुछ पत्रों के संपादक कहते हैं कि १०० रुपये शुल्क भेज दीजिए, अपनी रचना छपवाते रहिए. साहित्य सागर मासिक के संपादक तो पत्रिका के सदस्य बने बिना कोई रचना छापने को तैयार ही नहीं. क्षणदा के संपादक का प्रलोभन है कि पत्रिका का सदस्य बनिए, ४०/रु० की पुस्तक भेंट मं पाइए और रचना छपवाइए.
अधिकांश पत्र आज लेखको को शोषण कर रहे हैं, उन्हीं से पैसे लेकर अपनी दूकानदारी चला रहे हैं, लेखकों की साधना का जैसे कोई मूल्य ही नहीं. व्यावसायिक पत्रिकाएं रचनाओं पर पारिश्रमिक/साम्मनिक देती हैं पर वहां गुटबंदी है. किसी पत्र-पत्रिका के गुट में प्रवेश करना साधारण बात नहीं है. दैनिक पत्र के संपादक सरकारी विज्ञापन का लाभ अधिक उठाते हैं और उठाना भी चाहिए. पर अधिकांश दैनिक पत्र क्षेत्रीय प्रकाशन पर बल देते हैं. समाचार वाला पृष्ठ अलग-अलग जिलों के लिए दो तीन हजार की संख्या में छापते हैं और सरकार को दिखलाने की जहॉ बात है सबका योगकर लाख की संख्या में प्रसार संख्या वितरण दिखला देते हैं. चार्टेट लेखपाल अपनी फीस लेकर संपादक महोदय के मनोनुकूल प्रसार संख्या लिख देते हैं. विज्ञापन की प्राप्ति हो जाती है पत्र आय का साधन बन जाता हैं.
जो संपादक स्वांत:सुखाय पत्र का संपादन प्रकाशन करते हैं उनकी बात अलग है. कुछ थोड़े बहुत संपादक अपने पत्र में विषय वैविध्य पर ध्यान देते है, साहित्यिक, सांस्कृतिक समाचारों को वरीयता से छापते हैं, ईमानदारी से लेखको की रचनाओं का संपादन करते हैं, उनकी सोयी चेतना को जगाते है, उनमें राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रसेवा का बीज बोते हैं इत्यादि. नांलदा दर्पण के संपादन क्रम में इन पक्तियों ने लेखक को अनेक कटु मधुर अनुभव हुए हैं.
कुछ संपादक रोब गालिब करने के लिए नियम बनाते हैं-पोस्टकार्ड पर कृपया रचना न भेजें, एक बार में एक ही रचना भेजें-पारिश्रमिक देना दूर की बात पर ठसक ज्यादा. 'अभिनव प्रत्यक्ष' साप्ताहिक पत्र के लगभग दो दशक तक इन पक्तियों के लेखक द्वारा संपादन में ऐसा नियम नहीं रखा गया, अब संपादक के बदलने से ऐसा नियम बना दिया गया है जो चिंत्य है. पोस्टकार्ड पर छोटी पठनीय रचना भेजना अनुचित कैसे है? 'विश्व स्नेह समाज' पत्र का ध्यान अपने क्षेत्र, अपने राष्ट्र तक सीमित नहीं दीखता, विश्व कल्याण शायद इसका लक्ष्य है- अपने ढंग का अपवादक पत्र है जो निश्चय ही उपेक्ष्य नहीं. काश, सरकार का ध्यान पत्र-पत्रिकाओं की उपयोगिता पर जाता, खानापूर्ति प्रसार संख्या की चार्टड लेखपाल की प्रामाणिकता पर सीमित नहीं होता.

+++++++++

गीत

✍ **डॉ. मोहन आनन्द,**
संपादक, कर्मनिष्ठा

अब तो बस अवशेष बचे है, संबन्धों के नाम के,
केवल कहने को हैं अपने, औरन कोई काम के।
बुरे वक्त पर हाथ छुड़कर, ठेंगा दिखा गए।
सब संबधी अवसर आए, जाने कहॉ गए।
अपने हाथों बेल लगाई, पोशी बड़ी सम्माल के,
खुशहाली की आस संजोई, उम्मीदों में ढाल के।
कभी न साथ निभाए, पेंतरे बदले नए-नए।
सब संबंधी अवसर आए, जाने कहॉ गए।
सात जनम तक साथ निभाने वादे बहुत किए,
बातों बातो में फुसलाकर तन मन लूट लिए।
यौवना ढला ढला आकर्षण, कहीं और ढल गए
सब संबंधी अवसर आए, जाने कहॉ गए।
सावन की भीनी फुहार, घन-गर्जन से बहके,
धानी चादर, ओढ़ दुलनियॉ के अंग अंग महके।
आलिंगन के भाव भावनाओं में रस भर गए,
सब संबंधी अवसर आए, जाने कहॉ गए।
मैं रह गई तड़पती तपती ग्रीष्म सी माटी,
कोई हाथ साथ न आया, माटी हुई माटी।
माटी से संबंध बने सब माटी में मिल गए,
सब संबंधी अवसर आए, जाने कहॉ गए।

हास्य कहॉनी

बंदा गया काम से

✍राही अलबेला

> शिवशंकर सिंह मेरे बिजनेश पार्टनर है जो कुछ वर्षो पूर्व एक सरस्वती शिशु मंन्दिर में पढाते थे। तबसे इनको हम लोग आचार्य जी के सम्बोधन से पुकारते है। उनकी शादी 1996 में हुई थी। पहले ये शादी के कट्टर विरोधी थें लेकिन बेचारे एक हंसीना के मकड़ जाल में ऐसे फंसे की मत पूछिए।

हाय राम, कुड़ियों का है जमाना,
हाय राम, कुड़ियों का है जमाना।

वैज्ञानिक युग की कालवेल ने किसी के आने के आने की सूचना दी। दरवाजें पर आचार्यजी खड़े थें। मैने कहा -''अरें आचार्यजी, आप आइए-आइए। अहो भाग्य जो आप पधारे हमारे द्वारे, साथ में ऐ नया लम्हा लाये!" यह आचार्य जी मेरे विजनेश पार्टनर शिवशंकर सिंह है जो कुछ वर्षो पूर्व एक सरस्वती शिशु मंन्दिर में पढाते थे। तबसे इनको हम लोग आचार्य जी के सम्बोधन से पुकारते है। उनकी शादी १९९६ में हुई थी। पहले ये शादी के कट्टर विरोधी थें लेकिन बेचारे एक हंसीना के मकड़ जाल में ऐसे फंसे की मत पूछिए। चाय नास्ते के बाद मैने पूछा-''अरे आचार्यजी शादी के लगभग चार साल गुजर गये, कैसा अनुभव रहा।''
अरे छोड़ो भी यार। काहें की शादी, किसकी शादी....क्यों शादी की याद दिलाते हो''।

''नहीं आचार्य जी यह हम युवाओं के लिए एक रोचक विषय हैं। कुछ तो बताइए। वैसे तो आप शादी के कट्टर विरोधी थें। फिर ये सब कैसे कर डाले इतने कम समय में।"

''अरे यार क्या बताऊॅ, मैं उस मनहुस घड़ी को कोसता हूॅ जो मैं सभी लड़कियों से हंस-हंस कर बाते किया करता था। हमें क्या मालूम कि यह मेरे लिए...........।''

''क्यों क्या हुआ आपके साथ''
'मुझे दोस्तो ने लूटा, मै लुटा हूॅ दोस्ती में, ये अजीब हादसे है मेरे साथ जिंदगी के। दरअसल हमारे दोस्तों में एक लड़की संगीता थी जिसकी कर्मठता ने हमें अंधा बना दिया। मैं उससे हंस-हंस कर बाते किया करता था। वैसे भी मै सभी लड़कियों व लड़कों से हंस-हंस के बाते किया करता हूॅ ये तो तुम जानते ही हो। वह मेरा काम बड़े ही लगन से किया करती थी। धीरे-धीरे दोस्ती हो गयी। मैं तो इस दोस्ती को सामान्य मित्रता ही समझता था। मगर ...। एक दिन उनके पापाजी आए और हमारे बारे में पूछने लगें। मैं आराम से अपने शिक्षा व घर परिवार का व्योरा देता गया। घर का पता, पापाजी के ऑफिस का पता आदि लेकर चले गयें। लगभग दों-तीन महीने बाद मैं अपने गॉव गया तो पापा ने कहा- ''शिव क्या तुम संगीता को जानते हों।''

''जी पापाजी, वह मेरे साथ काम करती है व अच्छी लड़की है। क्यों क्या हुआ।''

''बस यू ही पूछ रहा था। दरअसल उनके पापाजी आये थे इधर किसी काम से। वही तुम दोनों के बारें बातें कर रहे थे।"

मै ठहरा सीधा-साधा बेवकूफ लड़का जिसको देखो पढा देता है। समझा क्या हो गया? धीरे-धीरे वो घर जाकर सारी बाते पक्की कर लिए। घर वाले समझे मै उससे प्यार करता हूॅ। मै प्यार-व्यार के चक्कर से दूर रहता हूॅ। जिस सक्स को खुद से प्यार न हो वो दूसरों से क्या प्यार करेगा।

लगभग एक महीने बाद वह मेरे ऑफिस मे कुछ काम से आयी थी। उसी समय पापाजी व मम्मीजी गांव से आये। पापाजी ने पूछा, तो मैं कहा- ये मिस संगीता सिंह वैदेही हैं, इन्हीं के पापाजी आपसे मिले थें। मैं चपरासी को लेकर पापा लोगों को कमरे पर पहूॅचाने की व्यवस्था करने चल गया। इस बीच पापा लोगो ने पता नहीं संगीता से क्या-क्या बाते की। ये तो मैं आज तक नही जानता। बस इतना जानता हूॅ कि ये ही घटना मेरी अंतिम स्वीकृति मान ली गयी। मैं तो निश्चिंत था और काम में जूटा हुआ था। इस बीच घर वालों से शादी की बाते होती पर मुझे शादी नाम से ही चिढ़ थी। मै तमाम बहाने बनाकर टालता रहा। जब करने का इरादा नही था तो पूछूॅ क्यों? कहॉ, कैसे, किससे हो रही है। धीरे-धीरे दो साल

गुजर गये, मुझे फीस जमा करने के लिए बारह हजार रूपयों की जरूरत थी। घर से पत्र आया कि आकर ले जाओ। मै गॉव गया पैसा लेने के लिए तो पता चला मेरी शादी तय हो गयी

पापा मम्मी ने कहा– ''जैसे तुम रहोगे वैसे बहू भी रह लेगी। मै बहू का खर्चा भी उठा लूंगा। मैं उसी दिन रात को वापस चला आया। कुछ खास लोगों को निमंत्रण दिया। सब जगह एक ही प्रश्न ''आपकी शादी हो रही है आई कैन्ट बिलीव''।

हॉ भाइयों, मेरी। मै अंदर से झल्लाकर कहता।''

है। कार्ड छप गये है। मात्र आठ दिन बाद तिलक और १२ दिन शादी के बचे है। मेरे पैर से जमीन खिसक गयी। गांव पर कई रिश्तेदार पहले से मुस्तैद थें। मै समझ नहीं पा रहा था कि अब करू तो क्या करूँ। मै कुछ बोलने का प्रयास किया तो यह कहके सबने चुप करा दिया कि अब तक तो बड़े कहते थे कि शादी नही करूंगा। जब हम लोग कहते थे कि कोई लड़की हो ता बताओं, हम लोग देख समझकर कर देंगें और अब........ .....।

मैं निरूत्तर हो गया। मैं जब भी कुछ कहना चाहा दबा दिया गया। मैं अकेला पड़ गया था। अपने जीवन में इतना अकेला पहली बार महसूस किया था। आगे-पीछे कोई नही। बस वक्त की नजाकत को देखकर चुप रह गया। मैंने एक शगूफा छोड़ा - ''मै किसी को कोई खर्चा-वर्चा नही दूँगा।''

पापा मम्मी ने कहा- ''जैसे तुम रहोगे वैसे बहू भी रह लेगी। मै बहू का खर्चा भी उठा लूंगा। मैं उसी दिन रात को वापस चला आया। कुछ खास लोगों को निमंत्रण दिया। सब जगह एक ही प्रश्न ''आपकी शादी हो रही है आई कैन्ट बिलीव''।

हॉ भाइयों, मेरी। मै अंदर से झल्लाकर कहता।''

चुपचाप घर वाले जहॉ कहते गये बैठ जाओं, खड़े हो जाओं मै करता गया एक आज्ञाकारी बालक की तरह और शादी हो गयी।

''अरे आचार्य जी शादी के बाद आपने क्या अनुभव प्राप्त किया।'' ''अरे यार, क्यों जले पर नमक छिड़क रहे हों।''

"जब से हुई है शादी आंसू बहा रहा हूँ आफत गले पड़ी है उसको निभा रहा हूँ, बारह बजे घड़ी सें मैडमजी सो रही है शाले-शालियों की फौज आकर मेरे गले पड़ी है।"

''आचार्यजी मै समझा नहीं यह तो कोई फिल्मी गाना है।''

''यह कोई फिल्मी गाना नहीं बल्कि मेरी हकीकत है। शादी के पन्द्रह बीस दिन बाद ही वह मेरे पास परीक्षा देने के लिए आ गयी। मगर क्या बताऊॅ महारानी जी को खाना बनाने भी नहीं आता पहले दिन ही खाने में नमक इतना अधिक डाल दी की मै बिना खाये बहाना बनाकर उठ गया। मैं सोचता उनके मम्मी पापा से कहूँ कि क्या सिखाया है अपनी बिटिया रानी को। किस जनम की हमसे दुश्मनी निकाल रहे हो, अपने बिटिया के बदनसीब पति के ससुर व सासजी। मगर फिर सोचता क्या फायदा अब भारतीय पति की परम्परा को निभाना हीं हैं। शिकायत करने से क्या मिलने को है। मैं रोज सुबह-शाम खाना पकाता। जब ऑफिस से लौटता हूँ तो वह किताब पढ़ती रहती है। एक गिलास पानी को भी नहीं पूछती। फ्रेश होकर अभी सांस भी नही लेता कि अजी सूनते है आप चाय बहुत अच्छी बनाते है बनाइए न प्लीज, सूबेरे से चाय नही पी हूँ। मै हारकर चाय बनाता। उन्हें भी लाकर देता। फिर शब्जी लाता, झाडू लगाता, पानी भरता, खाना पकाता। खाना खाने के बाद मैडमजी प्यार जताने लगती । कहती

''आप कितने अच्छे है आप जैसे पति को पाकर मै अपने को बहुत खुशनसीब समझती हूँ।"

बाल श्रमिक

आगे चलें बरात के, ले हण्डों का भार।
इनका बचपन भी इन्हें, लौटाओं अब यार।।
या तो आंसू पी रहे, या पीते है आग।
बच्चों के इस देश में, फूटे ऐसे भाग।।
भोले बचपन को न दो, कभी हथौड़ा भूल।
आंसू डूबी पलक पर, धरो हंसी के फूल।।
ले आंसू की पालकी, ये चलते हैं रोज।
ले आओ थोड़ी हंसी, अब इनको भी खोज।।
मौसम के कारण हुए, इतने बूढ़े पेड़।
धूप उम्र की कर गयी, बच्चे सभी अधेड़।।
भूख खारहे पी रहे, ये अपनी ही प्यास।
भोली सांसे ढो रही, जीवन के सन्त्रास।।
चिथड़े पहने काम पर, जाने को तैयार।
देर न करे ओ धीरुआ, पड़ जायेगी मार।।
कलम एक वरदान है, यही भट्टी अभिशाप।
पापा, भट्टी में हमें, नहीं जलाओं आप।।
प्लास्टिक लोहा कांच या, पत्थर लेकर हाथ।
गढ़े खिलौने बालपन, खेलें बूढ़े हाथ।।
खेलकूद चंचल हंसी, गुल्ली डण्डा प्यार।
बच्चे भूले देश के, परियों की संसार।।

डॉ० रामसनेही लाल शर्मा, फीरोजाबाद

मैं अन्दर से जल भुन जाता। कहता-"या खुदा ऐसी बीबी मेरे दुश्मन को भी न देना।"

सुबह ड्यूटी जल्दी होने के कारण जल्दी उठना पड़ता। दो-चार दिन बिना खाना खाये आफिस गया। एक दो दिन होटल में खाने गया तो दोस्तों ने कहा- 'अरे शिव अब तो बीबी आ गई अब भी होटल में..........।' मरता क्या न करता। मैं सुबह पॉच बजे ही उठकर खाना बनाता। जब तक मैं कमरे पर रहता शायद ही कभी उठी हो। छुट्टी के दिन तो और आफत हो जाती। पूरे घर को फैला देखकर कुछ कहता तो मैडम कहती-

''क्या फायदा, फिर गंदा होगा। सबका घर गंदा होता है। बस कपड़े साफ होने चाहिए।''

गंदगी मुझसे देखी नहीं जाती। हारकर कमरों व कपड़ो की सफाई करता। तब तक शाले-शालियों की फौज आ जाती तो कुछ दोस्तों की। अपनी इज्जत अपने हाथ। चाय नाश्ता स्वयं कराता। दोस्तों से कहता-

'तबियत खराब है महारानी जी की इसलिए स्वयं सर्विस करनी पड़ रही है। किसी से कहते भी तो नहीं बनता अपने बीवी की दास्तान को। किससे कहूँ दर्द अपना, हर कोई बहरा यहां, बन्धू सब अपने फिकर में स्वार्थ का पहरा यहां। कहते हुए भी डर लगता है कि आज तक तो मै अपने दोस्तो, शादी शुदाओं की बीबियों का मजाक उड़ाया करता था। अब मैं ....। '

अगर कभी गांव जाने को कहता तो कहती जब आप चलोगें तो चलुगी। वैसे तो गांव जाने जल्दी नाम नहीं लेती। अगर जाती भी तो मेरे साथ ही गांव से चली आती। मैं कहता-अरे पापा-मम्मी है उनकी कुछ दिन सेवा करों यहॉ रहकर। तो कहती आप सेवा करों मैं क्यों करुँ। छोटी-२ बात पर मेरी बहनों से, भाई से लड़ बैठती। वैसे तो मेरी तरफ से पूरी छूट है कि मेरी आबरु बचा के जो जी में आये पहनों, व खाओं. लेकिन मेरे कपड़े पहनने से लेकर रहन सहन पर भी लगाम लगाती रहती। मैं कोई काम अपने मन से नहीं कर सकता। सभी कार्यों में हस्तक्षेप। जिस चीज का ए बी सी भी नहीं मालूम उसमें भी रुकावट। ऐसे नहीं ऐसे कीजिए। ए मत कीजिए वो मत कीजिए। उनके कारण मुझे अक्सर रिश्तेदारों व सगे सम्बंधियों के बीच जलील होना पड़ता। सब कहते की बीबी का गुलाम है। अब मैं क्या बताऊँ उन लोगो को कि या तो सरे आम अपनी इज्जत निलाम करुँ या . .....।

मै कहता .... हे कलियुंगी महारानी, महाकाली, महाचण्डी, हे पति प्रताड़न देवी गाड़ी चलाना सीख लो और हमें बक्स दो। पर कहती- ''आप हो न"

प्रत्येक छुट्टी में जब थोड़ा आराम करने की सोचता किसी दोस्त के घर जाने को तैयार होता तो उससे पहले ही वह मैके या अपनी किसी सहेली के यहॉ जाने का प्लान बना देती। मजबूरी यह की साथ जाएगी। अकेले नही। मै कहता .... हे कलियुंगी महारानी, महाकाली, महाचण्डी, हे पति प्रताड़न देवी गाड़ी चलाना सीख लो और हमें बक्स दो। पर कहती- ''आप हो न"

मै तो सोचता हूँ कि इससे आराम तो शादी के पहले ही था। सायंकाल सारे समान यथावत रक्खे हुए मिलते। छुट्टियों में मजे से मिटिंग व दोस्तो के बीच में कट जाता। खाना कभी होटल में कभी दोस्तों के यहां खा लेता। हफ्ते में एक आध दिन कमरे पर खाना पकाता। कोई कमरे पर आये तो चाय पिलाओ या मत पिलाओं कोई बात नहीं। अब तो खाने की दावत मांगतें है सभी दोस्त, भाभी के नाम पर। उन्हें क्या मालुम की भाभी जी को क्या। मरना तो मुझे पड़ता है। मै तो यार कहूँगा। शादी के जंजाल में कभी मत फॅसना वरना तुम्हें भी तुम्हारे दोस्त कहेंगे **बंदा गया काम से, बंदा गया काम से, बंदा गया काम से, बंदा गया काम से।**

+++++++++++

हिन्दी प्रेमी कुत्ता

विदेशी कार में लदा
एक देशी आदमी
अपने विदेशी नस्ल के कुत्ते से
विदेशी भाषा में बोला,
तो नमकहलाल
कुत्ते ने मुँह खोला-
"श्रीमान!"
कृपया अपने देश के साथ
वफादारी करें,
राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ
न गद्दारी करें!
मैंने आपके देश का नमक खाया है,
इसलिए अपनी विदेशी भाषा
को भुलाया है।
अब मुझे विदेशी भाषा कतई नहीं
सुहाती है,
कृपया मुझसे हिंदी में बोले
हिन्दी बोलने में आपको
क्यूं शर्म आती है....

हलीम आइना, सकतपुरा, कोटा

सफल व्यक्तित्व

जमशेदजी नसरवानजी टाटा

३ मार्च १८३६ को नवसारी, गुजरात में जन्में जमशेदजीनसरवानजी टाटा १८५३ में एल्फिस्टन इन्सिट्टयूशन, बम्बई में भर्ती हुए. १८५८ में 'ग्रीन स्कालर' (स्नातक) के रुप में उत्तीर्ण हुए. १८५६ में अपने पिता की फर्म 'नसरवानजी एण्ड कालियानदास' (जेनरल मर्चेन्ट) में शामिल हुए. १८६७ में मैंचेस्टर जाने पर जमशेदजी ने थामस कर्लाइल का यह सूत्र वाक्य सूना -'जो राष्ट्र लोहे पर नियन्त्रण कर लेता हैं वह शीघ्र ही स्वर्ण पर नियत्रंण पा लेता हैं.' १८६८ में अपने पिता के फर्म के प्रतिनिधि के रुप में सुदूर पूर्व एवं यूरोप में व्यापार के प्रारम्भिक उद्यमों का अनुभव प्राप्त करने के बाद जमशेदजी ने बम्बई में एक निजी व्यापार फर्म चालू किया. १८७४ में जमशेदजी ने बम्बई में दि सेन्ट्रल इन्डिया स्पिनिंग, वीभिग एण्ड मैनुफैक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड का प्रवर्तन किया. वे मध्य प्रान्त में प्रथम जाइंट स्टाक कंपनी के पुरोगामी संस्थापक थें. १८७७ में महारानी विक्टोरिया के भारत साम्राज्ञी घोषित किये जाने के अवसर पर १ जनवारी को इम्प्रेस मिल चालू किया. १८८५ में बम्बई में इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना के समय जमशेदजी उपस्थित थें. १८८६ में जमशेदजी ने बीमारा घमसी मिल को खरीदा और बाद में स्वदेशी (राष्ट्रीय) आन्दोलन के प्रारम्भ को चिन्हित करने के लिए मिल का नाम बदल कर स्वदेशी मिल रखा. आठ वर्षो के अन्दर स्वदेशी मिल के कपड़ों को भारत में सबसे अधिक कीमत मिलने लगी और विदेशों में भी मांग बढ़ने लगी. १८८७ में जे.एन. टाटा ने अपने व्यवसाय को कम्पनी में बदला और उसका नामकरण टाटा एण्ड सन्स किया और आर.डी.टाटा को साझेदारी दी गयी.

१८९२ में २५ लाख रू. की पूंजी से जे.एन.टाटा एंडोमेंट स्कीम चालू की. प्रथम जे.एन.टाटा स्कालर, फ्रेंनी के. आर.कामा. को चिकित्सा विज्ञान में उन्नत शिक्षा के लिए एडिनबरा भेजा गया. १९३८ में इस संस्था का नाम बदल कर जे.एन.टाटा एंडोमेंट फार दि हायर एजुकेशन ऑफ इंडिया रखा गया. १९०२ में जमशेदजी अमेरिका गए. बर्मिंघम अलाबामा में कोंकिंग प्रक्रियाओं का अध्ययन किया. दुनियां के सबसे बड़ें अयस्क बाजार क्वींसलैंड गए और श्रेष्ठ धातुकर्म परामर्शदाता जुलियन केन्नेडी से मुलाकात की. जिन्होंने भारत में री टाटा के प्रस्तावित इस्पात संयंत्र के लिए कन्सल्टिंग इंजीनियर के रूप में चार्ल्स पेज पेरिन को ले जाने की सिफारिश की. पेरिन भारत आने के लिए सहमत हुए. १९०३ में भारतीय होटलों का सरताज 'दि ताज' का बम्बई में उद्‌घाटन हुआ. वह बम्बई में बिजली से प्रकाशित पहला भवन था जिसमें आने वाले वर्षो में दुनियां के विभिन्न देशों से आए पर्यटकों को ठहरना था.

१९ मई १९०४ को जर्मनी में बैड नौहेम में जमशेदजी टाटा का निधन हो गया.

+++++++++++++++

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. फोटो अथवा कार्बन कापी स्वीकार्य नहीं हैं. प्रकाशन सामग्री पत्रिका के अनुकूल होनी चाहिए. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. एक बार में एक ही रचना भेजें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. अन्यथा अस्वीकृति के संदर्भ में वापसी संभव न होगी. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ३. पुराने सदस्य पत्र व्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें. ४. हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाऍ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी.

५. यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी. डी 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

५०० रूपये के नकली नोट को कैसे पहचानें?

भारतीय रिजर्व बैंक और केन्द्रीय फरेंसिक साइंस लैबरटरी ने पब्लिक की सुविधा की खातिर नकली नोट की पहचान के कुछ आसान सूत्र जारी किए हुए हैं। आइए देखते हैं कि जिस ५०० रूपये के नोट को लेकर कैशियर बिरादरी खासतौर पर सावधान रहती है, उसमें कौन से चिन्ह नकली की पहचान में मदद करते हैं। आप चाहें इसे काटकर अपने पास रख सकते हैं।

१.ब्रेल मार्क : सीधी साइड के बाएं कोने में अशोक पिलर के निशान के ठीक उपर, डिजाइन बैंड के बाएं मार्जिन पर आपको एक गोल कत्थई निशान मिलेगा। यह नेत्रहीनों की मदद के लिए अंकित किया गया ब्रेल मार्क है। (देखें इंडिकेटर १) असली नोट में उिजाइन बैंड की बाई मार्जिन लाइन गोल निशान को काटती हुई गुजरती हे। फरेंसिक एक्सपर्ट कहते हैं कि अगर यह गोल निशान मार्जिन लाइन से दूर है तो समझ लीजिए नोट नकली है।

२.सी थ्रू रजिस्टर : ब्रेल निशान के थोड़ा उपर डिजानर बैंड के बीचोंबीच एक फल है। (इंडिकेटर २) नोट के पीछे की साइड इस फूल के बिल्कुल पीछे भी एक फूल बना हुआ है। नोट को रोशनी कीतरफ करके देखेंगे तो आगे और पीछे के फूल एक-दूसरे को पूरी तरह कवर करेंगे। अगर नहीं तो असे नक्कालों की घटिया प्रिंटिंग का सबूत समझ लीजिए। तकनीकी भाषा में इस फूल को सी थ्रू रजिस्टर यानी आर-पार दिखाई देने वाला संकेतक कहा जाता हैं। २००५ में जारी नई सीरीज में आगे-पीछे मिलान करने पर इस फूल के बीच ५०० की संख्या उभरती है।

३. वॉटरमार्क : बाई ओर ही खाली सफेठ हिस्से में गांधी के चेहरे का वॉटरमार्क है, जो नोट को रोश्नी की तरफ लाने पर थोड़ी दूरी से देखने पर उभरता है। (इंडिकेटर ३) वाटरमार्क की नकल करना नक्कालों के लिए मुश्किल है। रंगीन फोटोस्टेट से भी वॉटरमार्क की नकल संभव नहीं। २००५ में जारी नई सीरीजमें इस सफेद वॉटरमार्क पैनल में गांधी के चेहरे के साथ ५०० की संख्या भी उभरती है।

४. फलॉरेसंट नंबर पैनल : वॉटरमार्क पैनल के ठीक नीचे नोट के नंबर वाला पैनल है। (इंडिकेटर ४) यह नंबर अल्ट्रावायलट रोशनी में चमकने वाली फलॉरेसंट स्याही से लिखा जाता है। इसी नंबर पैनल के ऑप्टिकल फाइबर भी छिपा होता है। यह पैनल ऐसा है जिसकी नकल बहुज ही मुश्किल है। एक्सपर्ट स्कैनर तले आते हीनंबर पैनल नकली की पोल फौरन ही खोल देता है।

५. रंग बदलने वाली स्याही : नोट के बीचोबीच हरे चमकदार रंग में ५०० लिखा है। नोट को हिलाएंगे-डुलाएंगे तो यह रंगत हरी से नीली हो जाएगी। स्विटजरलैंड की सिकपा कंपनी के साथ भारी ने हरी से नीली होने वाली स्याही का करार किया है। नक्कालों की टक्साल के लिए इस फीचर की नकल भी बहुत मुश्किल होती है। रंग न बदले तो समझें नोट नकली है।

६. चमकीला सुरक्षा धागा : महात्मा गांधी के चेहने के सामने एक चांदी सी चमकीली रेखा नीचे से उपर तक जाती है। (इंडिकेटर ६) यहएक मेंटल कोटेड पॉलिस्टर धगा है, जिसमें बारीक माइक्रो प्रिंटिंग में अंग्रेजी में आरबीआई और हिंदी मे भारत लिखा होता है। साधारण तौर पर यह जाइन टूटी हुई नजर आती है जेकिन नोट को अठाकर रोशनी की तरफ करके देखने पर वह एक सीधी लाइन के रूप में उभरती है। अबर सीधी लाइन नहीं उभरती तो समझें नोट नकली है।

७.बारीक लिखावट : सीधी साइड पर गांधी जी के कान के पास बहुत महीन डिजाइन है। (इंडिकेटर ७) यह डिजाइन नहीं,माइक्रो प्रिंट है। लेंस से देखेंगे तो वहां नोट की कीमत बताने वाली बेहद नन्हीं इबारत मिलेगी, जो आमतौर पपर नकली नोट में साफ नहीं होती।

८. नोट की मोटाई : नोट का करारापन, चमक, अंगुठे और तर्जनी के बीच आने पर उसकी मोटाई का अहसास असली की निशानी है। (इंडिकेटर ८) नकली नोट आमतौर पर फूंक से उड़ने वाजा और साध ाारण्र पतले कागज की छुअन का अहसास देने वाला होता है। नकददी के लेन-देन के आदी जोग इसी आध ाार पर असली-नकली का फर्क बता देते हैं।

९. उभरी प्रिंटिंग : गांधीजी का चित्र, उसके नीचे आरबीआई की मुहर , ढाई और गवर्नर के दस्तखत उभरी हुई डपाई के साथ इंकित कए जाते हैं। (इंडिकेटर ९) इसको उंगली से महसुस किया जा सकता है। नक्काल इसका ध्यान नहीं रख पाते।

बिछुड़ल प्यार

✍अभय कुमार ओझा

कोशी महाविद्यालय में बड़हन हाता. ओह में आम, जामून, पीपर, सेमर आ अमलतास के अनेकों पेड़. बसंत के मौसम. मोंजर के गमक. कबो-कबों कोयल के कूंक. कुल्हि मिला के कहल जा सकत रहे कि प्रकृति अपना पूरा जवानी प रहे, अति सुहावन लागत रहे. महाविद्यालय के छात्र-छात्रा एह बगइचा में खाली समय बितावे लोग हॅसी-ठाठा करे लोग भा पढ़े लोग.

रवि एगो आम के पेड़ तर बइठल, प्रकृति के आनंद लेत, दूर एगो जामून के पेड़ तर बइठल अपना सहपाठिनी नंदिनी प प्यार भरल निगाह डलले रहले. "रवि...ए रवि. .... सुनत नइख?" मिसिरी अस मीठ बोली रवि के कान में पड़ल. उनकर ध्यान भंग भइल. ऊ पीछे मुड़ के तकले त नूतन मुसुकात लउकली.

"का ह?" रवि नूतन के घूरत पूछले.

"प्लीज रवि, काल्हु फिजिक्स के नोट्स लेले अइह." नूतन आग्रह कइली.

"सब मजा किरकिरा कके नोट्स मांगत बाड़ू? ठीक बा, ले आ देबि. अब जा, आपन काम कर."

रवि के आवाज में खीस साफ झलकत रहें.

दोसरका दिने रवि फिजिक्स के नोट्स ले आ के नूतन के दे दिहले. नूतन धन्यबाद देत कहली-"बहुत-बहुत धन्यबाद हमार प्यारे रवि."

"अब जा, हमरा के अकेले रहे द. हमार माथा जनि खा." रवि गुर्रा के कहलन.

नूतन चल गइली आ दूर एगो आम के फेड़ तर बइठि के रवि के निहारे लगली. फेरु ऊ मने मन बुदबुदाये लगली-"हाय रवित्र.... तू कतना निष्ठुर बाड़. हम तोहरा के कतना चाहेनी, तूँ का जान? हम तोहरा प जान निछावर करेनी आ तू डॉटत रहेल. काश! हम अपना मन के बात तोहरा से कहि पइती. हिम्मत नइखे पड़त. लड़की के हई नू? कमजोर दिल बा हमार. लइका रहितिं त कहिं दिहितिं. भा तोहरे अस दुतकार दिहितिं. बाकी, अब हमरा हिम्मत करे के पड़ी. तोहरा से दिल के बात कहि नइखी सकत, बाकी लिख त सकत बानी..... हॅ लिखिए के देबि."

> रवि एगो आम के पेड़ तर बइठल, प्रकृति के आनंद लेत, दूर एगो जामून के पेड़ तर बइठल अपना सहपाठिनी नंदिनी प प्यार भरल निगाह डलले रहले. "रवि...ए रवि..सुनत नइख?" मिसिरी अस मीठ बोली रवि के कान में पड़ल.

फिजिक्स के नोट्स लौटावे के बेरि नूतन एगो छोट पूर्जा ओह में राखि दिहली. ओह पूर्जा प लिखल रहे-"रवि! नूतन तोहरा से प्यार करेली."

समय के दौरान रवि के नजर ओर पूर्जा प पड़ल. ऊं गरज उठले-"इ का बकवास ह?" ऊ ओह पूर्जा के फाड़ के फेंक दिहले.

एक दिन नंदिनी औही बगइचा के एगो फेड़ तर बइठल रहली. रवि एगो दोसरा फेंड तर बइठल उनुका प टकटकी लगवले सोंचत रहले-"नंदिनी! कइसे कहीं कि हम तोहरा से प्यार करेनी? तू का कबहू? का सोंचबू हमरा बारे में? कहीं बूरा ना मान जा. खैर, कुछुओ होखे. हम एक बेरि कहि के देखबि जरुर."

रवि उठि के धीरे-धीरे नंदिनी के ओर बढ़े लगले. अचानक नारी-कण्ठ के मधुर बोली सुनाइल-"रवि... ए रवि. ओने कहॉ चलल? तनी रुकत. ...."

रवि पीछे मुड़ के देखले त नूतन के मुसुकात पवले. रवि अनसात पूछले-"अब का ह? काहें हमरा के तंग कइले बाड़ू?"

"रवि, हम तोहरा से कुछ कहल चाहत बानी."

"बोल, का कहल चाहत बाड़ू.?" रवि पूछले.

"रवि हम... हम तोहरा से प्यार करेनी.... तोहरा से... .. तोहरा से विवाह कइल चाहत बानी." नूतन कॉपत कहली.

"नूतन हम तोहरा के एगो सहपाठिनी से अधिका कुछ ना समझी ला. तोहरा एह तरह के बात कइल शोभा नइखे देत. कृपा क के खुद के अंधेरा में मत राख. जा, कवनो दोसर लइका खोजि ल, जे तोहरा से प्यार करे आ तोहरा संगे बियाहों करे के राजी होखे. फेरु कबो एह तरह के बात हमरा से जनि कहिह."

रवि बड़ा रुखाई से जवाब दिहले. नूतन के ऑखि पनिया गइली स आ ऊ रोअन उहा से चल गइली. नंदिनी एह घटना के देखि लेले रहली.

रवि आ नंदिनी के बाबूजी एके विभाग में काम करत रहे लोग. एके विरादरी के आ एके जिला के रहनिहार रहे लोग. दूनो जाना में बड़ा प्रेम रहे. एह नाते दूनो जाना के परिवार एक-दोसरा के घरे आवत-जात रहे.

एक दिन रवि के घरे सत्यनारायण भगवान के कथा के आयोजन रहे.

नंदिनीयो अपना परिवार के संगे आइल रहली. मौका पाके रवि नंदिनी से अपना मन के बात कहि दिहले-"नंदिनी! बहुत दिन से एगो बात कहल चाहत रहनी ह. मौका ना मिलत रहे. आजु मौका मिलल बा.... पता ना तूँ बूरा मनबू कि भला..... कहीं त कइसे कहिं......"

"बात का बा? कहब कि असहीं भूमिका बान्हत रहब?" नंदिनी अधीर होतत पूछली.

"बात इ बा नंदिनी कि हम तोहरा से प्यार करेनी आ एह प्यार के बियाह के रुप में दिहल चाहत बानी." रवि के बोली में धैर्य रहें.

"का बकत बाड़ रवि? नूतन तोहरा के अतना चाहत बाड़ी आ तूँ उनुका ओरि देखबो ना कर. भगवान के इ कइसन लीला बा कि नूतन तोहरा से प्यार करेली आ तूँ हमरा से. तनी उनुका हृदय में झॅांकि के त देख-कतना जगह बा तोहरा खातिर? उनुका में आखिर दोष का बा? हमरा से त अच्छे नु बाड़ी" नंदिनी रवि के समुझावत कहली.

"ना नंदिनी ना. अइसन जनि कह. हम खाली तोहरे से प्यार करीले. नूतन के तोहरा गोड़ के धूरो ना बुझी. तूँ हमरा बड़ा नीक लागेलू. तोहरा बिनु हमरा सब कुछ सूना-सूना लागेला. कवनो काम में मन ना लागे. तूँ खाली एक बार कहि द कि तूहूँ हमरा से प्यार करेलू." रवि प्रेम निवेदन कइले.

"तू मरद लोग बड़ा छली होल. आजु प्रेम देखइब, काल्हु हमरा से मन भर जाई त दूध में गिरल माछी अस निकाल के फेंक देब. हम तोहरा बात में फॅसे वाली नइखी. जा, कवनो ऐनक में आपन मुॅह दखि ल, तब अइह प्यार करे. बड़ा आइल बाड़ प्यार करे वाला." नंदिनी रुखाई से कहली.

रवि के दिल प जोड़दार चोट लागल. बुझाइल कि नंदिनी पिघलल सीसा डाल दिहली उनुका कान में. मार दिहली तमाचा उनुका गाल प. नंदिनी से उनुका अइसन उमेदि ना रहे.

उनुकर दिल टूटल सीसा अस बिखर गइल. खीसी भूत हो गइले ऊ आ एगौ ऐनक ले आ के नंदिनी के ध रावत कहले-"तोहरा अपना सूरत प बहुत गुमान बा नू? ल हई ऐनक आ देखि ल आपन चेहरा, कइसन बनरी अस लागत बाड."

एह घटना के बाद से रवि नंदिनी से बोलल छोड़ि दिहले, बाकी मने मन उनुका बारे में सोचत रहले. उनुका से प्यार से करत रहले. उनुका के देखे खातिर तरसत रहले. लुकछिप के उनुका के देखतो रहले आ अपना ऑखि के पियास बुझावत रहले. बाकी नंदिनी के कभी इ ना बुझाए देत रहले कि अबहियों उनुका खातिर दिल में कहीं कवनो जगह बा.

एने ओह घटना से नंदिनी के बहुत पछतावा भइल. ऊ अपने आप के कोसे लगली-"काहें हमरा मुॅह से अइसन बोली निकलल? चुपचाप उनुकर बात त सून सकत रहनी हा. हम पापिन हई. उनुकर दिल तूर दिहनी. हमरा अतना कठोर ना भइल चाहत रहे. उनुका से मिलके माफी मॉगब तबे हमरा आत्मा के शांति मिली." धीरे-धीरे नंदिनी के मन में रवि खातिर प्रेम उमड़े लागत. ऊ रवि से बोले के प्रयास करे लगली, बाकी रवि मुॅह मोड़ लेत रहले.

समय अपना चाल से चलत रहेला. ऊ केहू के इंतिजार ना करे. निश्चित समय प परीक्षा भइल आ परिणाम निकलल. नूतन, नंदिनी आ रवि स्नातक भ गइल लोग. समय आगे बढ़ल आ बारी-बारी से एह लोग के बियाही हो गइल. नूतन आ नंदिनी अपना-अपना ससुराल चल गइल लोग. रवि अपना परिवार में फंस गइले. समय के झोंका नूत आ नंदिनी संगे घटल घटना के उनुका स्मृति पट से लगभग उड़िया देले रहे. नूतन से त भेंट ना हो पावत रहे बाकी नंदिनी जब जब नइहर आ अपना ससुराल

ग़ज़ल

✍पं0 मुकेश चतुर्वेदी 'समीर',
सागर, म.प्र.

लफ़्जों के दरीचों में हर रात बितायी है
जैसे भी बनी हमने ये रस्म निभायी है
गहराई समन्दर सी सीने में रखी हमने
अपनों ने मगर हमसे हर बात छुपायी हैं
मिट्टी के खिलौनें से अन्जान यूं ही रहिये
इस दौर के इंसा से ये जात परायी है
मुमकिन है कि मिल जाये वुफा किस्सों में, कहॉनी में
ताउम्र नहीं भूलें वो घात ही पायी है
गिरकर के कोई संभले, गुंजाइश नहीं ऐसी
हालात ने पांवो में, क्या लात फॅसायी हैं

के कहानी कहत रही. रवियों उनुका से प्रेम से मिलत रहले आ चाव से उनुकर बात सुनत रहले आ आपन कहत रहले. पुरान मन मोटाव अब इतिहास हो गइल रहे.

काल्हुए नंदिनी नइहर अइली आ आजु चल इली रवि से भेंट करें. रवि के पत्नी दू दिन पहिलहीं अपना नइहर गइल रहली अपना भाई के राखी बांधे. कुछ देर एने-आने के बात बतियवला के बाद रवि नंदिनी से कहले-"नंदिनी! चाय बनावे वाली त अपना नइहर गइल बिया....."

"कवनो बात ना, हम बना देत बानी चाय."

नंदिनी बात काटत कहली आ चौका में ढूंक के चाय बनावे लगली. चाय बनावत घरी कहली-"तू न अपना मेहरारु के हाथ के चाय पीये के आदी हो गइल बाड़. पता ना, हमरा हाथ के चाय तोहरा कइसन लागी?" रवि के मरल घाव जइसे नंदिनी खोदि देले होखसु. नूतन आ नंदिनी संगे बीतल घटना उनुका स्मृति पटल पट प नाचे लागल. ऊ नंदिनी के सलाह देबे लगले-"नंदिनी, तू दोसरा के बड़ाई कइल छोड़ि द. अपने आप के देख कि तूँ कइसन बाडू, ध्यान से देखबू त पता ली कि तोहरा अस केहू नइखे."

चाय बनि गइल. दूनो जाना बगल के कमरा में बइठि के चाय के चुस्की ले बे लागल लोग. रवि नंदिनी के ऑखि में आवत जात भाव पढ़त रहले. उनुका बुझाइल कि नंदिनी कुछ कहल चाहत बाड़ी. ऊ चुप्पी तुड़त पूछले-"का बात बा नंदिनी, उदास बुझात बाडू. कुछ कहल चाहत बाडू का, हमरा से कहे लाएक बात होखे त कहि सकेलू.

"ह रवि, आजुए ना सात साल पहिलहीं तोहरा से कहल चाहत रहनी, बाकी तूं मौका ना देत रहल. ना कहि पड़बि त मरियों के चैन ना मिली." नंदिनी कहली.

"त कह, अइसन कवन बात बा?" रवि उत्सुकता से पूछले.

"आजु से लगभग सात बरिस पहिले के बात ह. तोहरा घरे सत्यनारायण भगवान के पूजा रहे. हमहूँ इहवाँ आइल रहीं. तूं हमरा से प्रेम निवेदन कइले रहल. हम मजाक में तोहरा से ऐनक में मुँह देखे के कहि देले रहनी. तू बूरा मान गइल रहल आ खीसी हमरा के ऐनक देखावत बनरी कहले रहल. ओह दिन से तू हमरा से बाललो छोड़ि देले रहल. विश्वास कर रवि, हमरा तोहरा से बहुत प्यार बा. ऐनक में मुंह देखे के बात त तोहरा के कुढावे खातिर कहले रहनी. फेरु हम तोहरा से बोले के बहुत प्रयास कइले रहनी. तोहरा से अपना गल्ती खातिर माफी मांगल चाहत रहनी, लेकिन तू हमरा प अपना खिसियाइल रहल कि हमरा के देखलो ना दहल. सॉच पूछ त रवि, ओह दिन हमरा अपने आप प बहुत खीस बरल रहे! हमरा अपना गलती के एहसास भइल रहे. हम अपने आपके कई दिन ले कोसत रहनी. भगवान के शायद इहे मन रहे हमार प्यार बिछुड़ जाय. आजु से चार साल पहिले जब हमार वियाह तय होत रह त हमरा के कइ एक गो फोटो देखावल गइल. हमरा के अपना पसंद के जीवन-साथी चुने के छूट दिल गइल. ओह घरी तू हमरा बहुत याद अइल. हम एही इंतिजार में रहि गइनी कि तूँ हमरा से एक बार फेरु कहि द हमरा से प्यार करेल. आ बियाह कइल चाहत बाड़. हम तोहरा से एह बारे में बात कइल चाहत रहनी, बाकी तोहरा त हमरा से घृणा भ गइल रहे. हमरा के देखते हट जात रह."

"बात इ बा नंदिनी कि हम तोहरा से प्यार करेनी आ एह प्यार के बियाह के रुप में दिहल चाहत बानी." रवि के बोली में धैर्य रहें. "एह से कि प्यार दबाब से ना पावल जाला. हम चाहत रहीं कि पहिले तोहरा से मॉफी मांग ली तब कहीं कि तोहरा से बियाह कइल चाहत बानी. बाबूजी से कहला प बियाह त हो जाइत बाकी प्यार कहाँ से मिलित?

इ कहि के नंदिनी एगो लंगा सॉस खिचली. उनुकर ऑखि पनिया गइल रहीं स. "खैर, भूल जा नंदिनी पुरान बात के. जे होनी रहे, से हो गइल. पुरान घाव खोदबू त दर्द अवरु बढ़ी. " रवि बात टालत कहले. "ना रवि ना.... हमरा के जीयत देखल चाहत बाड़ त तनी अवरु दर्द सहि ल. हम मन में पहिले तोहरा के बसवले रहनी. लड़की आपन पहिला प्यार कबो ना भुलाली स. पाछे मजबूरी में सामाजिक बंधन में जकड़ गइनी. हमरा खाली दू बात के अफसोस बा. पहिला इ कि हमरा तोहरा से ओतना कड़ा मजाक ना कइल चाहत रहे आ दोसरका इ कि तूँ हमरा से नफरत ना करित त हम कहि पड़ती कि हम तोहरा से प्यार करेनी आ तोहरे से बियाह कइल चाहत बानी. हमनी के बियाह में कबनों बाधा ना रहे काहें कि हमनी के एके जाति के हईंजा. हमनी के परिवार में अच्छा संबंध बा. हमार बाबूजी हमरा से अपना पसंद के जीवन साथी चुने के कहले रहले. काश! हम अपना बाबूजी से तोहरा

बारे में कहि पड़ती." नंदिनी लंबा सांस छोड़त कहली.
"त काहें ना कहि दिहले रहलू?" रवि पूछले!"
"एह से कि प्यार दबाब से ना पावल जाला. हम चाहत रहीं कि पहिले तोहरा से मॉफी मांग ली तब कहीं कि तोहरा से बियाह कइल चाहत बानी. बाबूजी से कहला प बियाह त हो जाइत बाकी प्यार कहॉ से मिलित? नूतन से तोहार नफरत देख लेले रहनी. तूँ हमरों से दूर रहे लागल रहल. एह से हमरा तोहरा से डर डर लागे लागत रहे आ हम अपना बाबूजी से तोहरा बारे में ना कहि पवले रहनी. आजु हम तोहरा से अपना ओह गलती खातिर मॉफी मॉगत बानी जवना से तोहरा दिल प ठेस लागल रहे आ हम जानल चाहत बानी कि का तूँ सॉचों हमरा से प्यार करत रह?" नंदिनी एगो लंबा सांस खिंचत पूछली.
"आ इहे सवाल हम तोहरा से पूछी त....?" रवि जवाब के बदला सवाले दाग दिहले.
".... त हमार जबाब होई हॅ आ आजुओ हम तोहरा से ओतने प्यार करेनी जेतना कुॅवार रहनी त करत रहीं. हमरा मन में खाली तूं ही बाड़ रवि.... खाली तू हीं...... बियाह त सामाजिक बंधन है जवना के जीवन भर ढोये के बा." नंदिनी भावना में बहे लगली.
".....लेकिन अब एह नाटक से का फायदा? अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गइल खेत. अब त तोहार आ हमार दूनों आदमी के बियाह हो गइल बा." रवि कहले.
"प्यार के नाटक जनि कह रवि. प्यार पवित्र होला. हमरा नजर में प्यार के जगह बहुत ऊँचा होला. बियाह त ओकरा बाद के बात ह. बियाह त सबके होला लेकिन प्यार का सबके मिल पावेला? हमार बियाह त हो गइल, बाकी प्यार कहॉ मिलल? ऊँ त बिछुड़ गइल बा. आजु हम तोहरा से प्रार्थना करत बानी कि एक बेरि कहि द कि तूँ हमरा से प्यार करत रहल आ अबो हमरा खातिर तोहरा दिल में जगह बा. हमार बिछुड़ल प्यार त मिल जाई.
"हँ नंदिनी, हम तोहरा से प्यार करत रहनी आ अबो तू हमरा दिल में बसल बाडू." रवि कहले. नंदिनी के ऑखि में आंसू छलक गइल. रवि उनुकर ऑसू पोछत कहले-"चुप रह नंदिनी. रोये से अब का फायदा? भगवान के इहे मंजूर रहे. हमनी के भगवान से अब इहे प्रार्थना करे के चाहीं कि तूँ अपना परिवार से खुश रह आ हम अपना परिवार से."
"रोअत नइखी रवि. इ त खुशी के ऑसू ह. बरिसन बाद आजु हमार बिछुड़ल प्यार मिल गइल बा. अब हम चैन से मरि सकबि. अच्छा रवि अब जाये के अनुमति द."
"अतना जल्दी का बा? बइठ कुछ देर, तब जइह." रवि निहोरा कइले.
"घरे जाके मल भर रोइबि. दिल के दर्द रोअले से कम होला."
नंदिनी कहली.
"त एहिजे रो ल. हम दोसरा कमरा में चलि जात बानी." इ कहि के रवि दोसरा कमरा में चलि गइले आ नंदिनी कुहुके लगी. उनुकर कुँहुँकल सुनि के रवियों के ऑखि पनिया गइली स.

सहा. न्यायालय, खगड़िया, बिहार-८५१२०४

शून्य की प्राप्ति

जो सत्य मैंने पाया तुम पा नहीं सकते
जो खोया हमने तुम खो नहीं सकते।
जीवन-संबल खोया, विश्वास खोया
भूमि खिसक जाने से संतुलन खोया।
लाखों में कोई एक यू आचार खोती
चलन जब बपचन से गिरी हुई होती।
भाग्यवान है वे जो सहलेते चुपके
भावुक थे हम भावना को सह न सके।
जीना निस्सार था, अपना नहीं कोई
आत्मा एकाकी तब फूट फूट कर रोई।
सत्य जाना तब अकेलेपन का
शून्य है सब सार यह जीवन का।

प्रणय गीत

७० का वृद्ध या १७ का छोरां
सुहाये प्रणय गीत, न रहे कोरा।
नस-नस में बहती रस धारा
रस जीवन का जीवन प्यारा।
गीत रसीले हर कोई पाले
पेज पर पेज करते काले।
कोरी कविता लगे न प्यारी
गंध प्रणय की ज्यों फुलवारी।
छछोरे गीतकार बने प्यारे
रचे गीत चटखोले, न्यारे।

✍ रामकिशोर
संपादक, स्नेह भेंट मा.नागपुर

निःशुल्क भेंट

वयोवृद्ध हिन्दी कवि 'भारत भाषा भूषण प्रो0 महेन्द्र जोशी की बहुप्रशंसित पुस्तिका 'भगवद् दर्शन' पद्यानुवाद गीता अ011, श्रद्धावान व्यक्ति मात्र एक पोस्टकार्ड लिख कर मंगवा सकते हैं.
लिखें: प्रबंधक,
दिव्य प्रकाशन, ३० ए, गोपाल नगर, अमृतसर-१४३००१

केन्द्र/राज्य सरकारें साहित्यिक पत्रिकाओं को संरक्षण दें: रत्नाकर पांडेय

नई दिल्ली. "साहित्यिक पत्रिकाएं देश व समाज के स्वस्थ विकास की रीढ़ है. इनके संपादक सच्चे देशभक्त हैं जो साहित्य और विचारों का प्रचार-प्रसार करते हैं. अतः ऐसे श्रमजीवी पत्रकारों को केन्द्र व राज्य सरकारों को विज्ञापन, पत्रिकाओं की खरीद, संपादकों को राज्यसभा व विधान परिषदों में ससम्मान स्थान देने के साथ ही उन्हें श्रेष्ठ पत्रकार की राष्ट्रीय मान्यता, निशुल्क चिकित्सा, आवास व पेंशन जैसी सुविधांए दी जानी चाहिए."

ये विचार हैं अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रिका संपादक संघ के संरक्षक, सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, साहित्यकार और पूर्व सांसद डॉ. रत्नाकर पांडेय के, जो उन्होंने केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मंत्री श्री प्रियरंजन दास मुंशी, डीएवीपी के महानिदेशक, पी.आई.बी के निदेशक सहित सभी प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों तथा मुख्य सचिवों और राज्य सूचना निदेशको को भेजे गए पत्र में व्यक्त किए हैं.

डॉ. रत्नाकर पांडेय ने अपने पत्र में देश के समस्त साहित्यिक पत्रिकाओं के पूर्णकालिक श्रमजीवी पत्रकारों को उपरोक्त सभी सुविधांए प्राथमिकता के आधार पर देने की मांग की है. उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रिका संघ के राष्ट्रीय संयोजक उमाशंकर मिश्र के प्रयासों से विगत कई वर्षो से १ जून का दिन 'साहित्यिक पत्रकारिता दिवस' के रुप में मनाया जाता है जिसमें साहित्यिक पत्रकारिता की दशा व दिशा के साथ ही इस क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयास किए गये हैं. इसी वर्ष १ जून को नई दिल्ली स्थित साहित्य अकादमी सभागार में संपन्न हुए साहित्यिक पत्रकारिता दिवस समारोह में उपरोक्त बिंदुओं पर आधारित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था. साथ ही इन प्रस्तावों में उल्लिखित मांगो को केन्द्र व राज्य सरकारें तक प्रभावशाली ढंग से पहुंचाने के लिए संघ के सरंक्षक डॉ. रत्नाकर पांडेय से पहल करने का अनुरोध किया गया था. श्री पांडेय जी ने इसे सहर्ष स्वीकार करते हुए साहित्यिक पत्रकारिता के हित संरक्षण में अपना सभी प्रकार का सहयोग प्रदान करने का जो ठोस आश्वासन दिया था, ये पत्र उसी संदर्भ में भेजे गये हैं.

दसवें अ.भा.अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार घोषित

सांगर. राष्ट्रीय ख्याति के दसवें अ.भा.अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों की घोषणा दिव्य पुरस्कारों के संयोजक श्री जगदीश किंजल्क ने एक पत्रकार वार्ता में की. कुल प्राप्त १२३ पुस्तकें में से निर्णायकों मंडल के श्री के.बी.शर्मा, प्रो.कान्ति कुमार जैन, डॉ.आर.डी.मिश्र, डॉ.हरिशरण त्रिपाठी, डॉ. आनन्द त्रिपाठी एवं कवयित्री श्री विजयलक्ष्मी विभा ने पुस्तकों का चयन किया. जिसमें भोपाल की कथाकार श्रीमती उर्मिला शिरीष को उनेक कथा संग्रह 'निर्वासन' के लिए पॉच रुपये का, इंदौर की कवयित्रि श्रीमती रश्मि रमानी को उनके 'बीते हुए दिन' के लिए इक्कीस सौ रुपये का और दिल्ली के श्री पवन चौधरी 'मनमौजी' को 'छोटे हाथ बड़े हाथ' के लिए इक्कीस सौ रुपये का और चन्द्रपुर की डॉ. बानो सरताज को 'तीस एकांकी नाटक' के लिए ग्यारह सौ रुपये का प्रतिष्ठापूर्ण दिव्य पुरस्कार दिया जाएगा. इसके अलावा चौबीस रचनाकारों को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिए अम्बिका प्रसाद दिव्य रजन अलंकरण प्रदान किए जाएगें. ये रचनाकार है-कश्मीरी देवी-रोहतक,ओमप्रकाश अवस्थी-बहराइच, राजीव रंजन उपाध्याय-फैजाबाद, पुष्पा रघु, मीरा शलभ-गाजियाबाद, देवेन्द्र कुमार मिश्रा, कौशल किशोर श्रीवास्तव-छिन्दवाड़ा, निर्मल चन्द्र निर्मल-सागर, कृष्णगोपालमिश्र-होशंगाबाद, सरोजनी कुल श्रेष्ठ-नोएडा, अशोक मनवानी- भोपाल, महेशचन्द्र द्विवेदी-लखनऊ, प्रभा माथुर-पूना, पुष्पारानी गर्ग-इंदौर, वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल, सुधेश, सुंदरलाल कथूरिया-दिल्ली, विनय कुमार पाठक-विलासपुर, सुधा गोस्वामी-जयपुर,महेश सक्सेना, सुलभा मकोड़े-भोपाल, सभाजीत मिश्र-मुंबई, बिलास बिहारी-पटना और गोविन्द पाल-भिलाई. पत्रकार वार्ता में प्रो. कान्ति कुमार जैन, डॉ.आर.डी. मिश्र, आयकर अ० आयुक्त श्री ए.के.बार, एस.बी.आई.के-श्री सुभाष गोयल, श्री राजेन्द्र नागर, श्रीमती जयंती खरे, श्रीमती राजो किजल्क, श्री सुन्दरम् एवं श्री अशुल खरे भी थे. २००७ दिव्य जी का जन्म शताब्दी वर्ष है. इस वर्ष इस समारोह को राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जायेगा.

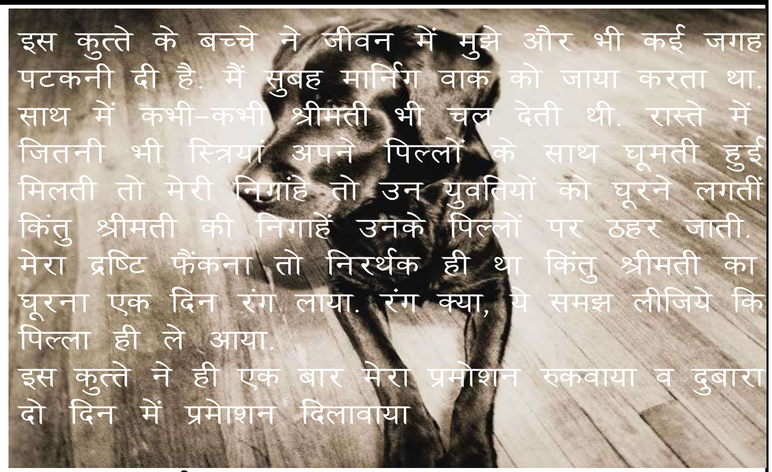

स्वान और इंसान

✍ रामसहाय वर्मा

स्साला! इंसान कहीं का.... चौकिये नहीं, इस गाली को प्रयोग अब कुत्ते इंसानों के लिए करने लगे है. सक्षम एवं समर्थ इंसान 'स्साला कुत्ता कहीं का....' नामक गाली काफी समय से उपयोग करते चले आ रहे हैं. इस गाली को सुन-सुन कुत्ते काफी हैरान व परेशान थे. समय के परिर्वतन के साथ जब कुत्तों को भी मौका मिला एवं उनका अहं जाग्रत हुआ तो उन्होंने भी इंसान से पुराना हिसाब चुकता करने की ठान ली है.

कुत्ता भी अब कोई साधारण अथवा अवांछित प्राणी नहीं रहा है. घर के अंदर अथवा घर के बाहर गरीब की झोपड़ी में अथवा अमीर की कोठी में, सुंदर हसीनाओं की गोदी में अथवा बूढ़े खूसट के हाथो में, राष्ट्रीय राजमार्ग पर अथवा गांव की गली में, खेतों में अथवा खलिहानों में, इंडिया में अथवा अमेरिका में आप हर जगह इस कुत्ता नामक प्राणी को मटकते, थिरकते एवं फुदकते देख सकते हैं. कुदरत का यह अनोखा अजूबा आपको समान स्वाभावों, समान आदतों एवं समान व्यवहारों में दुनिया के हर कोने में द्रष्टिगोचर हो सकता है. इंसानों से बेहतर इसमें एक गुण यह भी है कि यह तो हसीनाओं की गोदी में इतराता है और न गरीब की झोपड़ी में रह कर कोई गिला शिकवा करता है. मांसाहारी होते हुए भी उसे सूखी रोटी का टुकड़ा खाने में भी कोई हिचक नहीं होती है.

कई मामला में तो वह इंसानो से दो कदम आगे ही है. संतोष व धैर्य का भंडारा जितना कुत्ता के पास रहता है उतना इंसान के पास कदापि नहीं रहता है. काम क्रोध ा, मद एवं लोभ के क्षेत्र में उसने इंसान को हमेशा धूल चटाई हैं. स्वामिभक्ति, वफादारी एवं विश्वसनीयता के मामले में उसने इंसान को लगातार पटकनी दी है. इंसान की तरह कुत्ता न तो लालची होता है और न खुदगर्ज. जिस थाली में खाता है इसांन की तरह उस थाली में वह कभी छेद नहीं करता है. बिन पेंदी का लोटा और चिकने घड़े के गुण उसमें लेशमात्र भी नहीं है. जिसकी खाता है उसकी वह बजाता जरूर हैं. भूखा होने पर भी उसका ईमान कभी विचलित नहीं होता. विडंबना यह है कि इतने गुणों से परिपूर्ण होने के बावजूद इंसान ने उसे हमेशा कमतर माना है.

कई इंसानों की तरह मुझ में भी यह कमजोरी है कि मेरी जन्म पत्री के गुण कुत्ते की जन्मपत्री के गुणों से बिल्कुल भी मेल नही खाते. सुंदर यौवनाओं की गोद में जम कर उनके सौंदर्य एवं सानिध्य का लुत्फ उठाते हुए जब मैं कुत्ता को देखता हूँ तो ईर्ष्यावश मैं जल भुन जाता हूँ. मैं आह भर कर मन ही मन कहने लगता हूं कि यह कुत्ता नामक प्राणी कितना भाग्यशाली है. मेरे जैसे खूसट जिन बालाओं को ढ़ंग से घूर भी नहीं सकते उन बालाओं के साथ प्रेमलीला की प्रथम पायदान कुत्ता नामक जीव निर्वाध एवं सिंकोच पार कर लेता है. उसकी ऐसी मौजमस्ती देख कर मेरे मुख से अनायास ही निकल जाता है कि काश! मैं भी एक कुत्ता होता. कतिपय इंसान दूसरे इंसानों के बच्चों को यह सोच कर गोद लेने में तकल्लुफ व संकोच महसूस करते हैं कि पता नहीं इसकी जाति क्या होगी? इसका धर्म क्या होगा? मां-बाप कौन होंगे? लेकिन कुत्ता के बच्चे को गोद लेने में ये प्रश्न कभी भी आड़े नहीं आते हैं. है न कुत्ता का बड़प्पन? है न कुत्ता का बड़प्पन? है न इंसानियत पर स्वानियत की विजय? सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि इंसान का बच्चा अपने पालक के साथ कभी भी गद्दारी, मक्कारी एवं नमक हरामी कर सकता है किंतु कुत्ते का बच्चा ऐसा कभी नहीं करता है. इन गुणों के अलावा कुत्ता में अन्य गुण भी हैं. वह बिछुड़ों को मिलाता है, चोर लुटेरे व कातिलों को ढूढ निकालता है एवं खोई वस्तु भी वापस दिला सकता है. यदि आप सरकारी नौकर है तो कुत्ते के माध्यम से आप को पदोन्नति भी मिल सकती है. नौकरी और कुत्ते के संबंधो से शायद आप सहमत नहीं होगें किंतु मेरे साथ जो घटना घटी उसको सुन कर आप यह मानने पर मजबूर हो जायेंगे कि वास्तव में कुत्ता एक अधिकारी औरत मातहल के मध्य महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. कुछ वर्ष पूर्व मैं भी एक सरकारी मुलाजिम था. जिला मुख्यालय से मेरे बॉस जब मेरे कार्यालय के निरीक्षण के लिए पधारे तो

उनके साथ उनकी मैडम भी थी. मैडम का यह हाल था कि वे अपने पति को एक बार भले ही उपेक्षित कर दें किंतु वे अपने प्राण-प्रिय कुत्ते को अपनी नजरों से कभी भी ओझल नहीं होने देती थी. बॉस की ऐम्बेसडर कार रुकते ही मैं तुरंत कार के दरवाजे पर पहुंच गया और नम्बरों की बढ़ोत्तरी की लालशा और आशा के साथ तत्काल दरवाजा खोल कर बॉस को रिसीव कर लिया. प्रमोशन पाने की अति महत्वाकांक्षा में मैं यह कतई भूल गया था कि आज बॉस वह नहीं है जिसे मैंने रिसीव किया है बल्कि आज असली बॉस वह है जासे अपने अंक में कुत्ते को लिए मुझे रक्तिम नयनों से घूर रही हैं और मुझे पहले उसको ही रिसीव करना चाहिए था. मैडम का कुत्ता भी मुझे घूर रहा था मानों मैंने कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया है. मुझे सबक सिखाने हेतु एक कमांडो की तरह तैयार ही था. शायद वह मैडम के इशारे की प्रतीक्षा कर रहा था. कुछ भी हो किंतु उस वक्त मुझे ऐसा आभाष हुआ जैसे कुत्ता कह रहा हो-किस बेवकूफ ने तुझ बदतमीज को सरकारी नौकरी दी है? .. .स्साला इंसान कहीं का.

निरीक्षण के दौरान मैंने बॉस की तन, मन, धन से भरपूर सेवा की फिर भी उनका मूड ठीक नहीं रहा और वे मुंह लटका कर वापस चले गये. कुछ दिन बाद प्रमोशन के आदेश जारी हुये किंतु मैं लटक गया. यदि मैं मैडम की तरफ का कार का दरवाजा खोल कर पहले मैडम को रिसीव कर लेता तो शायद मेरी किस्तम का भी दरवाजा खुल गया होता. इस भूल का मुझे काफी चिंतन मनन के बाद अहसास हुआ. काफी दिनों तक पश्चाताप करने के बाद यकायक मुझे एक उपाय सुझा. तदनुसार कुछ सामान बाजर से खरीद कर एक दिन मैं बॉस के बंगले पर पहुंच गया. बॉस तो शायद बाथरुम में थे किंतु मैडम उस नामाकूल कुत्ते के साथ 'लान' में घूम रही थी. मैंडम के चरण स्पर्श कर मैंने उनके पिल्ले को अपनी गोद में तत्काल उठा लिया. फिर उसे चाट-चूम कर बोला-वाह! कितना सुंदर पिल्ला है... इसके आगे धर्मेन्द्र भी कुछ नही हैं. इसकी हेयर स्टाइल दिलीप कुमार से भी अच्छी हैं. हेमामालिनी जैसे आंखे, श्रीदेवी जैसे रसीले होठ और देवानंद जैसी अदायें. ... वाह! क्या कहने? ऐसा सुपरस्टार हीरो मैंने आज तक नहीं देखा.

तिरछी नजर से मैंने मैडम को घूरा. वे कुत्ते की प्रशंसा सुन कर ऐसे प्रफुल्लित थी मानों उनकी ही प्रशंसा हो रही हो. अवसर अनुकूल पा कर अपनी चाटूकारिता में और भी वृद्धि करते हुये मैं बोला-मैडम, यह आपका हीरो राजेश खन्ना से किसी भी प्रकार कम नहीं है. इच्छा होती है इसे दिन रात मैं अपने सिर पर बिठाले रखूं. इसके लिए मैं इम्पोर्टेड बिस्कुट नहाने के लिए लक्स साबुन, और चांदी की एक कंघी लाया हूँ. कृपया इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने हेतु अपने हीरों से आग्रह करियें. मैडल बोली-ठीक है, वहां उसकी कुर्सी पर रख दो और जाओं. कुर्सी पर सामान रख कर मैंने न चाहते हुए एक बार पुनः उस पिल्ले को चाटा और अपने घर वापस आ गया था. उस कुत्ते की अनुकम्पा से दो दिन बाद मुझे मेरी पदोन्नति का आदेश मिल गया था.

इस कुत्ते के बच्चे ने जीवन में मुझे और भी कई जगह पटकनी दी है. मैं सुबह मार्निग वाक को जाया करता था. साथ में कभी-कभी श्रीमती भी चल देती थी. रास्ते में जितनी भी स्त्रियां अपने पिल्लों के साथ घूमती हुई मिलती तो मेरी निगांहे तो उन युवतियों को घूरने लगतीं किंतु श्रीमती की निगाहें उनके पिल्लों पर ठहर जाती. मेरा द्रष्टि फैंकना तो निरर्थक ही था किंतु श्रीमती का घूरना एक दिन रंग लाया. रंग क्या, ये समझ लीजिये कि पिल्ला ही ले आया. श्रीमती के स्वान-प्रेम के माध्यम से जब स्वान जी ने हमारे घर में प्रवेश पा लिया तो उस मरदूद ने मेरी दुनिया ही बदल दी. श्रीमती मार्निग वाक में मेरी जगह अब उस कुत्ते के बच्चे ने ले ली थी. शयनकक्ष में भी मेरे पलंग पर उस नामाकूल ने अतिकृमण कर लिया था. मैं नीचे चटाई पर करवटें बदलता रहता तो वह हरामी ऊपर फोम के गद्दों पर उछल कूद करता रहता. मैं सूखी रोटियों से मूड़ मारा करता तो वह बिस्कूटों और दूध में डूबा रहता. मुझे नहाने के लिए साधारण साबून भी नहीं मिलता लेकिन वह हमेशा लक्स साबुन, शैम्पू इस्तेमाल करता रहता. मेरा स्वयं का बच्चा अपनी की गोद के लिए तरसता रहता किंतु उक्त जाहिल पिल्ला श्रीमती की गोंद में हमेशा जमा रहता.

एक दिन तो हद ही होगयी. घर में छोटा बच्चा लगातार रोयें जा रहा था किंतु श्रीमती उस पिल्ले की सेवा में काफी समय से तल्लीन थी. जब स्थिति मेरी सहन शक्ति को लांघने लगी तो मैं खींज कर बोला-अरे! फैंक दो इस दुश्मन को बाहर और संभालों उस मासूम को.... बेचारा कब से रो रहा हैं. लेकिन श्रीमती पर मेरी खींज ने कोई असर नहीं किया. वे पलटवार कर बोली-खबरदार! अगर मेरे जिगर के टुकड़ें को कुछ अंट-संट कहा तो.... जब मैं अपने इस लाड़ले हीरों को संभाल रही हूं तो आप अपनी उस कम्बख्त औलाद को भी नहीं संभाल सकते? श्रीमती का तर्क सुन कर मैं औधें मुंह गिरा. मैं श्रीमती को घूर रहा था और वह राक्षस मुझे घूर रहा था. मुझे ऐसा लगा जैस कुत्ता मुझसे कह रहा हो-स्साला! इंसान कहीं का.

बदहाल, बेबस अमरनाथ झा.....

✍देवेन्द्र कुमार सिंह देबू

नगर के व्यस्ततम चौराहों में से एक है कटरा स्थित लक्ष्मी चौराहा जिसके गोल घेरे में इलाहाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा एक मूर्ति स्थापित की गयी है जिस पर प्रतिदिन हजारों लोगों की नजर पड़ती है. कुछ उपहास और उपेक्षा की दृष्टि से तो कुछ कुतूहलवश यह मूर्ति किसी और की नहीं बल्कि छात्रों से हृदयात्मक लगाव रखने वाले इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अमरनाथ झा की है. प्रो. झा के जन्म के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में १९६७ में स्थापित यह मूर्ति आज अपनी उपेक्षा और बदहाली की कहानी स्वयं कह रही है. उनके सिर और पूरे शरीर पर चिड़ियों द्वारा की गयी बीट की लम्बी रेखायें और धब्बे आदि मूर्ति की दयनीय स्थिति को स्वयं दर्शा रहे हैं. इसमें लगाये गये फब्बारों का नामोनिशान नहीं है. कूड़ा-करकट और काईयुक्त गंदे पानी से बदबू आ रही हैं. इसमें लगायी गई लाइटें खराब और जर्जर हो चुकी हैं. इसमें बने गेट से आज कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि गाय-भैंस और कुत्ते आराम फरमाते हैं.

२५ फरवरी १८९७ को जन्में अमरनाथ झा, अकूत प्रतिभा और विद्वता के धनी व्यक्तित्व थे. जब वह परास्नातक के ही छात्र थे तभी 'म्योर सेंट्रल कॉलेज' में उपाचार्य पद पर नियुक्त हुए. १९२२ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रवक्ता पद के लिए उनका स्थानान्तरण हो गया. १९३१ में वह इसी विभाग के अध्यक्ष हुए. म्योहर हास्टल के वार्डेन रह चुके प्रो. अमरनाथ झा, १९३८ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति बने. इस दौरान भी वह अंग्रेजी की अपनी कक्षाए निरन्तर लेते रहें. १९४७ में उ.प्र. लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष के पद को सुशोभित किये और अपने दायित्व को पूरी तरह निभाया. १९५३ में अपनी मृत्युपर्यन्त लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष रहे. २ सितम्बर १९५५ को वह इस दुनिया से अलविदा कह लिए. इस बीच, उ.प्र. लोक सेवा आयोग से एक साल का अवकाश लेकर वह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भी कुलपति रहे. शांत, संयम एवं शीतल अंतर्मन के स्वामी प्रो. झा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और छात्रों से इस कदर लगाव रखते थे कि वह इसे जीवन पर्यन्त नहीं छोड़ना चाहते थे. इलाहाबाद विश्वविद्यालय छोड़ने की, अपनी इसी धीनीभूत पीड़ा को अपनी डायरी में, निम्न शब्दों में उजागर किया है, "कोई यह महसूस नहीं कर सकता कि मेरे जैसे एकान्तिक व्यक्ति के लिए, इन छात्रों का क्या अर्थ है. (मैं) युवाओं के चरित्र निर्माण और उनके उन्नयन के सौभाग्य से वंचित हो रहा हूँ." छात्रों को ही अपने जीवन का धेय और अपनी उपलब्धियों का श्रेय समझने वाले प्रो. झा आज यदि अपनी बदहाल और जर्जर हो रही मूर्ति को देखें तो निश्चय ही, उनकी आत्मा बोल पड़ेगी कि-

एक पत्थर पर,
बना दी गयी सूरत मेरी।
इससे बढ़कर न लगी,
शहर में कीमत मेरी।।

> शांत, संयम एवं शीतल अंतर्मन के स्वामी प्रो. अमरनाथ झा इलाहाबाद विश्वविद्यालय और छात्रों से इस कदर लगाव रखते थे कि वह इसे जीवन पर्यन्त नहीं छोड़ना चाहते थे. इलाहाबाद विश्वविद्यालय छोड़ने की, अपनी इसी धीनीभूत पीड़ा को अपनी डायरी में इस प्रकार उजागर किया-"कोई यह महसूस नहीं कर सकता कि मेरे जैसे एकान्तिक व्यक्ति के लिए, इन छात्रों का क्या अर्थ है. (मैं) युवाओं के चरित्र निर्माण और उनके उन्नयन के सौभाग्य से वंचित हो रहा हूँ."

मूल्य वृद्धि सूचना

प्रिय सम्मानित पाठकों

इस वर्ष लगातार हो रही कागज मूल्य में वृद्धि को देखते हुए न चाहते हुए भी पत्रिका के मूल्य में वृद्धि करने को मजबूर हो रहे हैं. आशा है आप सभी सुधी पाठकों का स्नेह हमेशा की तरह आगे भी मिलता रहेगा.

एक प्रतिः ५/-रु० वार्षिकः ६०/-रु० द्विवार्षिकः १००/-रु०
विशिष्ट सदस्यः १००/रु० आजीवनः ११००/रु०

जिंदगी की राह रोशन करता रमजान

अंजुम नईम

रमजान अरबी साल का नौवां महीना है और इस्लाम में इस महीने का बड़ा महत्व है. धार्मिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टि से यह महीना मुसलमानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. ईश्वर ने कुरआन में कहा, 'रमजान वह महीना है जिसमें हमने कुरआन उतारा, जो मानव जाति के लिए हिदायत (मार्ग दर्शन) है. साथ ही सत्य और असत्य के बीच के अंतर की स्पष्ट निशानी भी है. इस महीने आप जरुर रोजे रखें, सिवाय उन लोगों के जो बीमार या मुसाफिर हों. पर उन लोगों के लिए दूसरे दिनों में इसी अवधि के रोजे जरुरी है.'
रोजा मात्र दिन भर भूखे-प्यासे रहने का नाम नहीं है. सहरी खाना, फिर शाम तक उपवास और शाम को एक निश्चित समय पर इफ्तार करना, रात को जागकर २० रकआत नमाज (तरावीह) पढ़ना, यह सब तो ऊपरी बाते हैं लेकिन इबादत की असल आत्मा तो इसके भीतर है. अगर वह न हो तो पैगंबर हजरत मुहम्मद ने स्पष्ट शब्दों में फरमाया है कि अल्लाह को इसकी कोई चिंता नहीं है कि कोई व्यक्ति भूखा रहता है या प्यासा. रमजान के रोजे और दूसरी इबादत का असल उद्देश्य 'तकवा' (परहेज करने) की प्राप्ति है. परहेज करना या तकवा का शब्द कुरआन और हदीस में बड़े व्यापक अर्थो में प्रयोग हुआ है. यह अपने आप और दूसरों के साथ न्याय करने, ईश्वर और मनुष्यों के प्रति अपने कर्तव्यों का सच्चे दिल और तत्परता से पालन करने तथा हर बात में इसका ध्यान रखने और डरते रहने का नाम है कि ईश्वर कहीं हमारी किसी बात से नाराज न हो जाए. इस्लाम एक साफ-सुथरे और शांतिपूर्ण समाज तथा लोक परलोक के सुखमय जीवन का आधार परहेज करने या तकवा पर रखता है.
कुरआन में रमजान के रोजों के विषय में अल्लाह ने कहा है:'रोजा तुम इसलिए रखो ताकि तुम परहेज करना सीखो.' इससे जिंदगी की राह रोशन होती है. इससे अंतरात्मा जागती है और उत्तरदायित्व की भावना पैदा होती है. रमजान इस दृष्टि से अभ्यास का महीना है, एक ऐसे अभ्यास का जो बर्दाश्त करने के लिए मनुष्य की इंद्रियों को तैयार करता है. रमजान का मकसद है कि बंदे के भीतर तकवा का रूह रच बस जाए और वह अल्लाह की मर्जी पर चलने लगे. रमजान का महीना दिल, जिस्म और आत्मा तीनों की सफाई का महीना है. इस महीने के पहले दस दिन ईश्वर की रहमत के दिन है, इसके बाद के दस दिन पापों के प्रायश्चित के और अंतिम दस दिनों नरक से मुक्ति के. पैगम्बर मुहम्मद ने फरमाया कि रोजे ईश्वर के लिए है और वह खुद अपने बंदों को इसका फल देता हैं.

+++++++

> 'रमजान वह महीना है जिसमें हमने कुरआन उतारा, जो मानव जाति के लिए हिदायत (मार्ग दर्शन) है. इस महीने आप जरुर रोजे रखें, सिवाय उन लोगों के जो बीमार या मुसाफिर हों.
> रोजा मात्र दिन भर भूखे-प्यासे रहने का नाम नहीं है. सहरी खाना, फिर शाम तक उपवास और शाम को एक निश्चित समय पर इफ्तार करना, रात को जागकर २० रकआत नमाज (तरावीह) पढ़ना.

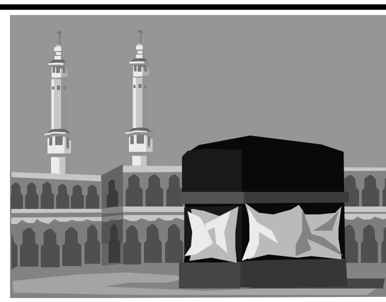

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठको, हमारा यह प्रयास हमेशा से रहा है कि आपको ऐसी सामग्री प्रदान की जाए जो मनोरंजक के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी हो. यदि हमें हिंदी के साथ ही साथ कुछ अन्य देशी-विदेशी भाषाएं घर बैठें सीखने को मिल जाए तो कितना ही अच्छा हों. आपकी पसंदीदा पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' ने आपके इस प्रयास में आपकी भरपूर मदद करने का फैसला लिया है. शीघ्र ही एक स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे हैं जिसमें जापानी भाषा के वर्णाक्षरों से लेकर बोलचाल तक की जानकारी समाहित होगी. इसे जापानी भाषा की कई पुस्तकों को हिंदी में अनुवाद कर चुकी सुप्रसिद्ध हिन्दी व जापानी लेखिका डॉ. श्रीमती राज बुद्धिराजा के द्वारा प्रदान किया जाएगा.

संगठन में संबधो की कला

✍ सुभाष जगोटा,
कार्यकारी निदेशक, पुंज लायड, मानव संसाधन विभाग

आज के इस तेजी से बदलते युग में हर चीज में बदलाव आ रहे हे. जिसका सीधा प्रभाव हमारे सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक जीवन पर पड़ रहा है. इससे हमारे आपसी संबंध भी अछूते नहीं रहे हैं. मधुर आपसी संबंधो को स्थापित करना भी एक कला है. इसलिए ईस कला को सीखने से हमें सफलता के लिए आगे बढ़ने में मदद मिलती है. यदि हम इनमें से कुछ तरीके अपनाएं तो ऐसा कर सकते हैं.

अपने आपको पहचानें: आपसी संबंध मधुर बनाने के लिए हमें अपने आपको पहचानना होगा. उसके बाद ही हम दूसरों के साथ आपसी संबंध स्थापित कर पाएंगें.

दूसरों का सम्मान करें: जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है कि हम दूसरों को सम्मान करें. दूसरो को सम्मान देकर ही हम सम्मान पाते हैं. जहां ऐसा होता है, वहां आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता आती है.

प्रशंसा करना सीखें- मधुर आपसी संबंधो के लिए जरुरी है कि हम दूसरों के हर अच्छे काम के लिए उनकी प्रशंसा करें तथा सम्मानित करें. ऐसा करके आपसी विश्वास बढ़ेगा जो कि आपसी संबंधो को मजबूती प्रदान करता है.

भावनाओं को महत्व दें: एक दूसरे के करीब आने से हमें दूसरे की छोटी-छोटी बातों तथा भावनाओं को महत्व देना होगा. इसके साथ-साथ हमें दूसरों के बारे में आवश्यक छोटी-छोटी जानकारियां रखनी होगी. इससे आपसी सबंधो का विकास होगा जो कि आपसी संबंधो की प्रगाढ़ता के लिए आवश्यक है.

दूसरों की सहायता के लिए आगे आएं' दूसरों की सहायता के लिए आगे आना आपसी संबंधो को बढ़ाने के लिए आवश्यक है. दूसरों की सहायता करके हम लोगों का दिल जीत सकते है और दिल जीत कर हम आपसी संबंधो को और भी मधुर बना सकते हैं.

भावनाओं पर नियंत्रण: आपसी संबंधो को प्रगाढ़ करने के लिए हमें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा. भावनाओं पर नियंत्रण होने से हम अपने विवेक से काम करते हें. जब हम अपने विवेक का उपयोग करते है, तो हमारे निर्णय अकसर सही होते है.

योग्यता का सही इस्तेमाल: हमें दूसरों की योग्यता को पहचानकर उसका सही उपयोग करना चाहिए. अगर हम ऐसा करते हैं तो दूसरों को इससे सफलता मिलती है और यह सफलता आपसी संबंधों को नया आयाम देती है.

जीवन मूल्यों का महत्व: हमें दूसरों के सिद्धातों अथवा जीवन मूल्यों को महत्व देना चाहिए. जब तक हम दूसरों के सिद्धातों और मूल्यों को सम्मान नहीं देगें तब तक हमारे आपसी संबंध मधुर नहीं हो सकते है.

सकारात्मक भाषा का प्रयोग करें: आपसी संबंध कायम रखने के लिए आपकी बोलचाल का बहुत महत्व होता है. हमेशा अपनी बोलचाल में सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करें. दूसरो को बोलने का मौका दें तथा उनकी बातों को ध्यान से सुनें.

हंसमुख रहें: हंसमुख व्यक्ति आपसी संबंधो को बनाता है. अगर आप प्रसन्न मुद्रा में लोगों से मिलते है तो ज्यादा से ज्यादा लोग आपसे मिलना व बातचीत करना पंसद करेंगे जो कि आपसी संबंधो को बढ़ाने में सहायक है.

मनुष्य अकेले जीवन बिताने की कल्पना भी नहीं कर सकता है. जीवन में सफलता के लिए आपसी संबंधो का बहुत महत्व है. यदि हम अपने व्यवहार में इन तरीकों से आपसी संबंध बनाए तो हमेशा सफलता की ओर बढ़ते रहेंगे, और अपने निर्धारित लक्ष्यों को पा सकेगें. OO

सभी नगर वासियों को ईद, दिवाली व छठ की हार्दिक बधाईया

एच.पी.जी.डी. चिल्ड्रेन अकादमी

(श्री हरिहर प्रसाद गोदावरी देवी)

नर्सरी से कक्षा अष्टम तक
कम्प्यूटर शिक्षण, प्रेक्टिकल, इंटरनेट की सुविधा

प्रबंधक **विजय जायसवाल** | नन्दना वार्ड, पश्चिमी, बरहज, देवरिया, उ.प्र. | प्रधानाचार्या **श्रीमती निरुपमा जायसवाल**

मेरा पहला प्यार

सौरभ कुमार तिवारी

प्यार शब्द क्या है? प्यार क्या चीज होती है जब तक मैं प्यार की परिभाषा नहीं जान पाया प्यार क्या होता है? प्यार कैसे होता है? यह मुझे तब मालुम हुआ. जब मैं एक लड़की को दो साल से जानता था लेकिन मै उसे देखकर पता नहीं क्यों शर्माता रहता था. लेकिन एक दिन वह लड़की एक मेरे दोस्त से प्रेम प्रस्ताव रक्खी, मुझे देखकर बहुत जलन हुई. लेकिन भाग्य ने मेरा साथ दिया. उस लड़के ने प्रस्ताव ठुकरा दिया. मैं उस दिन बहुत खुश था. कुछ दिनों बाद वह अपने मम्मी-पापा के साथ बाहर जाने वाली थी. मैंने उसे जाकर कहां -'मुझे छोड़कर कहाँ जा रही हो? तुम कहीं चली जाओगी तो मेरा क्या होगा.' वह मेरी बात को हंसी में उड़ा दी और धीरे-धीरे हम दोनों में दोस्ती हो गई. एक दिन मैं अपनी बहन के साथ उसके घर गया तो मैंने उससे धीरे से कहा-'मैं जाऊं' उसने कहा-'नहीं, अभी नहीं जाना है? वह किनारे आकर अपना हाथ बढ़ाई और कही 'मेरी हथेली पर कोई शब्द लिख दो' तो मैं शर्माकर वहां से चला आया. लेकिन मैं अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाया अगले दिन अपने प्यार का इजहार कर दिया. वह बहुत नाराज हुई और मुझसे बोलना भी छोड़ दी. उसके दो दिन बाद मेरा जन्म दिन था. मुझे पुरा विश्वास था कि वह मुझे जरुर बधाई देगी. उस दिन मै उसके फोन का बहुत इन्तजार किया लेकिन उसका फोन नहीं आया. मैं उस रात सो नहीं पाया. मैंने सोचा कि उसको भूलाने के लिए अब शराब का सहारा लेना पड़ेगा लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था. उसने अगले दिन मुझे जन्म दिन की बधाई दे दी. फिर हम लोगों की दोस्ती शुरु हो गयी. लगभग एक महीने बाद मैं कुछ दिनों के लिए बाहर चला गया. तो उसका एक दिन फोन आया कि आप कॉलेज क्यों नहीं आ रहे हैं. मैं बाहर से आने के बाद कॉलेज गया तो पुन: प्यार का इजहार कर दिया. उस दिन वह मेरा साथ देने को तैयार हो गई. जब मैंने सारी बात अपनी बहन को बताई तो तो मेरी बहन ने कहा-भैया, हम लोग मम्मी पापा को मना लेगें लेकिन क्या उसके मम्मी पापा राजी होगें. अगर वो लोग तैयार नहीं हुए तो क्या वह शादी के लिए तैयार होगी. मैं कहा-क्यों नहीं, मेरा प्यार गीता व रामायण की तरह पवित्र व सच्चा है. हम जरुर कामयाब होगें लेकिन विधी को कुछ और ही मंजूर था. कुछ लोगों ने मेरे खिलाफ उसके कान भर दिये. उसकी नजरों में उसकी सहेलियों ने मुझे गिरा दिया. मैंने उसको बहुत समझाया कि मुझसे कौन सी गलती हो गई है मुझे बताओं मैं उसे सुधारुगा. अगर तुम मुझसे रुठ जाओंगी तो मैं किसके सहारे जिन्दा रहूंगा. लेकिन वह एक न सुनी और शहर छोड़कर चली गयी. मैंने जाते समय उससे कहा- देखो प्रिये मैं तुम्हें उम्र भर चाहूंगा, और आखिरी सांस तक तुम्हारे इंतजार में बैठा रहूंगा

पत्रकार, मास्टर कॉलोनी, बरहज, देवरिया

युवाओं का सराहनीय प्रयास

कहते हैं अगर युवा चाह ले तो कुछ भी कर सकता है. और अगर यह चाहत समाज, धर्म, देश हित में हो तो वास्तव में सराहनीय व स्वागत योग्य कदम है.वषो से रामलीला का आयोजन कराती आ रही है प्राचीन रामलीला समिति, हनुमान गढ़ी मंदिर कमेटी, बरहज, देवरिया ने अर्थाभाव में इस वर्ष रामलीला न कराने का निर्णय लिया.लेकिन क्षेत्र के कुछ युवाओं ने इसे अपने प्रयास से अमली जामा पहनाने का पूरा प्रयास किया और अंतत: सफल भी रहे. आज वास्तव में ऐसे ही युवाओं की जरुरत है जो सामाजिक कार्यो में योगदान दे. अगर युवा वर्ग की सोच देश हित, धर्म हित, समाज हिंत से जुड़ेगी तभी देश का विकास होगा और आतंकवाद के घिनौनें खेल से छुटकारा मिलेगा. इस प्रयास को सफल बनाने में मुख्य भूमिका अदा की लोहा, सोनू जायसवाल, धमेन्द्र, जय भारती, सुनील, हनुमान, राजू आदि. इन युवाओं ने घर-घर घुमकर चंदा इकट्ठा किया और रामलीला की परंम्परा को बरकरार रखने में सफलता हासिल की.इस कार्यक्रम व सोच में सम्मिलित युवा वाकई बधाई के पात्र हैं. ऐसे युवाओं अन्य को भी सीख लेनी चाहिए.

++++++++++

न्याय आज भी होता है
अपराधी को मिली सजा ११ साल बाद

आज से ११ साल पहले जार्जटाउन, इलाहाबाद में एक ही परिवार के तीन लोगों की हत्या दिसंबर महीने के कड़ाके की ठंड के दौरान अल सुबह हुई थी. मरने वालों में एक महिला, उसका भाई एवं बेटा शामिल थे. इस घटना के लगभग चार साल बाद घर के मुखिया की भी हत्या हो गई.

सोहबतिया, इलाहाबाद निवासी निंगम सिंह का बेटा विक्रम सिंह व्यायाम करने के.पी.कॉलेज गया था. उसके साथ धमेन्द्र सिंह एवं मीनू सिंह भी थे. सुबह लगभग साढ़े छह बजे व्यायाम के बाद विक्रम लौट रहा था, तभी एक स्कूटरपर कपिलदेव सिंह एवं दया सिंह तमंचे से लैस होकर पहुंचे. कपिलदेव सिंह ने स्कूटर से उतरते ही विक्रम के सीने में फायर झोंक दिया और दया सिंह ने उसके पेट में गोली मार दी. इसके बाद कपिलदेव सिंह ने एक और गोली मारकर कहा-बच नहीं पाओगे, तुम्ही ने मेरे चाचा को जान से मारा है. बाद में हमलावर यह कहते हुए भाग निकले-जाकर देखो उसके घर पर भी सब मार दिए गये होगे. उसी दिन आधें घंटे बाद तकरीबन सात बजे सोहबतियाबाग में जब निंगम सिंह की पत्नी प्रभा सिंह एवं बेटी प्रतिभा सिंह छत पर झाड़ू लगा रही थी और निंगम सिंह खड़े थे तथा उनका साला भगत सिंह नीचे मकान की बाउड्री में टहल रहा था, उसी समय सुरेश सिंह, सुखलाल एवं दूसरे स्कूटर पर कमलेश सिंह एवं एक अज्ञात व्यक्ति मकान के सामने पहुचे. उन लोगों ने स्कूटर खड़ा किया और फिर सुरेश सिंह ने भगत सिंह के सीने पर गोली मार दी. सुखलाल ने भी भगत सिंह पर फायर किया जबकि कमलेश सिंह ने नीचे से ही प्रभा सिंह पर फायर किया. गोली उसके मुंह पर लगी और वह छत पर ही गिर गई. फिर निगम सिंह एंव उसकी बेटी के चिल्लाने पर कमलेश सिंह ने कहा-'निगम अब नहीं मिलेगा, चलो जल्दी केपी ग्राउंड में भी देखना है कि वहां का काम हो गया या नहीं'.

१४वॉ अभा हिन्दी साहित्य समारोह २८,२९ अक्टूबर को

गाजियाबाद, स्वांतत्रयोत्तर काला के हिन्दी साहित्य की वस्तुस्थिति से साहित्यप्रेमी पाठकों व शोधार्थियों से साहित्यप्रेमी पाठकों व शोधार्थियों को अवगत कराने के उद्देश्य से विगत ५०-५५ वर्षो में देश के विभिन्न भागों में हिन्दी भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं में जो साहित्य सृजन हुआ है उसे संकलित करके शोधपरक ऐतिहासिक ग्रंथ प्रस्तुत करने के उद्देश्य से आगामी २८-२६ अक्टूबर को स्थानीय हिन्दी भवन में आयोजित होने वाले १४वें अखिल भारतीय हिंन्दी साहितय समारोह में देश के विभिन्न भागों से आने वाले प्रख्यात विद्वान आलेख प्रस्तुत करेंगे. तीन सत्रों में आयोजित होने वाली विचार गोष्ठियों के अलावा स्कूली बच्चों तथा अन्य कलाकारों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम रात्रि में काव्य गोष्ठी का अयोजन तथा प्रति वर्ष की भांति समस्त भारत से चुने हुए विद्वानों, समाज सेवियों एवं अन्य क्षेत्रों की विभिन्न प्रतिभाओं को राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मान प्रदान किये जायेंगे.

अ.भा.राष्ट्रभाषा विकास संगठन तथा यू.एस.एम पत्रिका के संयुक्त तत्वावध ाान में आयोजित होने वाले इस ऐतिहासिक वार्षिक चिंतन शिविर के मुख्य संयोजक व संपादक उमाशंकर मिश्र ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष वार्षिक समारोह में देश के कोने-कोने से विद्वान उपस्थित होंगे तथा अनेक विशिष्टजनों की विभिन्न सत्रों में उपस्थिति से समारोह विशेष गरिमा प्राप्त करेगा.

श्री मिश्र ने बताया कि समारोह के दूसरे दिन नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित होने वाली गोष्ठी 'हिन्दीतर क्षेत्रों में हिन्दी लेखनः स्वातंत्रयोत्तर काल' में हिन्दीत्तर क्षेत्रों के अनेक सुपरिचत विद्वान अपने विचार व आलेख प्रस्तुत करेंगे. समारोह में, प्रतिवर्ष की भांति, अ.भा.लघु पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी के साथ ही अनेक पुस्तकों के लोकार्पण भी कराये जायेंगे. गाजियाबाद में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले इस वार्षिक समारोह की अपनी विशिष्ट गरिमा व पहचान है जिसके आयोजन की प्रतीक्षा देशभर के श्रेष्ठ चिंतक, साहित्यकार, पत्रकार व विचारक बड़ी व्यग्रता से करते हैं तथा अनेक रचनाकार तो यहॉ प्रतिवर्ष ही यहॉ की साहित्यिक पहचान को सुदृढ़ता प्रदान करते है.

समारोह से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी मुख्य संयोजक श्री उमांशकर मिश्र से पत्र व फोन द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं.

फोन. २८६०११०, ६८१८२४६६०२

युवा पीढी और देश भक्ति की भावना

✍श्रीमती सपना गोस्वामी

युवा पीढ़ी और देश भक्ति की भावना देश भक्ति की भावना मानव हृदय में पलते अन्य सभी भावों की तरह एक स्थाई भाव है जो अवसर पर अन्य भावों की तरह ही उभार मारता है. निश्चित रुप से यह प्रकृति प्रदत्त भाव नहीं है बल्कि जिस तरह परिवार से प्राप्त संस्कार पलने बढ़ने में प्रेरक बनते हैं, ढेर सारी भावनाओं को गढते हैं ठीक उसी तरह परिवार व समाज से प्राप्त संस्कार देश भक्ति के भाव को अंकुरित करते हैं, पालते है तथा शक्ति प्रदान करते हैं. देश भक्ति के भाव को समय परिस्थिति के अनुसार उस देश का सामाजिक ताना, बाना साहित्य इतिहास तथा प्रौढ़ नेतृत्व उभारने में उत्प्रेरक का काम करता है. जिस परिवार समाज में लोभ, लालच, भोग, विलास क्रूरता अनुशासनहीनता, लम्पटता ही संस्कार में मिलता हो वहाँ की युवा पीढ़ी में देशभक्ति के भावना का अभाव चौकाने वाला तो नहीं ही होता.

☼परिवार व समाज से प्राप्त संस्कार देश भक्ति के भाव को अंकुरित करते हैं, पालते है तथा शक्ति प्रदान करते हैं. जिस परिवार या समाज में लोभ, लालच, भोग, विलास, क्रूरता, अनुशासनहीनता, लम्पटता ही संस्कार में मिलता हो वहाँ की युवा पीढ़ी में देशभक्ति की भावना का अभाव चौकाने वाला तो नहीं ही होता.
आजादी के बाद समाज में अनुशासन पर तनिक भी जोर नहीं दिया गया. युवाशक्ति को विरोधाभाषी विचार धाराओं से भ्रमित किया गया.

देश भक्ति किसी भी राष्ट्र को सर्वतोमुखी विकास के साथ एक सबल समृद्ध, सुसस्कृति रुप प्रदान करता है.

भौगोलिक सीमाओ से घिरा भूखण्ड नहीं है. उस भूखण्ड में निवास करने वाले त्यागी तपस्वी परिश्रमशील मेधायुक्त चिन्तनशील, उर्जावान, नागरिक उसे महान देश का दर्जा प्रदान करते हैं. देश को शक्तिशाली सम्पन्न पूर्ण विकसित पहचान के लिए वांछित सम्पूर्ण उर्जा युवा पीढ़ी में ही सिमटी होती है. इसका सही उपयोग करने, नियंत्रित करने, दिशा देने का काम देश के नेतृत्व का होता है.

भारत के सदर्भ में जब हम युवा पीढ़ी और उसके हृदय में हिलोरे लेती देश भक्ति की भावना का आकलन करते हैं तो थोड़ी निराशा होती है. ऐसा नहीं है कि आज के युवा पीढ़ी में देश भक्ति की भावना लुप्त हो गई हो, पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि परिवार समाज व मातृत्व आजादी के बाद युवा पीढ़ी में देशभक्ति का समुचित संस्कार डालने में असफल रहा है. अनुशासन ही एक मात्र वह मंत्र है जो किसी देश के नागरिक में देश भक्ति की भावना को दृढ़ करता है. अनुशासन ही एक मात्र वह यंत्र है जो किसी देश के नागरिक में देशभक्ति की भावना को दृढ़ करता है. आजादी के बाद समाज में अनुशासन पर तनिक भी जोर नहीं दिया गया है. उल्टा युवाशक्ति को तरह-तरह के विरोधाभाषी विचार धाराओं से भ्रमित करने वाले इतिहास का पढ़न पाठन साहित्य लेखन, उपभोक्तावाद के विनाशकारी शैलाब ने दिग्भ्रमित किया है. युवाओं के सामने कोई आदर्श नहीं है. राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, वेद-उपनिषद, धर्म, देश का इतिहास, देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने का इतिहास तो दूर की कौड़ी है. भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, गॉधी, नेहरु, सुभाष, जयप्रकाश, लोहिया तक के संघर्षपूर्ण जीवन त्याग, बलिदान से आज का युवा वर्ग लगभग अनभिज्ञ सा है. देशभक्ति की प्रेरणा कहॉ से मिले, कहॉ से लें. देश को नेतृत्व देने वाले विभूतियों के क्रिया कलाप आचरण के बारे में बहुत कुछ बताने या लिखाने की आवश्यकता यहॉ पर नहीं है. यह सर्वविदित है. आये दिन पत्र, पत्रिकायें, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इसका विस्तृत खुलासा करते हैं.

"जिसमें नहीं निज देश औ निज जाति का अभिमान है,वह नर नहीं पशु निरा है और मृतक समान है" या "जिस देश जाति में जनम लिया बलिदान उसी पर हो जाये." या जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं वह हृदय नहीं है पत्थर है जिस में स्वदेश का प्यार नहीं'. जैसे देश भक्ति के लिए प्रेरित करने वाली काव्य रचनाएं साहित्य में नजर नहीं आती. फिर साहित्य या इतिहास के अध्ययन-मनन से आज के नवजवानों का कोई सरोकार नहीं रह गया है. ग्रामीण नौजवान रोटी की चिन्ता में अपने को, अपने सपनों को खपानें में

गाय के दूध के औषधीय उपयोग

✍गो सम्पदा, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली

गाय के दूध के द्वारा कुछ रोगों का उपचार निम्न प्रकार से किया जाता हे-

सिरदर्दः दूध में सौंठ घिसकर सिर पर लेंप लगाएं.

आधा शीशीः दूध में बादाम डालकर खीर खाएं या सूर्योदय से पूर्व गर्म दूध के साथ जलेबी खाएं.

ऑख दुखनाः गर्मी में ऑख दुखने पर रात में ऑखों की पलकों पर फीकें दूध की मलाई बांधने से ऑखों की लालिमा व गर्मी दूर होती है.

सूखी खॉसीः २५० ग्राम दूध में ५० ग्राम खसखस के दाने एवं मिश्री के साथ उबालकर और छानकर रात को सोते समय पिएं.

दुर्बलताः ५०० ग्राम दूध में २५० गाजर को उबालकर सेवन करने से दूध जल्दी पचता है. दूध में लोहे की मात्रा बढ़ जाती है तथा दस्त साफ आता है. दूध में घी और शहद मिलाकर पीने से शरीर में बल वीर्य की पुष्टि होती है.

पीलियाः लोहे के बर्तन में गरम किया हुआ दूध सात दिन तक पथ्य के साथ पीने से पीलिया तथा संग्रहणी में लाभ होता है.

अम्लपित्तः अम्लपित्त के रोगी को दिन में तीन बार ठण्डा दूध पीना चाहिए.

रक्तपित्तः २५० ग्राम दूध में १२५० ग्राम पानी मिलाकर २५० ग्राम अवशेष रहने तक उबालकर पिएं.

पेट के कीड़ेः दूध में शहद मिलाकर पिएं.

कब्जः गर्म दूध के साथ इसबगोल की भूसी या गुलकंद लेने से कब्ज तथा बवासीर में लाभ होता है. गाय का ताजा दूध तलुओं पर मलने व रगड़ने में लाभ होता है. रात्रि भोजन के बाद गर्म दूध के सेवन से कब्ज में राहत मिलती हैं. यह दूध में उपस्थित लेक्टोस का जीवाणुओं द्वारा अम्ल में परिवर्तित हो जाने के कारण होता है.

दस्तः गर्म दूध में बच्चों के लिए एक चुटकी तथा बड़ों को दो चुटकी पिसी हुई दालचीनी डालकर पिलाएं.

आंतो के रोगः गर्म सुहाता हुआ एक चम्मच फीका दूध लेकर धीरे-धीरे उसे पेट पर खाने से पहले मलें. फिर एक घंटे तक विश्राम करने के बाद भोजन कर लें. इसके बाद पेशाब करने से आंतों में होने वाले शोथे एवं रोग दूर हो जाते हैं. आंते मजबूत हो जाती है.

हिचकीः औटाए हुए दूध को पीने हिचकी बंद हो जाती है.

पेशाब की जलनः गर्मी के कारण या गर्म प्रकृति की चीजें खाने से पेशाब में जलन, कच्चे दूध मे ंपानी मिलाकर लस्सी पीने से मिट जाती हैं.

लगा है तो शहरी नौजवान ऐशो आराम की आधुनिक सुविधाओं के लिए लूट खसोट में निमग्न है. शिक्षा क्षेत्र में स्वास्थ्य क्षेत्र आर्थिक क्षेत्र या यो कहे जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त अनियंत्रित अराजकता नवजवानों के मन मस्तिष्क को एक अंधेरी अन्तहीन सुरंग में ध केलने का काम बखूबी किया है. कुन्ठा मानसिक तनाव सारी संवेदनाओं की निर्मम हत्या निरन्तर करता जा रहा है. भोग विलास के साधन लूट खसोट से सिर्फ धन अर्जित करना एक मात्र लक्ष्य बन गया है. जब भावनायें, संवदनायें मृत्यु को प्राप्त कर चुकी हो वहॉ देश भाक्ति की भावना या सेवा त्याग बलिदान की भावना की आशा करना बेमानी ही है. किसी गुनाह की कोई सजा नहीं है. पूरा का पूरा समाज भय और अनिश्चतता में सॉस ले रहा है. किसी के लिए किसी के हृदय में सद्भावना या इज्जत का दर्शन लगभग दुर्लभ सा लग रहा है.

देशभक्ति की भावना बाहय आक्रमण या प्राकृतिक आपदाओं के समय करवट लेते जरुर दिखाई पड़ती है पर बाकी समय में छोटी-छोटी बातों पर दंगा, फसाद, रास्ता जाम, हड़ताल,तोड़फोड़ कर अपने देश भक्ति की प्रदर्शन बड़ी बेशर्मी से की जाती है. एक क्षण के लिए भी नहीं सोचा जाता कि इससे भारत मॉ की चुनरी बुरी तरह से तार-तार होती है.

देश भक्ति पर जाति भक्ति बुरी तरह से सवारी किये है. कुछ लोग, भले ही वे मुट्ठी भर हो अपनी कौम की आजादी के लिए किसी नादिर शाह, तैमूर लंग या अहमदशाह, आब्दाली की प्रतीक्षा कर रहे हैं तथा उसके लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे है. तो कुछ मंदिर निर्माण में सारी समस्याओं का हल ढूढ रहे हैत्र. बाकी समाज हक्का-बक्का किंकर्तव्यमूढ़ मौन साधे हैं. जैसे उसका देश समाज से कोई सरोबार ही नहीं रह गया हो. ऐसे में उस देश भक्ति को कहॉ तलाशा जाय तो देश को विश्व मानचित्र पर गर्व करने लायक चमक दे सकें.

प्रधानाचार्या, निशा ज्योति संस्कार भारती, नैनी, इलाहाबाद

++++++++++++++

इस सपनीली शाम को पीलें चुपके-चुपके

प्रख्यात साहित्यकार व कत्यूरी मानसरोवर, अल्मोड़ा के प्रधान संपादक बलवंत मनराल जी की ६६वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक काव्य संध्या का आयोजन किया गया. जिसमें नगर के वरिष्ठ व सुप्रसिद्ध रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से श्री मनरालजी को शुभकामनाएं अर्पित की. गोष्ठी शुभारम्भ रश्मि चौधरी की सरस्वती वंदना से हुआ. इसके बाद हास्य व्यंग्य कवि नवीनचंद्र त्रिपाठी ने कहा-

एक हूँ ठगी ठग, एक हूँ जातिक ठग,
नटवर लाल ज्यू ठगीठग भया तो
नटवर सिंह ज्यू जातिक ठग में ऐ,
किलैकि उ नेता भै, नेता तो सबै ठगै भै

रश्मि चौधरी ने अपनी ग़ज़ल में-

है साजिश नये दौर के दुश्मनों की,
उतारेंगे खंजर मगर रफ्ता-रफ्ता

प्रो. शेर सिंह बिष्ट ने-

फैले है चारो ओर, परखे हुए लोग
फिरते हैं हर रोज, कैसी उनकी सोच।

डॉ० दिवा भट्ट ने-

चलो तुम्हारा मौन कुरेदें चुपके-चुपके
इस सपनीली शाम को पीलें चुपके-चुपके
तुमने तिनके तोड़-तोड़ कर फैंके होंगे
शायद कोई उन्हें सहजे चुपके-चुपके

को सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया. दीपा कुटौला 'अर्पिता' ने कहा-

दूर क्षितिज पर बैठी मंजिल
एक दिन चलकर आयेगी
साहस करो, पथ पर चलने का
दुनिया पीठ थपथपायेगी

श्रीमती आशा भट्ट ने श्री मनराल को कविता के माध्यम से शुभकामना दीं-जन्मदिवस है आज तुम्हारा, तुमको बहुत बधाई
रहो चिरायु कहने को यह बहिना देखा आई।

श्रीमती कल्पना साह ने कुछ इस तरह बधाई दी- कलम के हर शब्द में आपके, युग-युग का उद्गार हो
जीवनपथ में आपके सदा, सुख का एक संसार हो।

अंत में बलवंत मनराल ने अपनी कविता में कहा-

निर्जल पहाड़ियों की पृष्ठभूमि में कंकाल,
आवरण में चित्र नहीं दिखते
रंगीत पत्रिकाओं में भूख,
अभाव, आतंक नहीं फबतें
कंकाल डरे-सहमें उतर रहे हैं,
पार्श्व में एक खूनी दृष्टि
शिकार पर जमाये, सनसनी खबर
सही। छापने लायक नहीं है.

काव्य संध्या में चंद्र मोहन पंत, मनोज कुमार खोलिया 'मन्नू', डॉ. धारा बल्लभ पांडे, शिवराज भंडारी, डॉ. महेन्द्र माहरा 'मधु', डॉ. हयात सिंह रावत, कल्पना साह, विनोद जोशीा, मनोज कमार खोलिया, मो. अली अजनबी आदि ने काव्य पाठ किया. गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. शेर सिंह बिष्ट व संलाचन डॉ. दिवा भट्ट ने किया.

डॉ० चकोर सम्मानित

आनन्द शास्त्री राष्ट्रीय हिन्दी विकास संस्थान पटना द्वारा आयोजित अष्ट्म पाटलिपुत्र साहित्य महोत्सव में अंग माधुरी मासिक एवं भाषा भारती संवाद त्रैमासिक के सम्पादक डॉ० नरेश पाण्डेय चकोर को आनन्द शास्त्री पत्रकारिता सम्मान प्रदान किया गया. विदिन हो कि डॉ० चकोर ने पचास पुस्तकों का लेखन/संपादन किया है जो कि प्रकाशित है. इन्हें देश के तीन दर्जन संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जा चुका हैं. डॉ० चकोर कई साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं के सक्रिय पदाधिकारी है और साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मंचो पर अपनी भागीदारी से कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं.

रवीन्द्र-संगीत-सुधा लोकार्पण एवं छात्रवृत्ति समारोह

कोलकाता. राजश्री स्मृति न्यास द्वारा पश्चिम बंग बांग्ला अकादमी में बांग्ला गीतिकाव्य-शोधकर्ता श्री सुनीलमय घोष की अध्यक्षता में आयोजित हुआ. कार्यक्रम के विधवत उद्घाटन के पश्चात् दाऊलाल कोठारी द्वारा रवीन्द्र-गीत एवं उनके हिन्दी गीतान्तर की पुस्तक रवीन्द्र-संगीत-सुधा का लोकार्पण, निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन के महामंत्री श्री जयंत घोष के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर समीक्षक श्री पार्थ बसु ने कहा कि कोठारीजी का सहज अनुवाद अनुभूतिपरक व अन्तःस्पर्शी तो है ही, साथ ही गीतिकाव्य भाषान्तर की कठिन अग्नि-परीक्षा में सफल भी है. प्रख्यात बांग्ला साहित्यकार तिलोत्तमा मजुमदार ने दाऊलाल जी को साधुवाद दिया. इस अवसर पर श्री जयन्त घोष, वाराणसी के रविन्द्र व कबीर विशेषज्ञ पं. अमिताभ भट्टाचार्य, श्री जयकिशनदास सादाणी ने भी अपने विचार व्यक्त किए. इसके बाद श्रीमती तनुश्री बन्दोपाध्याय, दाऊलाल कोठारी व विश्वजीत सरकार ने रवीन्द्र के गीत बांग्ला व हिंदी में प्रस्तुत किए. आयोजन में स्वरचित काव्य पाठ का भी आयोजन था, जिसमें नवीन एवं प्रवीण लगभग २५ कवियों ने अपनी स्वरचित कृतियां सुनाई. कार्यक्रम का संचालन राजश्री के संस्थापक श्री जगदीश प्रसाद साहा ने किया तथा सुश्री जुही जयसवाल ने सभी अतिथियों को धन्यबाद ज्ञापित किया.

+++++++++

कविता

तेरी जुल्फों से वफा की देवी
मैं बहुत प्यार किया करता हुँ।
अपनी ऑखों से मेरी जाने वफा
तेरा दीदार किया करता हूँ।
जब तेरा जिक्र कहीं होता है
तेरी यादों में मैं खो जाता हूँ
तू कहीं दूर भले हो मुझसे
पर तुझे पास में मैं पाता हूँ.
मैं तेरा हो गया हूँ एक पल में
तेरी जुल्फों ने किया है बसमें
तेरे बिन जिन्दगी अधूरी है
तेरा है खा लिया है दिल कस में
तू समन्दर है मेरी जाने जिग़र
बात तेरी ये मैं समझता हूँ
तेरा चेहरा मुझे नज़र आता
जब भी तन्हा कहीं निकलता हूँ।

सूर्य नारायण शूर,
प्रदेश सचिव, अ.भा.प. संघ, मेजा, इलाहाबाद

हथौड़ी

तुम्हारे स्वार्थ की हथौड़ी
हर बार छेदती, मेरे
हृदय को,
हर बार हथौड़ी की
ठक-ठक
पहुंचाती है पीड़ा
मेरी संवेदनाओं को
तुम समझ पाषाण प्रतिमा मुझे
रोज चले आते हो
अपनी हथौड़ी लेकर
देने मुझे नया रुप।

दीपा कुटौला, अल्मोड़ा, उत्तरांचल

ग़ज़ल

देता रहता हैं तू सफाई क्या।
तेरे दिल में कुछ बुराई क्या।
रौशनी का शरीर ज़ख़्मी हैं,
दे रहा है मुझे दिखाई क्या।
तीर है आप ही के तरकश के,
दीजिए आपकी दुहाई क्या।
खून में घुल चुकी हैं खुद ग़रज़ी,
पीर जाने कोई पराई क्या।
आपने पर कतर दिए मेरे,
अब मेरी कै़द क्या रिहाई क्या।
तेरी तदबीर ही दिखाएगी,
तेरी तक़दीर में हैं भाई क्या।
आग तो ख़ैर लग ही जाएगी,
घिस सकोंगे दियासलाई क्या।

एहतराम इस्लाम,
५८७, अतरसुइया, इलाहाबाद

धरती माँ

वो बड़ी सहिष्णु और दयालु है
अपनी छाती में हिन्द और प्रशांत
जैसे असंख्य महासागरों,
उच्च पर्वत चोटियों को बिठाई है।
दुख, वेदना हानि सहकर भी 'पूनम'
खामोश, जग का वजूद
हरियाली सी मुस्कान दुनिया को
देती है वो धरती मॉ
हम सबकी मॉ।

सुश्री डॉ. पूर्णिमा पण्डा 'पूनम',
गढ़उमरिया, जिला-रायगढ़, छत्तीसगढ़

ग़ज़ल

होके मुझसे तू ऐसे ख़फा जिन्दगी।
जा बसी है कहॉ तू बता जिन्दगी।
जग को ठूकरा दिया मैंने तेरे लिए,
कर न पाई तू मूझसे वफ़ा जिन्दगी।
तेरी सूरत ही थी मेरा दर्पण सदा,
तू मिले फिर सजूँ इक दफ़ा जिन्दगी।
तू हॅसाती भी है और रुलाती भी है,
तू दिखाती है क्या-क्या अदा जिन्दगी।
पहले इतना बता क्या है मेरी ख़ता
फिर जो चाहे तू देना सज़ा जिन्दगी।
मिस्ले मेहबूबा तुझको सजाऊँगा मैं,
मुझसे होना कभी मत जुदा जिन्दगी।

बैजनाथ शर्मा 'मिण्टू', अहमदाबाद

धीरे-धीरे

गम के बादल छंट जाते है,
इस दुनिया में धीरे धीरे।
हर एक मर्ज की दवा का असर,
होता है धीरे-धीरे।
निष्ठा पूर्वक बढ़े चलो तुम,
हासिल करने अपना लक्ष्य,
पा जाओगें मंजिल अपनी,
बंधु मेरे धीरे-धीरे।
माना दुर्गम पथ है मेरा,
कांटे ही कांटे राहों में,
कर्मवीर बन फल बनाना
उन कांटो को धीरे धीरे।
जीवन में दो पेड़ लगाना,
उसे पालना तन मन से,
थके पथिक को छाया देगा,
फल भी देगा धीरे धीरे।
रुक मत जाना राहों में,
कठिन सफर है जीवन का,
पूरा होगा सफल एक दिन,
तेरा साथी धीरे धीरे।
कोई अच्छा कहें या बुरा,
तुम लगे रहो परहित में सदा,
सबका प्यार मिलेगा बेशक,
तुमको प्यारे धीरे धीरे।
दुख की काली रात भयानक
अंधकार ही फैलाये,
पर प्रकाश सुख का ले आता,
जग में सूरज धीरे धीरे।
संघर्षो के बाद विजय का,
शुभ दिन आता धीरे धीर,
पतझड़ के जाते ही जैसे,
हरियाली आती धीरे धीरे।
जिस हीरोशिमा का सर्वनाश
कर डाला था एटमबम ने,
हरा भरा खुशहाल देश वह
बन गया आज धीरे धीरे।
सूखा बाढ़ भूकम्प सुनामी,
यह लीला है प्रकृति की,
इन सबका सामना करके मानव
सामान्य हुआ धीरे धीरे।

वी.नारायण स्वामी, चेन्नई

++++++++++++++++++++++++

परम्परा

बैद्यनाथधाम के पंडो में शादी प्रथा जहॉ छत पर चढने से ससुराल दिखाई पडती है

✍ मुन्नू प्रसाद खवाड़े
पत्रकार, बैद्यनाथधम, देवघर, ८१४११२

विवाह प्रथा एक सामाजिक परंपरा है. जीवन को सुचारु रुप से चलाने के लिए विवाह एक अनिवार्य प्रथा माना जाता है. कहते हैं जिसकी शादी नहीं होती है, उसकी समाज में कोई विशेष मान्यता नहीं रहती है. वैद्यनाथ धाम-देवघर में लगभग बीस हजार आबादी वाला मैथिल ब्राहमणों का पंडा समाज है जहॉ शादियां घर के सामने या अगल बगल या उस गली से इस गली में होती है. अगर छत पर चढ़ जाइए तो सामने ससुराल दिखाई पड़ जाएगी और मजे से अपनी पत्नी से गप्पें लड़ा सकते हैं. बुला सकते है और बड़े बुजुर्ग आ जाने पर तुरंत छिप सकते हैं.

वैद्यनाथधाम में महाशिवरात्रि के बाद पंडा समाज में लड़की वाले वर की तलाश में इस गली से उस गली में और इस घर से उस घर में आना जाना शुरु कर देते हैं. महाशिवरात्रि में शिव विवाह होने के पूर्व कार्तिक और माघ माह में पंडा समाज की औरतें और पुरुष बाबा वैद्यनाथ के शिवलिंग पर जल चढ़ाने रोज सुबह जाते हैं. इसी समय में मॉ अपनी मुत्री को साथ लेकर रोज मंदिर पूजा करने जाती है. लड़का भी लड़की देखने के बहाने रोज मंदिर जाता है. इस प्रकार मंदिर में लड़का लड़की को और लड़की होने वाले पतिदेव को देख लेती है. धीरे-धीरे दोनों के पक्षों के मां बाप और निकवर्ती सगे संबंधी बातचीत करते हैं. हालांकि सब ऐसा नहीं करते है. एक समय था जिस पंडे के अधिक यजमान है उसके बच्चों की शादी तुरंत और बहुत कम उम्र में ही हो जाती थी. जिसके बच्चों की शादी जितनी जल्दी हो गई समाज में उसकी प्रतिष्ठा उतनी अधिक होती थी. दहेज प्रथा तो सब दिन रहा है लेकिन पुराने समय में लड़के वाले दहेज की मांग नहीं करते थे. खानदान देखा करते थे. माघ महीने में जब देखा देखी हो जाता था, लड़के वाले कभी लड़की देखने नहीं जाते थे और लड़की वाले भी अपनी लड़की को नहीं दिखाते थे. सिर्फ खानदान बता दिया गया. गोत्र वगैरह देख लिया. उस वक्त जिन लड़के या लड़कियों के मॉ बाप का चाल चलन ठीक रहता था तो लोग विश्वास कर लेते थे कि जब मॉ का स्वभाव अच्छा है तो लड़की का भी स्वभाव अच्छा होगा ही. अगर कोई असामाजिक काम कभी कर लिया तो उनके बच्चों पर आफत आ जाती थी. उनके लड़के या लड़कियों की शादी नहीं होती थी. समाज में सामूहिक भोज में निमंत्रण नहीं दिया जाता था. स्वंय असामाजिक तत्व लोग शादी विवाह या अन्य सामाजिक उत्सव में भाग लेने नहीं आते. क्योंकि लोग उसका बहिष्कार करते थे. इसलिए उस समय माता पिता अपने चरित्र पर बहुत ध्यान दिया करते थे. महाशिवरात्रि के बाद लड़के की शादी के पूर्व लड़की वाले होली में पकवान वगैरह लेकर नये ससुराल में जाते है और सब मिलकर पकवान खाते हैं और प्रचार किया जाता था कि अब शादी होना तय हो गया. दूसरी लड़की वाले अब उक्त लड़के को वर करने नहीं जाते थे. उसके बाद पंडे लोग राज्य और देश के कोने कोने में यजमानों के घर जाते थे और कुछ धन संग्रह करके लौटने के बाद वैशाख में शादी करते, चैत को अशुभ मानते.

> वैद्यनाथ धाम देवधर में लगभग बीस हजार मैथिल ब्राहमणों का पंडा समाज है जहॉ शादियां घर के सामने या अगल बगल या उस गली से इस गली में होती है.घर की छत पर चढ़ जाने से ससुराल दिखाई पड़ती है और मजे से अपनी पत्नी से गप्पे लड़ा सकते हैं.

शादी में लड़का जो दुल्हा बनता हैं, उत्तम श्रेणी का ब्रासलेट धोती और कुर्ता पहनता है. पहले चप्पल जुता नहीं पहना जाता था, अब प्रचलन है. माथे पर चन्दन और विभूति लगाते हैं. बारात घर से निकलती, दूल्हा आगे रहता है और पीछे संगे संबंधी सिर्फ मर्द और दोस्त लोग रहते थे. अब औरतें भी सबसे पीछे बारात में रहती है. बारात पैदल निकलती है. गली में घूमते हुए वैद्यनाथ मंदिर जाते है जहॉ पर लड़की वाले फलमूल के साथ हाजिर होते है और दुल्हा को हाथ में फलो से भरा पारात छुआने के बाद लड़के वालों के घर पहुँचवा दिया जाता है. इसे नगर न्यौता कहते हैं. मंदिर के बाद दुल्हा बाराती के

साथ लड़की वाले के यहां जाता है जहां दरवाजे पर दुल्हा को चुमाने के बाद भीतर में मंडप पर बैठाया जाता है. बारात में आये लोग दरवाजे पर खड़े खड़े ही पान और अबीर लेकर लौट जाते थे. लड़की वालों के यहॉ कुछ खाते नहीं थे. अब धीरे -धीरे यह परम्परा नष्ट हो रही है. पहले दुल्हे साथी लोग ससुराल में जलपान खाने की प्रथा शुरु किया जो धीरे-धीरे एक परम्परा बन गई और अब बाराती वाले दरवाजे पर बिना जलपान किए उठते ही नहीं हैं. पहले लड़के वाले बाराती में लोगों को लाने के लिए शादी के पूर्व बाराती भात सगे संबंधियों को खिलाते थे. बाराती में अगर अधिक लोग नहीं है तो लड़की वाले समझते थे कि इनका समाज में या संयुक्त परिवार में कुछ इज्जत नहीं है.

रात में शादी होती है. शादी के अंत में पुनः पति-पत्नी सुबह सूर्योदय के पूर्व ही वैद्यनाथ मंदिर आते हैं. बाबा का दर्शन करने के बाद नई जिंदगी शुरु करते है. देवधर के पंडो की शादी देवधर में ही होती है. यहॉ के मैथिल ब्राहमणों का नाम के अन्त में झा, मिश्र के अलावे वैद्यनाथ मंदिर के दरवाजे पर सरदार पंडा के यहॉ रहने के कारण द्वारी कहते हैं. खवाड़, पलिवाल, करमहे, जजवाड़, ठाकुर, कुंजिलवार, श्रृंगारी, गुमास्ता, नरौने, परिहस्त, सरेवार, पंडित, फलाहारी आदि नाम के अन्त में लिखते हैं. आपस में कोई गोतिया और संबंध नहीं मिलने पर घर के सामने ही शादी हो जाती है. गौना के पूर्व तक नई दुल्हने सुबह ससुराल लायी जाती है, दिनभर नये नये पकवान और मिठाई खिलाने के बाद सूर्यास्त के पूर्व ही दुल्हन को नैहर मायके में पहूँचा दिया जाता है जो ससुराल के सामने ही होता है. गौना के बाद दुल्हन ससुराल में रहती है. इस समाज में रात में चावल या अन्य से चुल्हा नहीं जलाया जाता है. जिसके घर में शाम को चुल्हा जलते देख लिया तो उसे हेय दृष्टि से देखा जाता था. शाम को सिर्फ दही चुड़ा खाने की प्रथा है. अब चुल्हा लता है लेकिन चावल नहीं पकता है. अब चुड़ा बढ़िया नहीं मिलता है इसलिए अधिकांश घरो में रोटी बनाने के लिए चुल्हा जलाया जाता है. रोटी और दही कुछ लोग खाते हैं. साला, श्वसुर, मामा, मामी भगिना सब एक ही घर में या एक ही मुहल्ला में मिल जाएगें. अब कुछ लोग शांदिया बाहर में भी कर रहे हैं लेकिन लड़किया ही बाहर गई है बाहर से लड़किया बहुत कम आई हैं. अब दहेज प्रथा भी चरम सीमा पर है. पहले जहां लड़के वाले दहेज मांगने में शर्म महसूस करते थे अब अग्रिम ही मांग लेते हैं.

वैद्यनाथधाम के पंडा समाज के लोग तनाव रहित जिंदगी जीते है. आजकल भले ही दहेज-प्रथा का प्रचलन बढ़ गया हो फिर भी देश के अन्य जातियों की तुलना में इस समाज की नववधुंए और महिलांए अपने को सुरक्षित और भाग्यशाली समझती है. इस समाज में औरत को कौन पूछे मर्द लोग भी भांग छोड़कर दूसरा नशा जैसे सिगरेट, शराब आदि का सेवन नहीं करते हैं. शादी के बाद लड़कियां जब ससुराल चली जाती है उसके बाद भी मायके वाले उनकी खोज खबर लेते रहते हैं. लड़कियां ससुराल में नम्र बनकर एक सुगृहिणी के समान जीवन जीती है. इस समाज में दहेज को लेकर लड़कियों और दुल्हनों को जलाया या मारा नहीं जाता. इस समाज की औरतें शर्मीली और पर्दानशीन होती है. पहले तो शिक्षा भी ग्रहण नहीं करती थी. धीरे-धीरे कुछ पढ़ने लगी और आज शिक्षिका, कॉलेज शिक्षिका, लेखिका, एम.एल.सी. तक हैं. पुरुषों के साथ उठना बैठना और बोलना पसंद नहीं करती है. यह समाज की नीति के विरुद्ध है. जब लड़कियां ब्याह के घर चली जाती है और अगर घर में किसी प्रकार का तकलीफ है तो भी नैहर वालों को नहीं बताती है फिर भी लड़के और लड़की वाले आपस में एक दुसरे की इज्जत का ख्याल खूब करते हैं.

वर्तमान समय में इस समाज की महिलांए जब अखबारों में समाचार पढ़ती है कि फलां जगह महिला को सताया जा रहा है, ससुराल में तंग किया जा रहा है, देवर भाभी मिलकर प्रताड़ित कर रहे है तो इन लोगों को बड़ा आश्चर्य होता है. इस समाज में इस प्रकार की अमानवीय काम कोई नहीं करता हैं. सामाजिक डर अभी भी बनी हुआ है.

वास्तव में अन्य समाज के मर्दो और औरतों को इस समाज से सीख लेनी चाहिए. विधवा विवाह का प्रचलन नहीं है और न बाल विवाह का ही प्रचलन है. ++++++++

o बाराती में अगर अधिक लोग नहीं है तो लड़की वाले समझते थे कि इनका समाज में या संयुक्त परिवार में कुछ इज्जत नहीं है.
o यहॉ के मैथिल ब्राहमणों का नाम के अन्त में झा, मिश्र के अलावे वैद्यनाथ मंदिर के दरवाजे पर सरदार पंडा के यहॉ रहने के कारण द्वारी कहते हैं.

लघुकथा

सागर की सरिता

रामचरण यादव 'याददाश्त'

सरिता एक अच्छे परिवार की लड़की थी। घर में सबसे छोटी होने के कारण सबकी प्यारी राजदुलारी थी, किन्तु दुर्भाग्यवश उसकी शादी एक गरीब परिवार में हुई। पढ़ी-लिखी योग्य होने के बावजूद भी उसको परिवार अच्छा नहीं मिला। पति भी लंबी बीमारी का मरीज था। ससुराल के खराब माहौल से सरिता काफी परेशान रहती थी। वह एकांत में बैठकर सोचती अपनी निजी जिन्दगी के बारे में, तो बड़ा कष्ट होता। जीने के लिए भी संघर्ष करना पड़ेगा ऐसी उसे कल्पना न थी। उसकी चिन्ता का कोई समाधान नजर नहीं आ रहा था। इसी बीच खुशियों की किरण ने सरिता के घर आंगन में झांका और सुन्दर एक बेटे तथा एक बेटी का जन्म हुआ। बच्चों के सहारे सरिता अपना मन बहलाने लगी। परिवार के लोग उसे हमेशा परेशान करते। यहाँ तक कि पति भी प्यार की जगह दुत्कार, हॉट फटकार लगाता फिर भी वह चुप रहती किसी से कुछ न कहती। बच्चे थोड़े बड़े हुए तो उनकी पड़ाई-लिखाई में लग गई समय मिलने पर धार्मिक आयोजन एवं मंदिर आने-जाने तथा भजन गाने में मन लगाने लगी। बचपन से ही उसे भजन गाने का बहुत शौक था। कई जगह कार्यक्रम में गई। उसे प्रभु पर पूर्ण विश्वास था। वह हमेशा सोचती कि कोई उसे समझाने वाला, सहारा देने वाला सही व्यक्ति मिले मगर परिवार के कारण उसे तलाशने का मौका तक नहीं मिला। बेटा बड़ा हो गया और कमाने लगा इधर बेटी भी पढ़ लिख कर बाहर ट्रेनिंग पर चली गई अब सरिता अकेलापन महसूस करती। दिल की बात किससे कहे, बस बेचारी रोते ही रहती। खान-पान मे भी रूचि नहीं रही। आखिर उसकी तबीयत खराब रहने लगी। उसकी सहेली रमा उससे मिलने अक्सर आया करती और उसे अपना समझ बड़े प्यार से समझाती। इस प्रकार एक वर्ष बीत गया सरिता अपने दुःख को रमा से बताती तो उसे भी तकलीफ होती। रमा ने कहा-मैं तेरे लिए कोई अच्छा व्यक्ति खोजूंगी और मुझे विश्वास है कि अच्छा साथी जरूर तुझको मिलेगा। दोनों सहेलियाँ साथ-साथ भजन कीर्तन में जाती थीं, किन्तु सरिता कभी किसी की ओर देखती भी नहीं शायद उस ेईश्वर से मंजरी नहीं मिली। इसी बीच एक सभ्य परिवार के व्यक्ति से सरिता की मुलाकात होती है। वह भी भजन प्रेमी था। अब किसी बहाने दोनों की बात व मुलाकात धीरे-ध ीरे बढ़ने लगी और देखते ही देखते दोनो एक दूसरे को चाहने लगे।। सागर ने पहल की तो सरिता ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। वर्षों का त्याग और सरिता का भाग्य दोनों का आपसी तालमेल से ही दो आत्माओं का मिलन संभव हो सका। आज सरिता यह अनुभव करती है कि सचमुच ईश्वर ने शायद मुझे सागर के लिए ही बनाया है तभी तो उन्होंने भी मुझे जी जान से अपनाया है। प्यार इस कदर परवान चढ़ा कि हर एक की जुबान पर बस यही है सरिता सिर्फ सागर की है। समझदार सागर ने सर्वगुण संपन्न सुशील सरिता को प्यार देकर अनोखा संसाार बसा लिया। आज उससे बेहद खुश हैं। दुःख तो बस इसी बात का है कि सागर की सरिता कहीं कवि सम्मेंलनों की हास्य कविता न बनकर रह जाए. संपादक, नाजनीन

++++++++

आधुनिक

रोहित यादव, अटेली

रंजना की मंगनी हुए अभी दस दिन हुए थे। वह कमरे में बैठी अपपे मंगेतर लक्ष्मीनारायण के बारे मे सोच रही थी। उसके पापा ने बताया था कि लड़का बड़ा ही आज्ञाकारी, सदाचारी और गुणी है। रंजना की उसके साथ अच्छी निभेगी। तभी टेलीफोन की घंटी बज उठी और रंजना के सोच की तन्द्रा भंग हो गई। उसने फोन उठाया और बाते करने लगी। फोन करने वाला उसका मंगेतर लक्ष्मीनारायण था।

हैलो! क्या कर रही हो। आप तुरन्त होटल मिडवे आ जाइये। शादी से संबंधित आपसे कुछ बातें करनी हैं-आदेशात्मक स्वर में कहा।

नहीं...मैं होटल नहीं आ सकती। आप ऐसा करें यहाँ घर आ जाइये। जो भी बात करनी है, यहाँ घर बैठकर कर लेना रंजना ने शालीनता से जवाब दिया।

अरे! आप समझती क्यों नहीं?

आपसे घर ऐसी बातें नहीं हो सकती। होटल मे आ जाइये। यहाँ सभी सुविधाएं हैं। सभी लोग हमसे अपरिचित है और सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ एकान्त है। हमें कोई डिस्टर्व नहीं करेगा। अपनी बात पर जोर देते हुए लक्ष्मीनारायण ने कहा।

लक्ष्मीनारायण की बातों में छिपे रहस्य को रंजना समझ गई थी। फिर उसने गम्भीर होकर कहा- मैं शादी से पहले आप से एकान्त में नहीं मिल सकती हूँ। अगर आपको अन्य कोई बात करनी है तो घर आकर पापा-मम्मी से कर लें। आपके यहाँ आने में कोई बुराई नहीं है।

इतना कहकर रंजना ने टेलीफोन रख दिया। रंजना ने टेलीफोन रख दिया। रंजना के इस व्यवहार से लक्ष्मीनारायण बड़ा खफा हुआ और उसने रंजना से मंगनी यह कह कर तोड़ दी कि वह आधुनिक नहीं है।

++++++++

सूर्य की स्थिति तीन दिन में, लेकिन चंद्र की हर छह घंटे मे बदलती हैं

पं. विजय भांबी

यह बात शायद आप न जानते हों कि सूर्य राशि या तिथि के अनुसार और चंद्र राशि या नाम के अनुसार भविष्यफल में काफी अंतर होता है. सूर्य की स्थिति तीन दिन में बदलती है, जबकि चंद्र की प्रतिदिन में एक बार. इस प्रकार से चार स्थितियां होतीं हैं. अर्थात चंद्र के फल लगभग हर ६ घंटे में बदल जाते हैं चंद्र पर आधारित भविष्यफल अधिक सूक्ष्म व बेहतर फलदायी होता है. आपकी मूल चंद्र राशि में लग्न या सूर्य पर गोचर में चलते हुए बृहस्पति की शुभदृष्टि हो तो गोचर का फल अशुभ होते हुए भी असरदार नहीं होता. यदि शनि अपनी मूलपत्री की स्थिति से नवम में चल रहा है, गोचर में यानी आपकी मूलपत्री में शनि मकर राशि में है, तो वर्तमान शनि के वृषभ राशि में रहते अशुभ फल मिलने की बहुत कम संभावना रहती है. केतु दूसरे भाव में, बृहस्पति मूल स्थिति से तीसरे, सूर्य पांचवे, शुक्र छठे व मंगल सातवें, चद्र आठवें व राहू नौवं भाव में जब आपकी मूल पत्री में आते हैं, तो अनिष्टकारी हो सकते हैं.

पुरुष या स्त्री निम्न तरीके से अपना भविष्यफल जानकर अनिष्टफल से भी बच सकते है. ग्रहों की खास स्थिति जन्मराशि से अलग-अलग स्थिति में अधिक अनिष्टकारी होती है, इसे ग्रहों के कालसंज्ञक स्थान कहते है. इन जगहों में आए ग्रह अनिष्टकारी होते हैं.

यदि जन्मराशि में मेष है तो पुरुष के लिए चंद्र पहले, बुध दूसरे, शुक्र तीसरे, सूर्य चौथे, मंगल पांचवे, बृहस्पति छठे और शनि सातवें भाव में अनिष्टकारी होते हैं.

जन्मराशि वृषभ है तो पुरुष के लिए चंद्र पांचवे, बुध छठे, शुक्र सातवें, मंगल नौवं, गुरु दसवें व शनि ११वें

> ☞सूर्य राशि या तिथि के अनुसार और चंद्र राशि या नाम के अनुसार भविष्यफल में काफी अंतर होता है.
>
> ☞कर्क में पुरुष के लिए चंद्र दूसरे, बुध तीसरे, शुक्र चौथे, सूर्य पांचवे, मंगल छठे, गुरु सातवें व शनि ग्यारहवें, सूर्य बारहवें, मंगल पहले, बृहस्पति दूसरे व शनि तीसरे भाव में अनिष्टकारी है.

भाव और स्त्री के लिए चंद्र आठवें, बुध नौवें, शुक्र दसवें, सूर्य ग्यारहवें, मंगल बारहवें, बृहस्पति पहले और शनि दूसरे भाव में अच्छे फल नहीं देता. जन्मराशि मिथुन है तो पुरुष के लिए चंद्र नौवें, बुध दसवें, शुक्र ग्यारहवें, सूर्य बारहवें, मंगल पहले, बृहस्पति दूसरे व शनि तीसरे और स्त्री के लिए चंद्र सातवें, बुध आठवें, शुक्र नौवे, सूर्य दसवें, मंगल ग्यारहवें, बृहस्पति बारहवें व शनि पहले भाव में आए, तो अशुभ फलो में बृद्धि होती है.

कर्क में पुरुष के लिए चंद्र दूसरे, बुध तीसरे, शुक्र चौथे, सूर्य पांचवे, मंगल छठे, गुरु सातवें व शनि ग्यारहवें, सूर्य बारहवें, मंगल पहले, बृहस्पति दूसरे व शनि तीसरे भाव में अनिष्टकारी है. यदि जन्मराशि सिंह है तो पुरुष के लिए चंद्र छठे, बुध सातवें, शुक्र आठवें, सूर्य नौवें, मंगल दसवे, बृहस्पति ग्यारहवें व शनि बारहवें भाव में और स्त्री के लिए चंद्र छठे, बुध सातवें, शुक्र आठवें, सूर्य नौवे, मंगल दसवें, बृहस्पति ग्यारहवें व शनि १२वें भाव में अनिष्टकारी होता है. कन्या में पुरुष के लिए चंद्र दसवें, बुध ग्यारहवें, शुक्र बारहवें, सूर्य पहले, मंगल दूसरे, गुरु तीसरे, शनि चौथे और स्त्री के लिए चंद्र तीसरे, बुध चौथे, शुक्र पांचवे, सूर्य छठवें, मंगल सातवें, बृहस्पति आठवें व शनि नौवें भाव में अशुभ फल देता है.

जन्मराशि तुला होने पर पुरुष के लिए चंद्र तीसरे, बुध चौथे, शुक्र पांचवे, सूर्य छठवें, मंगल सातवें, बृहस्पति आठवें व शनि नौवें में और स्त्री के लिए चंद्र चौथे, बुध पांचवे, शुक्र छठे, सूर्य सांतवे, मंगल आठवें, बृहस्पति नौवें, शनि दसवें भाव में आने पर शुभ फल प्रदान नहीं करते.

वृश्चिक में पुरुष के लिए चंद्र सातवें, बुध आठवें, शुक्र नौवें, सूर्य दसवें, मंगल ग्यारहवें, बृहस्पति बारहवें, व शनि पहले और स्त्री के लिए चंद्र दसवें, बुध तीसरे, शुक्र चौथे, सूर्य पांचवे, मंगल छठे, बृहस्पति सातवें व शनि आठवें भाव में अनिष्ट फल देता हैं. जन्मराशि धनु में पुरुष के लिए चंद्र चौथे, बुध पांचवे, शुक्र छठे, सूर्य सांतवे, मंगल आठवें, बृहस्पति नैावें व शनि दसवें स्थान में कालसंज्ञक होते हैं. स्त्री के लिए चंद्र दसवें, बुध ग्यारहवें, शुक्र बारहवें, सूर्य पहले, मंगल नौवें, बृहस्पति दसवें व शनि

इधर-उधर की

ग्यारहवें भाव में अनिष्ट फल प्रदान करते हैं. जन्मराशि मकर हो तो पुरुष के लिए चंद्र आठवे, बुध नौवें, शुक्र दसवें, सूर्य ग्यारहवें, मंगल बारहंवे, बृहस्पति पहले व शनि दूसरे भाव में और स्त्री के लिए चंद्र ग्यारहवें, बुध बारहवें, शुक्र पहले, सूर्य दूसरे, मंगल तीसरे, बृहस्पति चौथे व शनि पांचवे भाव में अनिष्टकारी होता है.

कुभ में पुरुष के लिए चंद्र ग्यारहवें, बुध बारहवें, शुक्र पहले, सूर्य दूसरे, मंगल तीसरे, बृहस्पति चौथे व शनि पांचवे और स्त्री के लिए चंद्र पांचवे, बुध छठे, शुक्र सातवें, सूर्य आठवें, मंगल नौवें बृहस्पति दसवें व शनि ग्यारहवें भाव में अशुभकारक होता है. यदि जन्मराशि मीन है तो पुरुष व स्त्री दोनों के लिए चंद्र बारहवें, बुध पहले, शुक्र दूसरे, सूर्य तीसरे, मंगल चौथे, बृहस्पति पांचवे व शनि छठें भाव में काल संज्ञक ग्रह माने जाते हैं. आप अपनी जन्मराशि के अनुसार गोचर की तालिका बना लें और अपना चंद्र से दैनिक, सूर्य, बुध वव शुक्र से मासिक, मंगल से आगामी डेढ माह, बृहस्पति से एक वर्ष और शनि से आगामी ढाई वर्षो के लिए अशुभफल जानकर सचेत हो सकते हैं. निदान हेतु ग्रहशांति भी कर सकते हैं.

ज्योतिष प्रश्नोत्तरीः

इस स्तम्भ के अन्तर्गत आप अपनी ज्योतिष से संबंधित समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं. लेकिन साथ में कूपन लगाना न भूलें.

नामः.......................................

पिता का नामः ....

जन्म तिथिः.................समयः.........

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी, द्वारा संपादक, विश्व स्नेह समाज, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कुत्ता बना जासूस

लंदन. ब्रिटिश जेल में अब गैरकानूनी ढंग से मोबाइल फोन रखने वाले कैदियों की शामत आ गई, क्योकि इन कैदियों की जासूसी अब खोजी कुत्ता करेगा. खोजी कुत्ता स्पेनियल ने अपना काम नॉरविच की जेल में १५ महीने पहले शुरु किया. नॉरविच जेल के गवर्नर ने कहा कि हमारा काम लोगों की सुरक्षा करना हैं. अगर हम फोन को उपलब्ध कराते हैं तो ये हमें फॅसा भी सकते हैं. अगर कोई कैदी मोबाइल फोन को अन्दर ले जाता है तो वो अपने गवाहों से बातचीत कर सकता हैं. फोन से वो स्टाफ और विजिटर्स की फोटो ले सकता है और अपने साथियों तक जानकारी पहुंचा सकता है.

चैरिटी में बदल गई शादी

न्यूयार्क. आप सोच रहे होंगे कि आखिरकार कोई शादी चैरेटी में कैसे बदल सकती है, लेकिन अमेरिका की एक महिला के साथतो कम से कम यही हुआ है. २८ वर्षीय पैक्मैन अपनी शादी को लेकर बेहद उत्साहित थी, लेकिन शादी के कुछ दिन पहले हीं उन्हें पता चला कि जिस व्यक्ति से उनकी शादी हो रही है, असल में वह धोखेबाज है. पूरी सच्चाई जानने के बाद पैक्मैन ने न सिर्फ अपनी शादी तोड़ दी, बल्कि सभी अतिथियों और रिश्तादारों को भी इसकी खबर दी. इतना ही नहीं, शादी के लिए खासतौर पर बुक हॉल और दावत को उन्होंने खास चैरिटी पार्टी में बदल डाला. दरअसल, उस दिन उन्होंने वरमांट चिल्ड्रेनस एंड सोसायटी और केयर यूएसए संस्थाओं की महिलाओं और बच्चों को दावत दी. पैक्मैन के इस कदम से उसके परिवार वले बहुत खुश हुए.

सांप ने की मुफ्त में यात्रा

मनिला. बगैर टिकट यात्रा करना सिर्फ इनसानें की ही नहीं सांपो की भी आदत होती हैं. फिलिपिंस के एक सांप पर तो यह बात पूरी तरह फिट बैठती है. जी हां इस बात पर यकीन करना थोड़ा अटपटा तो लगता है पर यह सच है कि एक पर्यटक की पैंट में छुपकर एक सांप फिलिपिंस से जर्मनी पहुंच गया. हैरत की बात यह है कि पर्यटक को इस बात का पता तक नहीं चला. ग्रीन रिंग प्रजाति के इस सांप का राज तब खुला जब ३१ वर्षीय हेलेगा वॉशिग मशीन में सांप को देखकर बहुत हैरान हो गया. वह कपड़े धोने के लिए मशीन चालू करने ही वाला था कि उसे सांप के शरीर पर पड़े धब्बे दिखाई दिए जिससे उससे पहचाना कि यह सांप है. बाद में उसे पूरी कहानी समझ में आई.

ताकि सड़कों पर कुत्ते न रहें

सिडनी. आस्ट्रेलिया की कई संस्थाएं मिलकर इन दिनों वियेना की सड़कों को खाली कराने की मुहिम चला रही हैं. दरअसल, वहां हर जगह आवारा कुत्तों की फौज दिखाई पड़ती हैं, जो कई बार आने जाने वालों के लिए परेशानी की वजह बनते हैं. इसके लिए अधिकारियों ने खासतौर पर लोगों से आग्रह किया है कि वह इस पर नजर रखें कि कोई आवारा कुत्ता सड़क पर छोड़कर न जाए. इसके लिए उन्होंने बाकायदा १५७००० लोगों के हस्ताक्षर भी करवाएं है.

जरा हंस दो मेरे भाय

☠ नेता जी (डॉक्टर से)-डॉक्टर, कोई ऐसा उपाय कीजिए कि मेरा वजन बढ़ जाए.
डॉक्टर (नेताजी से)-क्यों?
नेताजी (डॉक्टर से)-जल्द ही मुझे चांदी से तौला जाने वाला हैं.

☠ डॉक्टर(दोस्त से)-पता नहीं क्यों, यहां आकर तो मेरा धंधा ही चौपट हो गया.
दोस्त (डॉक्टर से)-इसका कारण है, तुम्हारे क्लीनिक को आने वाली सीढ़ियों पर लगी पट्टियां.
डॉक्टर (दोस्त से)-मतलब
दोस्त (डॉक्टर से)-पट्टियों पर लिखा है 'ऊपर जाने का रास्ता'

☠पति (पत्नी से)- आज किसी ने मेरी जेब काट ली.
पत्नी(पति से)-तो पुलिस में रिर्पोट की?
पति(पत्नी से)-नहीं, मैंने गलती कर दी.
पत्नी (पति से)-वह क्यों?
पति (पत्नी से)-जेब कटने के तुरंत बाद मैंने उसे दर्जी से सिलवा लिया.

☠बुढ़िया (दांतो के डाक्टर से)-डॉक्टर, एक दांत निकालने के कितने पैसे लेते हो.
डॉक्टर (बुढ़िया से)- एक दांत के ५० रुपये.
बुढ़िया (डॉक्टर से)- कुछ कम करो.
डॉक्टर (बुढ़िया से)- १०० रुपये में तीन दांत.

☠महिला (डॉक्टर से)-मुझे अपने आपसे बात करने की आदत पड़ गई हैं.
डॉक्टर (महिला से)-कोई बात नहीं, बहुत से लोगों को यह आदत हो जाती हैं.
महिला (डॉक्टर से)- पर मैं अपनी बोर बातें अब और नहीं सहन कर सकती.

☠महिला (डॉक्टर से)-कृपया मेरा कान देख लीजिए.
डॉक्टर (महिला से)- देखिए, आप गजल जगह आ गई हैं. मैं एक डॉक्टर जरुर हूँ लेकिन मैने संगीत में डॉक्ट्रेट की हैं.
महिला (डॉक्टर से)-इसीलिए तो आपके पास आई हूँ. कई दिनों से मेरे कानो में झनझनाहट हो रही है. प्लीज, मुझे बताइए कि मेरे कानो में कौन-सा राग बज रहा हैं?

☠ पत्नी (पति से)-क्या बात है, आप आधी रात को इस तरह परेशान होकर कमरे में क्यों टहल रहे हैं?
पति (पत्नी से)-अपने ससुरजी की बात याद कर रहा हूँ.
पत्नी (पति से)-कौन सी बात?
पति(पत्नी से)-जब मैं तुम्हारे घर शादी का प्रस्ताव लेकर गया था, तब उन्होंने मुझसे कहा था कि यदि मैंने तुमसे शादी करने की हिम्मत की तो वह मुझे उम्रकैद करा देंगें?
पत्नी(पति से)-हां, पर अब इस बात का क्या लेना देना?
पति(पत्नी से)-अरे अब जाकर ही तो समझ में आया कि उम्र कैद ज्यादा बेहतर थी?

महिला व्यंजन

काजू की बर्फी

सामग्रीः काजूः २५० ग्राम **चीनीः** २५० ग्राम
दूधः २०० ग्राम **चांदी का वर्क**

विधिःमिक्सी में काजू तथा दूध को अच्छी तरह से मिला लें. इस पेस्ट को कड़ाही में डालकर चीनी मिलाएं और हल्की आंच पर चढ़ा दें. इसे तब तक चलाते रहें जब तक कि चीनी अच्छी तरह से न घुल जाए. फिर इसे उबलने दें. इसे तब तक आंच पर रखे, जब तक कि यह मिश्रण गाढ़ा न हो जाए. ध्यान रहे मिश्रण जले नहीं.

अब इसे आंच पर से उतार कर तेल लगी थाली में उड़ेल दें और तेल लगे बेलने से हल्के-हल्कें बेलें. चांदी के वर्क से इसे ढक दें और तेज छुरी से इसे मनपंसद आकार दे दें.

✍**श्रीमती जया 'गोकुल'**, निदेशक, स्नेहांगन कला केन्द्र, इलाहाबाद

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफत

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

पुस्तक समीक्षा

रजनी में भी खिली रहूं किस आस पर

कहते हैं, नारी स्वयं प्रकृति है. फिर भी यह प्रकृति, नर बिना अपने आपको अधूरा समझती है. यह इस बात को प्रमाणित करती है कि नारी में अहं और बर्बरता नहीं है. जिसे एक बार अपना मान लेती है, तो मान लेती है. पूरी जिन्दगी बीत जाती है,पर कोई फेरबदल नहीं आने देती. अपना सब कुछ उसके नाम कर देती है. जीना-मरना भी उसी के इशारे पर करने को तैयार रही है. कुछ इसी प्रकार की बात सुप्रसिद्ध रचनाकार तारा सिंह की रचनाओं में देखने को मिलती है. हाल ही में तारा सिंह की कविता संग्रह "रजनी में भी खिली रहूँ किस आस पर" प्रकाशित हुई है.

समकालीन हिंदी साहित्य में तारा सिंह का नाम काफी प्रसिद्ध है. महादेवी वर्मा सम्मान, मुंबई रत्न, साहित्य गौरव, हिंदी सेवी सम्मान, निराला सम्मान, काव्य प्रतिभा सम्मान, आदि सहित लगभग दो दर्जनों सम्मानों से सम्मानित हो चुकी श्रीमती तारा सिंह साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़ ने विद्यावाचस्पति का भी सम्मान दिया है. प्रस्तुत काव्य संग्रह से पूर्व तारा सिंह की अनेकों काव्य संग्रह पाठकों के समक्ष पहुंच चुकी है. एक बूंद की प्यासी, सिसक रही दुनिया, हम पानी में भी खोजते रंग, एक पालकी चार कहार, सांझ भी हुई तो कितनी धुधली, एक दीप जला लेना आदि उनकी स्मरणीय रचनांए है. इन सभी काव्य संग्रहों में तारा सिंह ने जीवन की सच्चाइयों को कागज के पन्नों पर उकरने का सफलतम प्रयास किया है. यह उनके लेखन की कुशलता और साहित्य के प्रति अगाध प्रेम को उजागर करती है.

जैसा कि मैंने पहले कि बताया कि तारा सिंह की काव्य रचनाओं में जीवन की सत्यता साफ साफ दिखाई देती है. ऐसा सत्य जो हमारे समाज के इर्द-गिर्द घूमती है. "रजनी में भी खिली रहूं किस आस पर" भी इस प्रकार काव्य रचनांए है. रचनाकार ने अपनी कविता में महिलाओं विविध रुपों पर अपनी कलम चलाई है. उन्होंने नारी को जीवन संगिनी के रुप में, एक प्रेमिका के रुप में, एक सच्चे दोस्त के रुप में, एक बेटी के रुप में, एक बहन के रुप में, एक मां की ममता के रुप में देखा है. उन्होंने नारी को सुदंरता का भी बखान किया है.

प्रभु के साथ रचनाकार का विश्वास किस प्रकार है, इसका अंदाजा इन पंक्तियों से लगाया जा सकता है-

प्रभु! मुझमें इतनी शक्ति तुम भर देना
कि जब आ जाएँ मेरे अपने कभी
मेरे जख्मों पर नमक छिड़कने
तो उसे हँस-हँसकर झेल सकूं मैं

जीवन की सत्यता को उजागर करते हुए-धूप-छाँह की रंग-रेती पर अंकित यह जीवन उड़ता, मिटता रहता मेघों की छाया के संग-संग

हृदय राग से मृत्यु का चरण रंगकर
करता परमपिता को अपना जीवन-अर्पण

बालपन और प्रकृति के बारे में रचनाकार कहती है-

उषा की पहली किरण के साथ
स्मरण हो आता है बचपन मेरा
जब मैं छोटी प्यारी कन्या थी
माता-पिता, दोनों की दुलारी थी
खेलती थी, मैं अल्हड़ दिन भर खेल
एक दूसरे की कमर पकड़कर दौड़ती थी रेल

आज के राजनेताओं पर व्यंग्य करती हुई कहती है-

आजादी के छठें दशक में ही सब कुछ बदल गए
१५ अगस्त, २६ जनवरी जनता का नहीं
राजनेताओं के त्यौहार बनकर रह गए
अब राष्ट्र ध्वज के नीचे नेता, मंत्री, राजदूत
दीखते हैं, जनता जनार्दन गायब हो गए

समाज में समानता लाने की भावना से ओत-प्रोत कवित्रि कहती है-

हम सवर्ण है, शुद्ध हमारा लहू, पवित्र हमारा धर्म
तुम असवर्ण, भ्रष्ट तुम्हारा खून, अपवित्र तुम्हारा चर्म
मत सुनो ऐसी पशुता की बातें, करते चलो अपना कर्म
पशुओं में होती है जाति-पाँति, हम मनुज हैं
हमारे पिता एक हैं, एक है हमारा मनुष्य-धर्म

नारी की सुंदरता को रचनाकार में कहती है-

नारी तुम स्वयं एक प्रकृति हो
तुम्हीं हो नभ-धरा के बीच वह सेतु
जिससे होकर प्राणी उस अनजाने
नगर से इस दुनिया में आते है
तुम निराकार के गृह से निकली एक प्रतिमा हो

रचनाकार जीवन सघर्ष के बारे में लोगो को उत्साहित करती है-

उगलता गगन गहन अंधकार
उस पर गरजता क्षितिज राजकुमार
उठो, जागो, करो जीवन-सघर्ष
हर तरफ है मनोनुकुल बयार

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत कविता में रचनाकार ने जीवन के हर पहलुओं पर प्रकाशन डाला हैं. हिंदी साहित्य में ऐसी रचनाएं यदा-कदा ही मिलती हैं. रचनाकार ने अपनी रचनाओं में सामान्य शब्दों का प्रयोग किया है.

समीक्ष्य पुस्तकः 'रजनी में भी खिली रहूं किस आस पर
समीक्षकः आफताब आलम, संपादक, पत्रकारिता कोश
रचनाकारः तारा सिंह
मूल्यः ६० रुपये
प्रकाशकः मीनाक्षी प्रकाशन
पुस्तक प्राप्ति स्थलः बी-६०५, अनमोल प्लाजा, प्लॉट न०७, सेक्टर-८, खारघर, नई मुबंई-४१०२१०

ईनामी प्रतियोगिता

अपना निबंध भेजें और जीतें हजारों रुपये के ईनाम

विषय: आतंकवाद कारण एवं निवारण

अंतिम तिथि: ३० दिसम्बर २००६

आज आंतकवाद पूरे विश्व के लिए एक ऐसी समस्या बन चुकी है जिससे पार पाना असम्भव सा दिखता है. इस समस्या से कैसे निपटा जाए. क्या हो इसका समाधान. इसी विषय पर राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज ने जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से एक प्रतियोगिता राष्ट्रीय स्तर पर कराने निर्णय लिया है.

नियमः

१. इसमें पूरे भारत का कोई भी नागरिक भाग ले सकता है. इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों कों अपना नाम, पता, जन्म तिथि, व्यवसाय, मोबाईल, फोन न० सहित निबंध एक टिकट लगे लिफाफें के साथ भेजना होगा.
२. इसमें प्रतिभागियों का चयन पहले जिला स्तर पर (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) सभी जनपदों से चयनित प्रथम तीन प्रविष्टियों को राज्य स्तर पर, राज्य स्तर पर चयनित तीन प्रविष्टियों में से राष्ट्र स्तर पर विजेताओं का चयन किया जाएगा.
३. जनपद स्तर पर तीन पुरस्कार (प्रथम-१५०/-, द्वितीय-१००/-, तृतीय-५०/-रु०) व पॉच सात्वना पुरस्कार (प्रत्येक को २५/-रु०) व प्रमाण पत्र दिए जाएगे.
४. राज्य स्तर पर भी तीन (प्रथम-५००/-, द्वितीय-३००/-, तृतीय-१५०/-) व पॉच सात्वनां पुरस्कार(प्रत्येक को १००/-रु०) व प्रमाण पत्र दिए जाएगें.
६. राष्ट्रीय स्तर पर भी तीन पुरस्कार (प्रथम-१०००/-, द्वितीय-७५०/-, तृतीय-५००/-) तथा पॉच सात्वनां पुरस्कार (प्रत्येक को २५०/-रु०) व प्रमाण पत्र दिए जाएगें.
७. प्रतियोगिता में चयनित कमेटी का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र इलाहाबाद ही होगा.
८. ईनाम की राशि नगद/उपहार भी हो सकती है व बढ़ भी सकती है.

प्रतियोगिता का वर्ग

जूनियर वर्गः कक्षा ६ से १२ तक (१०-१५ वर्ष)
सीनियर वर्गः स्नातक या स्नातक से ऊपर (१६-३५ वर्ष)
(केवल अध्ययनरत छात्रों के लिए)
प्रबुद्ध वर्गः ३५ वर्ष से ऊपर

प्रविष्ट्रिंया निम्न पते पर भेजेंः

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
निदेशक/संपादक
रा.हि.मा.विश्व स्नेह समाज
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011
मो. 9335155949

Email: vsnehsamaj@rediffmail.com, gpfsociety@rediffmail.com, gokulpublic _society@rediffmail.com, Atanknivaran@rediffmail.com